बापूके हाथों नारंगीका रस लेकर अमतुस्सलाम बहन उपवास छोड़ रही हैं। (पृष्ठ–१७९)

बापूके पत्र — ८

बीबी अमतुस्सलामके नाम

[ता. ११-५-'११ से २५-१-'४८ तक]

संपादक

काकासाहब कालेलकर

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद-१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहला संस्करण ३

मार्च १९६१

य और उस उस विशेष सम्बन्धके अनुरूप सलाह भी दे सकते थे। उनके सिद्धान्त जितने स्पष्ट थे उतनी ही उनकी सलाह-सूचना भी सरल होती थी। किन्तु उनकी सूझ और उनके निर्णय तो सब उन्हींके होते थे।

अभी-अभी स्त्री-पुरुषके तरह-तरहके सम्बन्धके बारेमें एक अमेरिकन किताब मैं पढ़ रहा था। किताब बड़ी रोचक अनुभव प्रचित और कुछ अमलको प्रोत्साहन देनेवाली थी। किन्तु उसकी नसीहत बड़े ही मार्केकी बोल पड़ती थी। लेखक कहता है: पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंकी विभूति कम है या ज्यादा यह सवाल ही गलत है। सच देखा जाय तो स्त्री पुरुषसे एक भिन्न ही प्राणी है। कम या ज्यादाकी तुलना समानोंके बीच ही होती है। जहाँ जीव कोटि ही भिन्न है वहाँ तुलना कैसे हो सकती है? पुरुष स्त्रीके पेटमें जन्म लेता है; साथीके तौर पर किसी स्त्रीको पसन्द करके ही वह अपना जीवन-यापन करता है। स्त्री और पुरुष एक-दूसरेसे प्रेरणा और सहयोग पाकर ही अपना जीवन समृद्ध करते हैं। इतना सब होते हुए भी कोई पुरुष यह नहीं कह सकता कि मैं स्त्रीको पहचान सकता हूँ। स्त्रियोंके जीवन-राज्यमें पुरुष चाहे जितने घूमे फिरे, परन्तु न तो वह वहाँका नागरिक बन पाता है न वहाँकी भाषा पूरी तरह अपना सकता है।

तो भी चन्द पुरुषोंमें स्त्री प्रकृतिका ऐसा कुछ माद्दा होता है कि वे स्त्रियोंको अच्छी तरह समझ सकते हैं। अपनी भाषाके उपन्यास-सम्राट् शरद् बाबूका सत्कार करते हुए स्त्रियोंकी एक सभाने उन्हें खिताब दिया था 'नारी-हृदयके ज्ञाता'। सचमुच कोई भी पुरुष इससे बढ़कर खिताब पा नहीं सकता।

हरएक नाटककार, कथा-लेखक या उपन्यासकार स्त्री-पुरुषोंको पहचाननेका दावा करता ही है किन्तु स्त्री जातिकी ओरसे ही 'नारी-हृदयके ज्ञाता' का खिताब पाना सचमुच एक लोकोत्तर सिद्धि है।

बापूजीका यह दावा था और सैकड़ों या सहस्रों अनेक स्त्रियोंने इस दावेको मंजूर किया है कि वे स्त्री-मानसको अच्छी

तरह समझते थे। गांधीजीने अपने पूरे जीवनमें मातृभक्तिकी साधना की। पत्नीका मालिक बनकर देखा। पत्नीको अपने विषयका साधन बनाया। फिर पत्नीको माताके जैसा स्थान देकर समाज-सेवा करते हुए उन्होंने असंख्य स्त्रियोंका सहकार पाया। स्त्रियोंके लिए सेवा-साधनमें जो स्वाभाविक कठिनाइयां होती हैं उन्हें पहचान कर उन पर विजय पानेमें स्त्रियोंको उन्होंने मदद की और अंतमें ब्रह्मचर्य पालनकी अपनी उत्कट साधना करके स्त्री-जातिके हृदय तक वे पहुंच गये। उनकी मनोरचनामें पौरुष और स्त्रीत्व दोनोंका सम्मीलन हुआ था इसीलिए स्त्रियोंके लिए उनका आधार खास कारण था। स्त्रियां उनके प्रति आकर्षित भी होती थी और अपनेको उनके सहवासमें सुरक्षित भी मानती थी और वैसा पाती भी थी।

हजारों वर्षोंकी प्रतिकूल परिस्थितिके कारण जिस तरह हरिजन अक्सर दबे हुए रहते हैं, जीवनके आक्रमणमें गलती कर बैठते हैं और इसलिए वे हमारी सहानुभूतिके विशेष अधिकारी होते हैं उसी तरह स्त्रीजनोंकी भी अवस्था है। इस तथ्यको पहचान कर ही गांधीजी हरएक स्त्रीके प्रति सहानुभूति रखते थे और उसे रास्ता भी दिखाते थे।

अपने जमानेकी बहनोंको और अपने कार्यमें साथ देनेवाले साथियोंको गांधीजीकी सलाह तो एकसा हो ही सकती थी। यह विचार तो हरएक पत्रमें यहां-से-वहां पाये जाते हैं। लेकिन आश्रमकी बहनोंके नाम भेजे हुए उनके पत्रोंमें कुछ खास विशेषता भी पाई जाती है।

आश्रमकी या अन्य बहनोंके नाम गांधीजीके जो पत्र मिले उनका संपादन करनेका काम नवजीवन प्रकाशन मंदिरने मुझे सौंपा। उसके अनुसार १–४ पुस्तकोंका संपादन मैंने किया है। मीराबहनके नाम लिखे हुए पत्रोंमें से चार पत्रोंको चुनकर उनके संपादनकी मेहनत मीरा-बहनने स्वयं की है। राजकुमारी अमृतकौरने भी वैसा ही किया है। मैं नहीं मानता कि अब गांधीजीके दूसरे किसी पत्र-संग्रहका संपादन मैं कर

सर्वथा। प्रेमाबहन, गंगाबहन और कुसुमबहनके नाम लिखे हुए पत्रोंके संपादन और प्रकाशनके बाद अब बीबी अमतुस्सलामके नाम लिखे हुए पत्र तार और चिट्ठियोंका यह संग्रह प्रकाशनके लिए भेज रहा हूं।

इस संग्रहकी विशेषता अनेक कारणोंसे है। बीबी अमतुस्सलाम पटियालाके एक प्रतिष्ठित मुसलमान खानदानकी महिला हैं। दुर्बल रोगी और दुःख-कष्टको शरीरमें उत्कट भावना और तेजस्वी संकल्प-शक्तिका संयोग अमतुस्सलामबहनमें पाया जाता है। अतिशंका और अति आभावना करने वाले मनमें असाधारण भक्ति और निष्ठा भगवानने कैसे भिक्षा दी यह भी एक आश्चर्य ही है। मृत्युकी राह देखती रोगशय्या पर पड़ी हुई अमतुस्सलामबहनको भी बंबईमें मैंने देखा है और मुसलमानोंकी ओरसे नोआखालीमें जो भीषण हत्याकांड हुआ उसके बाद तुरंत वहां पहुंचकर वहांकी हिन्दू स्त्रियोंमें जान फूंकनेवाली और रामनामका सुन्दर घोष जगानेवाली अमतुस्सलामबहनको भी मैंने देखा है। इस्लामके प्रति और खास करके उसके नबी मुहम्मद साहब और धर्मग्रन्थ कुरान शरीफके प्रति अमतुस्सलामबहनकी निष्ठा मि॰ रैहानाकी निष्ठाके जैसी ही उत्कट और अनन्य है। और इन दोनों बहनोंमें स्वधर्म-निष्ठाके साथ साथ सर्वधर्म-समभाव भी उतना ही उज्ज्वल है। मि॰ रैहाना जैसी गीतापाठमें तल्लीन होती है और महा-मृत्युंजय जापका प्रचार करती है वैसी ही अमतुस्सलामबहन भी गुरु-ग्रन्थ साहबका पाठ करती हैं और करवाती हैं और रामनाममें आश्वासन पाती हैं। अमतुस्सलामबहन रैहानाको अपने पूर्वजोंमें से एक मानती हैं और उनसे सलाह-मशविरा भी लेती हैं। इन दोनोंकी उत्कट इस्लाम-निष्ठाको देखकर किसी भी आदमीके मनमें कुरानशरीफके बारेमें आदर और नबी साहबके प्रति भक्ति बढ़े बिना नहीं रहेगी।

मैंने अमतुस्सलामबहनसे कहा था कि उन्हें बापूजीका आकर्षण कैसे हुआ, उनके पास वे कैसे गईं, उनकी प्रेरणासे उन्होंने क्या क्या किया और बापूजीके जानेके बाद उनकी क्या क्या प्रवृत्तियां चल रही हैं यह जाननेकी इच्छा पाठकोंको होगी ही। इसलिए इस बारेमें वे कुछ लिखकर दें। मेरी सूचनाके अनुसार उन्होंने शुरूमें थोड़ा कुछ लिख

किया है और अंतमें अपनी प्रवृत्तियोंका भी कुछ जिक्र किया है। बापूके साथ और बापूके बाद — इन दो प्रकरणोंमें इस दिशाकी कुछ जरूरी जानकारी मिलती है। मेरे कहनेसे प्रेमाबहनने भी अपने पत्र-संग्रहके साथ इसी तरहके दो प्रकरण दिये हैं।

बीबी अमतुस्सलाम सन् १९३१-३२ के सत्याग्रह संग्रामके बीच अपने खुदाई रहनुमा बापूके पास उनके पवित्र प्रभाव — Holy influence — में अपनेको देशकी सेवाके लिए तैयार करने और आध्यात्मिक सहारा पानेके लिए आई थीं। साथ क्या लाई थी? दुबली देह। इसीलिए तो उन्हें आश्रमी बननेकी इजाजत भी नहीं मिली। सिर्फ मेहमानके तौर पर वे आ सकती थीं। मेहमान ही सही — करके वे साबरमती आश्रम पहुंचीं। देह भले दुबली थी लेकिन हृदयमें बापूके चरणोंमें अपार श्रद्धा थी और मन मजबूत था। इसलिए बापूसे बढ़ावा मिलने पर आई थी मेहमान और बन गईं गुलाम।

पहले ही पत्रमें बापूने लिखा है कि वे अमतुस्सलामसे क्या चाहते हैं मैं चाहता हूं कि आश्रममें तुम्हारा मानसिक नैतिक और शारीरिक विकास हो।

और बापूकी तालीम शुरू हुई। दूसरे पत्रमें लिखते हैं गलत अंग्रेजीकी चिन्ता मत करो। लेकिन हिन्दी जल्दी सीख लो। और यह भी लिखते हैं कि थोड़ेमें लिखनेकी आदत तुम्हें डालनी चाहिये।

अमतुस्सलाम बेचैन थीं कि करनी थी तो दूसरोंकी सेवा लेकिन नाजुक तबीयतके कारण सेवा लेनी पड़ती है। वे अधीर बनी। तो बापू लिखते हैं कि धीरज रखोगी तो खुदा तुम्हें सेवा करनेकी जरूरी ताकत देगा।

'शरीरसे की जाय वही सेवा — यह खयाल सही नहीं है यह बताते हुए बापू लिखते हैं ठीक समय पर एक मायालु वचन भी कहा जाय तो वह अच्छी सेवा है। एक मायालु विचार अगर अमलमें लाया जाय तो वह अच्छी सेवा है। शरीरसे की जाय वही सेवा है दूसरी नहीं ऐसा मानना तो बुतपरस्ती है।

इस तरह समझाते हुए कताई, धुनाई, बुनाई, सिलाई, जो भी काम हो सके वही करके संतोष माननेको बापू उनसे कहते हैं।

अब बापू यही पसंद करते हैं कि अंग्रेजीमें न लिखकर अमतुलबहन साफ उर्दूमें लिखें और बापू भी उस अपनी टूटी-फूटी उर्दूमें लिखें। और यह सिलसिला शुरू हुआ। कभी कभी तो अमतुस्सलामका खत पढ़नेमें बापूको एक घंटा लग गया है और फिर पर भी वे सार ही समझ पाये हैं। कभी महत्वके मौके पर देर न होने देनेके खयालसे बापू अंग्रेजीमें लिखते थे। फिर तो जब अमतुस्सलामको हिन्दी और गुजराती समझमें आने लगी तब बापू कभी हिन्दीमें तो कभी गुजरातीमें लिखते थे। ज्यादातर उर्दू ही लिखते थे। कभी शीघ्रता करनेके लिए गुजरातीमें लिखवाते थे और अंतमें अपने हाथसे बापूके आशीर्वाद शब्द लिखते थे। कभी-कभी तो बापूके खतोंमें हिन्दी-गुजरातीकी खिचड़ी भी पाई जाती है। कभी गुजराती भाषामें लेकिन नागरी लिपिमें भी बापूने लिखा है।

अमतुलबहनके शरीरमें अनेक रोग थे। क्षय हुआ था वह तो मिट गया। फिर ज्वरकी बवासीर, नाकमें फोड़े, अंगुलीमें दर्द दम खांसी टॉन्सिल्स न्यूमोनिया सबने एकके बाद एक या कभी दो-तीनने मिलकर अमतुस्सलामकी खबर ली थी। बापूको इसकी हमेशा चिन्ता रहती थी और हर खतमें वे तू अच्छी हो जा लिखते थे और रोगोंका इलाज डॉक्टरोंसे करवाते थे कभी खुद कुदरती इलाज — मिट्टी पानी स्नानका — करते थे। आज भी अमतुलबहन सिर पर मिट्टीकी पट्टी लिये ही काम करती रहती हैं।

बहनोंकी एक सर्व-सामान्य बीमारी है, मासिक धर्मकी। नाना तरहकी पीड़ाएं वे सहन करती हैं लेकिन असह्य संकोचके कारण बताती नहीं। यह गलत संकोच दूर करनेके लिए बापूने एक लंबा खत यरवडा मंदिरसे अमतुलबहनको लिखा है। मैं तो चाहूंगा कि हर लड़की और स्त्री मासिक धर्मके बारेमें पूरी जानकारी रखे। जो स्त्री काम-वासनाओंसे छूटना चाहती है और मासिक धर्मका विषयकी वासनाकी दृष्टिसे खयाल करती है उन्हें समझाना चाहिए। पर जो

तन्दुरुस्तीका जीवन जीना चाहती हैं उन्हें तो चाहिये कि वे दूसरी किसी बीमारीकी तरह इस बीमारीकी भी चर्चा करें। और फिर बापू इलाज बताते हैं।

अमतुस्सलाम बहनने एक बार कुरानके बारेमें पूछा। यरवदा मन्दिरसे बापूने जवाब लिखा तुमने कुरानके बारेमें ठीक पूछा है। मैं किसी किताबके लिए यह नहीं मानता कि उसे फरिश्तोंने किसीको पूराकी पूरा दिया। लेकिन पैगम्बरोंको अन्तरकी आवाज आई। हमारे लिए इतना काफी होना चाहिये।

जब बापूने सन् १९३३ में साबरमती आश्रमका विसर्जन करके उस वक्तके आश्रमवासियोंके साथ रास गांवकी ओर कूच किया तब बहनोंमें अमतुस्सलाम भी थी और आश्रमवासी बहनोंके साथ वे भी जेल गई थीं। बापूके सन् १९३४ में सत्याग्रह-आन्दोलन बन्द करने पर जब और बहनोंके साथ वे रिहा हुईं तो जिन्दगीका मानो नया राग शुरू हुआ।

बापू हर पत्रमें तरह तरहसे अपना प्रेम उड़ेलते थे। और बापूके गुस्सेमें भी प्रेम ही भरा रहता था। कभी बापू अमतुस्सलामकी बड़ी मिन्नत भी करते हैं। जब अमतुस्सलाम सिन्धमें हरिजनोंकी सेवा करनेके लिए किसी देहातमें बैठीं तो वहां बीमार पड़ गईं। बापूको बड़ी चिन्ता हुई और विश्राम नहीं और आरामके लिए उन्होंने लिखा अथवा अपने पास आनेके लिए लिखा। वे लिखते हैं
मेरी बात मानो तो लिखना। मेरे पास आ जाओ। तुम्हारा सब दुख भाग जायगा। इतना मेरा मानोगी तो मैं तुम्हारी बड़ी मेहरबानी मानूंगा। इतना करके यहां आ जाओ यहां आ जाओ यहां आ जाओ। और फिर बापू चुनौती छोड़ते हैं यह न कर सको तो मुझे छोड़ दो खुदाके लिए। भला कहीं अमतुस्सलाम बापूको छोड़नेवाली थी?

बाप-बेटीकी दलीलें तो चलती ही रहती हैं। एक बार अमतुस्सलाम बहन बापूको लिख बैठीं कि आपके पास तो अमीर और पढ़े लिखे

लोग रह सकते हैं। मेरे जैसी अनपढ़की जगह नहीं। तो जवाबमें बापू लिखते हैं: तू गलत कहती है कि मेरे नजदीक अमीर और लिखे-पढ़े लोग रह सकते हैं। अमीरोंको फकीर बनाता है और लिखे पढ़ोंके हाथोंमें झाड़ू रखता है। तुझे झाड़ू क्यों रखूं? ज्यादा फकीर बनानेके लिए? या तेरे हाथमें झाड़ू रखनेके लिए? कोई कोई खत बड़े मजेदार रहे हैं। बाप-बेटी एक-दूसरेकी दलीलें काटते हैं। बापूने एक बार लिखा कि तू अमुकको पूजती थी। तो अमतुस्सलामने झट लिखा कि मैं इन्सानको नहीं पूजती आपको पूजती हूं। लेकिन आपको इन्सान नहीं मानती। बापू लिखते हैं: बोल अब हमारा कैसे मेल बैठेगा? मैं तो सबको पूजता हूं तुझे पूजता हूं। जो खुदाको पूजता है वह उसकी बन्दगीको नहीं पूजेगा तो क्या करेगा? वगैरा वगैरा। सारा खत मजेदार और ठाट दलील तथा उपदेशसे भरा है।

अमतुस्सलामकी तबीयत कैसे अच्छी रहे और उन्हें कैसे राजी रखा जाय इसकी बापूको हमेशा फिक्र रहती थी। तुझे कैसे रिझाऊं, तुझे कैसे सुख और शान्ति दूं यही मुझे सताता है। तू अच्छी हो जा, जरा तो जवानी हो, जरा तो हंस।

रमजानके रोजे रखने तो अच्छे हैं लेकिन बापू बीमार अमतुस्सलामको लिखते हैं कि रमजानके रोजे रखनेकी बात मत कर। अच्छी हो जा फिर चाहे उतने रोजे रखना। दूसरे पत्रमें लिखते हैं: सच्चा रमजान वही करता है जो अपने गुस्सेको खतम करता है और विचारपूर्वक बरतता है।

जब बापूसे दूर रहना पड़ता था तो अमतुस्सलामको बापूकी बार बार याद आती थी और याद करके वे रोती भी थी। बापू लिखते हैं: मुझे याद करनेके बजाय खुदाको याद करती तो तू जो चाहती है वह जरूर मिल जाता। अभी भी वैसा ही कर। केवल ईश्वरका ध्यान धर, इसका यह अर्थ नहीं कि तू मुझे छोड़े या मैं तुझे छोड़ूं। लेकिन इसका यह अर्थ तो है ही कि मेरे बारेमें तेरा जो कुछ विशेष ख्याल है, उसे छोड़कर सिर्फ खुदाका ही आसरा ले।

खुराको मार करके रोनेमें भय है। मनुष्यको मार करके रोनेसे स्वास्थ्य बिगड़ता है और कुछ नहीं मिलता।

सेवाग्राम-आश्रममें बापूकी खासी सेवा करनेका सौभाग्य अमतुस्-बहनको मिला। एक बार वह बापूका भोजन बना रही थी। न जाने क्या समझी थीं कि बापूके लिए बनाई हुई रोटी ही गुस्सेमें उन्होंने फेंक दी! मौनवार था। इसलिए बापूने लिखा

पागल बेटी

आज तूने पूरा रंग बताया। हम एक-दूसरेको नहीं समझते हैं अच्छी तरह साबित किया। मैंने कहा था आज रोटी खाऊँगा भाजी खाऊँगा अमरूद (मेरे लिए) अलग पके हुए हैं वो भी। फिर रोटी फेंक देना? मैंने जो कहा उसमें भी तुम्हारे हाथकी रोटी भाजी न खानेकी मेरे ख्वाबमें भी बात न थी। कितना गुस्सा कैसा गुनाह? इतना गुस्सा मेरे जैसे गरीब पर करनेसे कभी तेरा भला नहीं हो सकता है। अच्छा है, मेरा मौन है। कहो अब मैं क्या करूँ? फाका करूँ?

अमतुस्सलाम बहन गुस्सा करती थीं तो बापू कहाँ कम थे? सत्यसर्के पत्करमें एक बार प्रार्थनाके समय जरा ज्यादा मपूरोंका रस निकाल कर अमतुस्सलाम बहनने दिया तो बापूने भुलाई निरामिषाहारियोंकी उस भरी सभामें रसका गिलास ही फेंक नहीं दिया था क्या? और फिर बारह दिन तक अमतुस्सलाम बहन माफी मांगती रहीं और बापू समझाते रहे!

यों बापू विनोद, डांट फटकार, प्रेम और उपदेशसे अमतुस्सलाम बहनको बना-गढ़ा रहे थे और वे भी बापूकी तैयार हो रही थीं।

सेवाग्राम आश्रममें रहते अमतुस्सलाम बहनके लिए, और बापूके लिए भी एक दुःखदायक घटना घटी। चि. राधाबहन गांधी — स्व. श्री मगनलाल गांधीकी पुत्री — सेवाग्राम बापूसे मिलने आई थीं। उनका एक सामान्य पत्र और पेन बापूकी कुटीमें से चोरी चले गए थे जो बादमें दूसरे दिन रद्दी डाले गए मिले थे। यह काम किसने किया यह बापू जानना चाहते थे। लेकिन किसीने कबूल नहीं किया। आखिरमें बापूने अपना शक अमतुस्सलाम बहन पर होनेकी बात जाहिर की। और उनके नाम बड़ा दर्दभरा खत भी लिखा। शक तो सिर्फ शक ही था लेकिन

आश्रमवासियोंकी निगाहमें अमतुस्सलाम उस वक्तके लिए गिर गईं। इसका पता चलने पर बापूने तो आश्रमवासियोंको ऐसी निगाहसे न देखनेके लिए आदेश दिया था लेकिन अमतुस्सलामके लिए यह समय बहुत संतापजनक था। बापू भी दुःखी थे। उपवास करना चाहते थे लेकिन दो घंटेका उपवास करनेके बाद साथियोंके विरोधके कारण — जिनमें महादेवभाई भी थे — उन्हें छोड़ देना पड़ा। बापूसे अमतुस्सलामका दुःख देखा नहीं जाता था इसलिए कहीं बाहर जानेके लिए उनसे कहते तो थे परंतु दिलमें ऐसा भी लगता था कि वे न जायें तो ठीक। और इस भारी संतापके समयमें अमतुस्सलाम भी बापूको छोड़ नहीं सकती थी क्योंकि बापूका ही उन्हें एकमात्र सहारा था। करीब एक सप्ताह तक बाप-बेटीका आपसमें जो पत्र-व्यवहार हुआ उससे और फिर अमतुस्सलामकी सेहत बेहद गिर गई इसके कारण बापू कई दिनों तक उनकी संभाल लेते हुए आराम वगैराके लिए भी हिदायत देते थे उस परसे पता चलता है कि बापूने अमतुस्सलामको किस नजाकतसे संभाला था। चुगली किसने किया उसका पता आखिर तक न चला किंतु बापूका अमतुस्सलाम परका शक दूर हुआ।

एक बार बापूने लिखा   मेरे बाप जो हुक्म करते थे वे मुझे वाजिब ही लगते थे। जिन्दगी भरमें मैंने दलील नहीं की। माताने कहा बेटा यह कर और मैंने किया ही है। मैं बाप हूं मां हूं। मेरी एक भी बात सुने बगैर दलीलके मानी है? माननेके बाद भी तेरा दिमाग कहां नहीं फिरा है? यह सब विचार करने लायक है। जब तक यह नहीं समझेगी तब तक न मैं सुखी होनेवाला हूं न तू सुखी होनेवाली है। तू मुझे नहीं छोड़ सकती न मैं तुझे छोड़ सकता। इसलिए हमदोनों झगड़े। बस बापू और अमतुस्सलामके संबंधका यही कुंजी है। किसको कितनी गहराईसे और कितने प्रेमसे यह सब लिखा है।

एक बार अमतुस्सलाम बहनने पाकिस्तानकी बातें करते समय मुझसे कहा था

देना पड़ता था। भाइयोंकी दिली इच्छा थी कि इस महाजनसे भी जो बहन घर वापस आ जाये तो अच्छा हो जिसके लिए वे सब त्याग करनेको तैयार थे।

एक दिन शामको घूमते-घूमते बाहर गई तो देखती हूं कि हरिजन बहनें आंगनमें कुएं पर खड़ी हैं। पूछा क्या बात है? कहतीं पानी चाहिये। मैंने पूछा भरती क्यों नहीं? कहतीं हम तो चमार हैं। हमको कुएंसे कौन भरने देता है? यह सुनकर मैं तो आग-बबूला हो गई। वह कुआ भी मेरे नामसे था। जिसके खारीका मजा भी था। मैंने कहा दूसरी जातियां भले ही उजड़ जायें लेकिन हरिजन मेरे ही कुएंसे पानी भरेंगे। सारा गांव इकट्ठा हो गया। बड़े-बूढ़े बनिये ब्राह्मण हाथ जोड़कर कहने लगे कि हम तुरन्त कुआं खोद देते हैं। जब तक न हो हम खूब पानी भरकर इन्हें देंगे। लेकिन मुझे तो तब पानी पीना था जब हरिजन आजादीसे पानी भर सकें। तुरत कुएंकी जबरदस्त खुदाई शुरू हुई। रातभर काम चला। २४ घंटेके अंदर पानी कुएंसे निकल आया। अब चुनाईका सवाल पैदा हुआ। पिताजीके ही बनानेका ईंटोंका एक भट्ठा पड़ा था। सब भाई हिस्सेदार थे। उनके पास आदमी घोड़े पर भागा। जवाब मिला जितनी ईंटें चाहियें ले सकती हो जो चाहो सो करो। कुएंकी खुदाई और बनावटकी भंडारीकी थकानसे मैं बुरी तरह बीमार पड़ी। एक बार हमारी अरबी घोड़ीने खूब दौड़ लगाई तो मेरे पेटमें बुरी तरहका दर्द उठा। (उस वक्त आतोंकी टी बी की शिकायत पू बापूके कुदरती इलाजसे मिट ही रही थी।) गांवकी एक बुढ़िया दाई और देहाती मालिश वगैरासे उसने अच्छा कर दिया। वाह! क्या मेरी जिन्दगी! जो चाहा सो किया। यह काम एक-दो साल ही कर सकी। फिर दूसरे कामोंमें उलझ गई। मेरे सुखाई रहनुमा बापू भी दिलसे यही चाहते थे कि सब मुश्किलातका सामना करके मैं उनके नजदीक ही अपनेको सेवा योग्य बनाऊं। पीछे भाई मेरी आमदनी मुझे भेजते रहते थे।

अमतुलबहनके नाम गांधीजीके जो पत्र पढ़ते गांधीजीके पितृ वात्सल्यका और अमतुलबहनकी भक्तिका हरएक वाक्यमें अनुभव होता है। दोनोंके बीचका हार्दिक प्रेम असाधारण है। एक पत्रमें गांधीजी लिखते हैं "मेरा चाहना क्या चीज है? आज मैं कितना प्यार कर रहा हूं इसका तुझे पता नहीं। जितना मैं तेरे लिए कर रहा हूं इतना मने किसी लड़कीके लिए नहीं किया है। यह कोई मेहरबानीकी बात नहीं है। मैं दूसरा कर ही नहीं सकता। तेरा गुस्सा सब कोई महसूस करते हैं लेकिन तेरी सेवावृत्तिके आगे सबका सर झुकता है और तेरे गुस्सेको बरदाश्त कर लेते हैं।" और जगह पर वे लिखते हैं "तू मुझे दुःखी कर न मुझे। यह तो अच्छा सीखा हुआ न? और एक जगह लिखते हैं "तूने मुझसे कुछ भी नहीं लिया है यह सही है और तेरे इतना किसीने नहीं किया है यह भी सही है।

गांधीजीके ये सारे खत निरे प्रेमपत्र ही हैं।

मुसलमान परिवारोंके साथ गांधीजीका कितना गहरा प्रेम-सम्बन्ध था इसके भी उदाहरण इन पत्रोंमें जगह-जगह पाये जाते हैं।

अमतुलबहनने जब गांधीजीको अपने बुजुर्ग रहनुमा माना तब गांधीजीके सब लोगोंको भी अपना माना। उनमें भी गांधीजीके पौत्र कान्तिलालके प्रति अमतुलबहनका मातृ-हृदय जोरोंसे बहा। और जब उनका प्रेम बढ़ने लगता है तब उसमें बाड़ ही आ जाती है। कांति इस बाड़को बरदाश्त न कर सका कुछ घबड़ाने लगा। इसका जिक्र भी इन पत्रोंमें पाया जाता है।

जब अमतुलबहन बापूजीके पास आई तब उनकी उम्र पचीस वर्षकी थी। उनको करीब सोलह वर्ष उन्हें बापूकी रहनुमाई मिली। सोलह वर्षमें सवा चार सौसे अधिक छोटे-बड़े पत्र उन्हें मिले। लेकिन म तो मानता हूं कि पू० बापूजीके जानेके बाद भी अमतुलबहनको उनका रूहानी सत्संग मिलता ही है। जब वे दिल्ली आती हैं तब कभी-कभी बापूजीकी समाधिके पास ही सारी रात बिताती हैं।

कातिकी अपना मातृ-वात्सल्य पट भरकी न दे सकी लेकिन अम तुल्सबहनने कस्तूरबाके पाससे मातृ-वात्सल्य पूरे प्रमाणमें पाया और इसीलिए पू बाके बादके वाद उन्हींके नामसे उन्होंने अपनी सब प्रवृत्तियां चलाई है। राजपुरामें जो कस्तूरबा-केन्द्र चल रहा है उसका पूरा खयाल इस संक्षिप्त ग्रंथमें बापूके बाद नामक प्रकरणसे बिलकुल नहीं आ सकता। वहां तो कस्तूरबा-केन्द्रमें और आसपासके गांवोंमें अमतुल्सबहनने और उनके पुत्रसे अधिक प्रिय साथी सुशीलकुमारने इतना सेवाक्षेत्र फैलाया है कि प्रत्यक्ष देखनेसे ही उसका खयाल आ सकता है। बंगालमें नोआखालीके कैम्पमें बापूके जीते-जी अमतुल्सबहनने जो काम किया था उसका जिक्र तो बापूने Your excellent work जैसे शब्दोंमें किया ही है। आज राजपुरामें जो काम चल रहा है उसे बापू देखते तो अमतुल्सबहनको अपने आशीर्वादकी बर्षासे नहला देते।

अमतुल्सबहनकी सेवाशक्ति है ही ऐसी उत्कट। साबरमती आश्रमके विसर्जनके बाद बापू वर्धा गये। कुछ दिन महिलाश्रममें बादमें मगनवाड़ीमें और आखिरकार सेवाग्राममें बापूजी जा बसे। हर जगह पर अमतुल्सबहनने पूरी निष्ठासे और योग्यतासे काम किया। लेकिन उनकी शक्तिका पूरा परिचय तो नोआखाली और राजपुरामें ही पाया जाता है।

अमतुल्सबहनके जीवनके दो रोमांचकारी प्रसंगोंका जिक्र यहां करना ही चाहिये।

अमतुल्सबहनने हिन्दू-मुस्लिम एकताको अपना मिशन — अपना जीवन-कार्य — बनाया है। बापूका भी यह एक मिशन था और उसीके लिए उनका बलिदान भी हुआ। अमतुल्सबहनको बापूने इस मिशनके लिए सन् १९४ में सिंध भेज दिया था जब वहांके हुरोंने हिन्दुओं पर आतंक फैलाया था। और इस कामके लिए वे भी काफी तैयार हो चुकी थी। बापूने लिखा है ज्यों-ज्यों तेरे खतका खयाल करता हूं तेरी कदर बढ़ती है। मुझे अच्छा लगता है। तुझे तेरा काम अपनी जिम्मेवारी पर करना चाहिये। सच है कि तू यही मिशन लेकर मेरे पास आई थी और तेरा ही मिशन लेकर सिंध गयी

भी और जायेंगी। सिन्धके मुसलमानोंको मुझे बताना है कि सियासी और दूसरे कामोंमें खून या जबरदस्ती या झूठसे इस्लाम नहीं मिल सकता। तेरा सिन्धमें जाना और जान तक देना सिर्फ खूनको रोकनेके लिए है उससे मुसलमानोंको इस्लाम मिलना हो या गैर इस्लाम। यह मेरा हेतु तुझे भेजनेमें था और अब भी है।
खुदा तेरा रास्ता साफ कर दे। वही एक रहनुमा है और तू मैं हम सब उसके बन्दे हैं। बाकी सब झूठ है। बापूकी करोड़ों दुआएं।

दूसरा प्रसंग है नोआखालीका। वहाँ हत्याकाण्डके पहले अमतुस्सलामका रचनात्मक काम तो चल ही रहा था। लेकिन हत्याकाण्डके बाद किसी सत्याग्रही औरतके जैसा जो काम अमतुस्सलामने किया उससे तो वहाकी मुस्लिम महिलाएं भी प्रभावित हुईं। बापूकी करोड़ों दुआओंके बल पर ही अमतुस्सलामने सिन्धमें और नोआखालीमें जान हथेलीमें लेकर काम किया और आज भी कर रही है।

अभी अभी जब बर्नापुरमें हिन्दू-मुस्लिम तनाव बढ़ा तब अमतुस्सलाम तुरन्त वहां पहुंच गई और दोनों कौमोंका विश्वास पाकर शान्तिका काम कर सकी।

पार्थर्डीके सत्याग्रह आश्रममें जो जापानी साधु भाई थे उन्होंने बरसों उसमें सर्वोदयका काम चलाया है। उस दिनके लिए अमतुस्सलाम सुशीलकुमारको साथ लेकर वहां गई थी। वहाँ आनेके बाद इन लोगोंने बरसों राजपुरा केम्पमें एक जापानी बौद्ध मंदिर बनाया है। मेरे पास भी जापानी विद्यार्थी पढ़ते थे उनमें से एक लड़कीको भी हिन्दीकी शिक्षा पानेके लिए वे राजपुरा ले गई और आज जापानके प्रसिद्ध साधु महास्थविर निचिदात्सु फूजीई और कुमारी यासु हाशिउची अमतुस्सलामके साथ नेपाल गये हैं और वहांके आश्रममें अहिंसाका प्रचार कर रहे हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि अमतुस्सलाम अगर आज जिन्दा हैं तो हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए और राष्ट्र-समानताके लिए ही। इन दो

प्रवृत्तियोंके द्वारा ही वे पू० गांधीजीको और पू० कस्तूरबाको हमारे बीच जीवित रख सकी हैं।

*

पू० गांधीजीके पत्रोंमें कदम-कदम पर प्रेमकी छांट भरी हुई है। अमतुस्सलामबहनने उसमें से एक अक्षर भी कम नहीं किया है। उन्हें अपनी प्रतिष्ठाकी अपेक्षा सत्यकी ही चाह अधिक है।

पाठक देखेंगे कि गांधीजीके इन पत्रोंका प्रारंभ अंग्रेजीसे हुआ है। बादमें बापूजी उर्दूमें लिखने लगे और आखिरकार सत्याग्रह आश्रमकी जो सर्व-सामान्य भाषा थी गुजराती — उसमें भी लिखने लगे। जिनकी जन्मभाषा गुजराती नहीं है ऐसे मेरे जैसे लोगोंने ही आश्रमके लिए गुजरातीका माध्यम पसंद किया हालांकि आखिरी दिनोंमें भी अमतुस्सलामजीके आग्रहसे प्रार्थनाके प्रवचन हिन्दीमें होने लगे थे।

इस संग्रहमें सब खत हिन्दीमें ही दिये गये हैं। मूल अंग्रेजी या गुजरातीका तरजुमा ग्रंथमें दिया गया है और अंग्रेजी या गुजराती खत नीचे दिये गये हैं।

अनुवादका काम और सारे संग्रहके संपादनका काम सचमुच तो चि० अमृतलाल नाणावटीने किया है। जबसे वे मेरे साथी बन गये तबसे अथवा उसके पहले भी आश्रम-जीवनसे वे परिचित रहे हैं। आश्रम जीवनका काफी ब्यौरा वे जानते हैं। प्रामाणिक अनुवादका अमृतलालका आग्रह अनुकरणीय है। मैं जरूर कहूंगा कि गांधी-साहित्य अगर इसी तरहसे हिन्दीमें दिया जाय तो वह गांधी-प्रवृत्तिकी उत्तम सेवा होगी। लेकिन आजके जमानेमें ऐसा आग्रह कहीं-कहीं कम पाया जाता है।

बापूजीके जीवन-दर्शनको उनके हृदयकी गहराईको और साथियोंको सेवायोग्य बनानेकी उनकी पद्धतिको समझनेके लिए यह पत्र-संग्रह एक महत्वका साधन है।

१ जनवरी १९६१ — काका कालेलकर
राजघाट नई दिल्ली

बापूके पास

आज गुरुपूर्णिमाका दिन है। मैंने अपने गुरु रहनुमा पू॰ बापूको कब और कैसे पाया यह लिख डालनेके लिए पू॰ काकासाहब जैसे बुजुर्ग बहुत अर्सेसे कह रहे हैं। आज गुरुभक्तिके दिन मैं यह काम शुरू करती हूं। क्या लिखूं? मेरे जीवनमें क्या अनोखी बात है जो किसीको रोशनी दे सके? मेरा जन्म पटियालामें सन् १९ ६ में उस खानदानमें हुआ जो मशहूर व हर हिन्दू-सिख खानदानसे प्रेम-दोस्ती रखनेवाला था। आज भी छोटे और बड़े सब उस पुरानी व बुनियादी दोस्तीको याद करके खुश होते हैं व प्रेमके आंसू भी गिराते हैं। हमारे खानदानमें कभी हिन्दू, मुस्लिम सिखका भेदभाव रहा ही नहीं। यानी मैं उस माहौल (बापूमंडल) में पली जहां सबके लिए बराबरका प्रेमभाव था। मेरे वालिद मरहूम मुहम्मद अब्दुल मजीदखां मुझे ११ सालकी उमरमें छोड़कर चल बसे। यूं मैं छह भाइयोंकी एक बहन या (अब्दुल रहमान) की इकलौती लड़की थी। पिताजीके इस फानी दुनियासे चले जाने पर जिन्दगीका यह पहला और बहुत गहरा सदमा था जिसकी ताब आज तक नहीं आ सकी। ११ सालकी उमर तक मैं कुरानशरीफ बा-तर्जुमा खतम करके और चार इस्लामकी किताबें पढ़ कर मामूली उर्दू लिखना-पढ़ना ही सीख सकी थी। क्योंकि हमारे खानदानमें परदा इतनी पाबन्दीका था कि घरके भाइयोंके सिवा किसीके सामने आनेकी हमें इजाजत न थी। तब स्कूल जानेका तो सवाल ही कहां पैदा हो सकता था? हां उस वक्त पिताजी मुझे अलीगढ़ गर्ल्स स्कूलमें भेजनेका ख्वाब तो देख रहे थे। एक समाजी रिवाजोंको तोड़कर कौम व मुल्ककी तरक्कीके लिए कदम उठानेकी वे ताकत भी रखते थे। लेकिन वालिद साहबकी इस ख्वाहिशका तमाशा देखना मुझे नहीं मिलना था इसलिए मैं अनपढ़ ही रह गई।

पिताजीके जानेके बाद मांको तो १३–१४ सालकी उमरमें मेरी शादी कर देनेकी फिकर पड़ी। लेकिन बड़े भाई मुहम्मद अब्दुल रशीदखां जो मुझे इस रास्ते पर जानेके लिए रहनुमा सहकारी बने सन् १९२१ में अम्बाला (पंजाब) में बैरिस्टरीका त्याग करके मुल्ककी आजादीकी लड़ाईमें कूद पड़े थे तभी उन्होंने मांको जवाब दे दिया था कि मैं इतनी छोटी उमरमें बहनकी शादी कर देना गुनाह समझता हूं। आप चाहें तो कर सकती हैं मैं शरीक नहीं हूंगा। तब छोटे भाइयोंकी तो जुरअत (हिम्मत) ही कैसे हो सकती थी? मैं नहीं जानती क्यों बचपनसे ही मुझे दुनियावी जिन्दगी अच्छे कपड़ों और जेवरातसे दिली तिरस्कार-सा था। किसी आदर्शको तो मैं न जानती थी न समझती थी न मुझमें अपनी दिली या दिमागी हालत मां या भाइयोंके सामने जाहिर करनेकी हिम्मत ही थी। मां इकलौती बेटीके लिए सदा रेशम जरीदार कपड़े और जेवरात तैयार कराती तो मुझे बहुत नागवार (असह्य) महसूस होता था। मेरी सेहत–तन्दुरुस्ती बचपनसे ही खराब व कमजोर रही। साबरमती आश्रम जानेसे पहले ही मैं टी० बी० जैसी खतरनाक बीमारीका शिकार बन चुकी थी। इस दरमियान फिर मांने बड़े भाई पर शादीके लिए जोर दिया। भाईने डॉक्टर बिलीमोरियासे बम्बईमें सलाह की। मैं परदेके पीछे सुन रही थी। डॉक्टरका कहना था कि जब तक यह तीन साल तक बुखार वगैरासे बिलकुल मुक्त न रहे तब तक शादी करनेमें इसकी जानका खतरा है। यह बात मैंने चुपचाप कानमें डाल ली और हर मुमकिन तरीकेसे सेहत अच्छी न होने देनेकी कोशिशमें मैं लग गई, जिसका नतीजा आज तक भुगत रही हूं। २२ सालकी हुई तब बावजूद मेरी कोशिशोंके तबीयत जब कुछ सुधरी तो भाइयोंने मेरी पसन्दगी पूछनी शुरू की। जब दुनियावी जिन्दगीमें दिलचस्पी ही न थी तो पसन्दगीका सवाल ही कहां हो सकता था? मेरा कहना था कि आप जिससे मेरी शादी करना पसन्द करें कर दी जाय लेकिन उसे मेरी पूरी इजाजत होगी कि वह दूसरी शादी कर ले। पर भी मेरे मनमें एक अभिमान था कि क्यों आदमी पर बोझरूप बनूं? लेकिन भाइयोंके प्रेमने तो भी न होने

करके ही पत्र लिखा जैसे उसम जिन्दगीके भविष्यके लिए मुझे रोशनी मिल रही थी। उसे खतम करते ही मैंने भाइयोंसे कहा मैं तो साबरमती आश्रम जाना चाहती हूं। भाइयोंने मेरी बातको हंसीमें टाल दिया। मैं तो किसीको जानती न थी। बापूजीके दर्शन भी न किये थे। मीराबहनका नाम अखबारोंमें पढ़ती थी। उनको पत्र लिखा जिसका जवाब काफी इन्तजारके बाद आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीकी तरफसे मिला। तुम्हारा यहां आनेका उद्देश्य क्या है? कुछ घरकी हालत पूछी। कौन हो? कैसे आना चाहती हो? घरमें कोई दुःख तो नहीं है? तन्दुरुस्तीका सर्टिफिकेट मांगा था। सो लेने मैं डॉ. किलीमोरियाके पास नारनौलसे बम्बई गई। डॉ. किलीमोरियाने जिन्होंने मेरा टी. बी. का इलाज तीन साल तक किया था हल्की डांट सुनाई, क्या बात करती है? तेरी ऐसी तबीयत कहां कि तू कठिनाईसे भरा आश्रम-जीवन गुजार सके।

उन दिनों बापू दिल्लीकी तरफ थे। मैं उनके दर्शनके लिए भाई अब्दुल मजीदखांके पास पहुंच गई थी। दरअसल पहला पत्र नारनौलसे ही लिखा था। ईदका दिन था। भाईका छोटा बच्चा मुझसे बहुत प्रेमसे हिला हुआ था। उसको ईदके दिन दुःखी करके गत था वह भाईका आग्रह था। मेरी शर्त थी तो मुझे आश्रमको पत्र लिखनेमें मदद करो। भाई अब्दुल मजीदखां कहने लगे कि तूने जानेकी ही ठान ली है, तो यहांसे ही लिख देता हूं। उत्तर भी यहां आ गया था। इसलिए तन्दुरुस्तीके सर्टिफिकेटके लिए बम्बई गई। सत्यकी पुजारिन मैं बचपनसे ही थी। नहीं तो नारनौलमें दिक्कत दूर न थी। किसी भी डॉक्टरका सर्टिफिकेट लेकर भेज सकती थी। पर मुझे तो सच्चा ही सर्टिफिकेट चाहिये था। मैंने डॉ. किलीमोरियासे कहा मैं तो सच्चा सर्टिफिकेट ही भेजना चाहती हूं। कारण कि पिछले चार सालसे आपका जो इलाज है। आप मेरी जिस्मानी कमजोरियोंको जानते हैं दूसरा कोई डॉक्टर नहीं जान सकता। नहीं तो नारनौल (पंजाब) से बम्बई आनेकी जरूरत नहीं थी। आपको जो लिखना हो सो लिख दें। मैं घबराती नहीं। भय छूटी। आप जो मेरी जिन्दगीमें होना हो होगा।
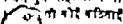
मरहूम डॉ॰ बिलीमोरियाने लिख दिया कि मैं चार सालसे इसका इलाज कर रहा हूं। टी॰ बी॰ थी। अब ठीक है। लेकिन आश्रमकी सख्त जिन्दगी मुझे डर है कि यह गुजार नहीं सकेगी। मैंने वही आश्रमको भेज दिया और लिखा कि इजाजत हो तो मैं आनेको तैयार हूं। मेरे लिए एक एक मिनट भारी हो रहा था। मेरा बस चलता तो पक्षीकी तरह उड़कर चली जाती। कोई भी घरकी बात जिन्दगी सहन न होती थी। मन उचाट हो चुका था। देशसेवाके लिए खुदको तैयार करनेके लिए ही सिर्फ आश्रम-जीवन बिताना मेरा उद्देश्य न था बल्कि पू॰ बापूजीकी तरफ — एक रूहानी कशिश — खिंचाव था जो बहुत गहरा था। तो मैंने लिखा था कि बापूजीकी पवित्र छत्रछायामें खुदको देशकी सेवाके लिए मैं तैयार करना चाहती हूं। उसका जवाब आनेमें भी काफी देर लगी। अमीरी तबीयत बेचैन हो गई। अगर जिन्दगी किसी उपयोगकी न हो तो जीकर भी क्या करना यह ख्यालात गालिबन आने लगे। जिस रोज मैं कुछ विचारमें पड़ी थी उसी दिन पू॰ नारणदास काकाका पत्र आया। भाईने उसे खोला और खूब हंसते हंसते कहने लगे लो तुमको वहां कोई दाखिल करनेको तैयार नहीं! मैं खूब फूट-फूट कर रोने लगी। भाई सहन न कर सके। उन्होंने पत्र मुझे दे दिया। उसमें लिखा था अफसोस है कि हम आपको दाखिल नहीं कर सकते। आश्रमकी जिन्दगी देखनेके लिए आप मेहमानकी हैसियतसे आ सकती हैं। भाईने [illegible] पहला वाक्य सुना कर मुझे रुलाया। पर दूसरा वाक्य पढ़कर मेरा मन खुशीसे उछल पड़ा। मैंने कहा मैं मेहमानके नाते ही जाऊंगी।

जानेकी तैयारियां मैंने शुरू कीं। यह भी एक अभिमान मनमें था कि आनेके लिए भाइयोंसे पैसा क्या लूं? हाथ, कान और गलेमें नाकमें मजबूर करनेमें जेवर तो पहने ही थे। सोचा यही बेचकर चल आऊं। बम्बईके झवेरी-बाजार गई। कुछ दलाल पीछे लग गये। जो कुछ भी पल्ले पड़ा सो इतना ही था कि जब आश्रम पहुंची तो दूध पीके भाग लेनेके बाद मेरे पास कुल पांच रुपये ही बाकी बचे थे। सो मैंने वहां जमा कर दिये। दो चार दिनमें ही बापूजी अहमदाबाद

थी ही नहीं। भाई मेरी हीं मरजीसे शादी करना चाहते थे। और। बापूजीने कहा अगर सचमुच तुम्हारा मन आश्रम जीवनमें होगा तो शरीर भी उसको बरदाश्त कर लेगा। मैं यहां बैठा हूं। मेरा मन तो आश्रममें ही रहता है। जब चाहो मुझे आकर मिल सकती हो। जितना काम शरीर से उतना ही करो। कामकी दासतेकी चिन्ता मत करो। बस फिर क्या था? गई थी मेहमान बनकर और बन गई गुलाम। मुकाम भी उस रूहानी शक्ति व भलाई रहनुमाकी जिससे आज तक छुटकारा न पा सकी। भाइयोंको लिख दिया कि अब आप मेरी चिन्ता न करें। बापूजीने ऐसा कहा है। और मैं कताई, धुनाई, बुनाईका जो कोर्स था उसम लग गई। रसोईमें दो घटे काम करती कोठारमें रहती हरिजन-बाड़ेमें जाती। यहांके भाई-बहनोंने भी खूब प्रेम बताया। गंगाबहन वैद्यका प्रेम माताके समान था। प्यारेलाल भाईकी माताजी जो पंजाबी भाषा जाननेवाली थी अपनी बच्चीकी तरह मुझे प्यार करती थी। उनके प्रेमका उपकार भूलना भी मुहाल (असंभव) है।

आश्रमके सब नियमोंका पालन न मजबूरीसे नहीं शौकसे करती थी। मनमें आनन्द होता था। नदी पर जाकर सुबह प्रार्थनासे पहले ही स्नान कर आती थी। कारण कुएँमें कपड़े पहनकर स्नान करनेकी आदत नहीं थी। मेरी अज्ञानताकी हद थी कि मैंने न तो कभी लालटेन जलाते देखा था न सीखा था। लालटेन जलाना मुझे नहीं आता था। दूसरोंसे पूछते शर्म आती थी। शामावासमें जब दूसरी बहनें जलाती तो चुपचाप जाकर देखती कि चिमनी कैसे निकाल कर साफ करना वगैरा। और। बहुत प्रेमभरी जिन्दगी थी। काममें लगकर मनको बहुत शांति मिली। शरीरकी कमजोरियोंको भूलकर मैं बुनाई सुबह ७ बजेसे १ बजे तक करती। यह मुझे बहुत पसन्द थी। जवानीकी उमरमें भी थकान तो होती थी। गर्मीमें पसीने पसीने होकर बहुत आनन्द आता था। लेकिन पुरानी प्लूरेसी फिर गालिब आ गई और बुखार भी आने लगा। तो काम कम करना पड़ा और मुफ्तखोरी होने लगी। तो भी सिलाई विभागमें जाकर मैं १२ आने १ रुपयेकी सिलाई कर ही लेती थी।

बापूके पत्र — ८

बीबी अमतुस्सलामके नाम

१

[यह पूज्य बापूका मेरे नाम लिखा सबसे पहला पत्र है। मुझे सिर्फ मामूली उर्दू आती थी। इसलिए मैं टूटी-फूटी अंग्रेजीमें बापूको पत्र लिखती थी। इसलिए शुरूका पत्र-व्यवहार अंग्रेजीमें है।]

३१-५-३१

प्रिय अमतुल

अगर तुम्हारी तबीयत अच्छी न रहती हो तो तुम्हें सिर्फ दूध और फल पर रहना चाहिये। पैसेके बारेमें तुम्हारी नाजुक भावनाको मैं समझ सकता हूं। इस बारेमें मैं नारणदासभाई[1] को लिख रहा हूं। मुझे जरूर लिखती रहना और अपना दिल मेरे पास खाली करना। मैं चाहता हूं कि आश्रममें तुम्हारा मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास हो।

बापू

१ श्री नारणदास गांधी, साबरमती आश्रमके व्यवस्थापक-मंत्री।

My dear Amtul 31-5-31

If you are not keeping well you should live on only milk and fruit. I can understand your delicacy of feeling about money matters. I am writing to Narandas about this. Do continue to write to me and pour out your heart to me. I want you to grow mentally, morally and physically in the Ashram.

Bapu

२

[मैं हिन्दी सीखनेकी कोशिशमें लग गई थी। श्री काशिनाथजी त्रिवेदी हिन्दीके मेरे पहले गुरु थे।]

८-६-३१

प्रिय अमतुल

तुम अपनी अशुद्ध अंग्रेजीकी चिन्ता मत करो। लेकिन तुम्हें जल्दी ही हिन्दी लिखना चाहिये। अगर तुम साफ उर्दू लिखोगी तो मैं पढ़ सकूंगा। थोड़ेमें लिखनेकी आदत तुम्हें डालनी चाहिये।

प्यार,

बापू

My dear Amtul,   8-6-'31

Never mind your incorrect English. But you must soon write Hindi. If you write a clear Urdu hand, I can read. You must cultivate a brief style.

Love,

Bapu

[बजाय सेवा करनेके जब आश्रमसे मुझे सेवा लेनी पड़ती थी तो वह मेरे लिए असह्य हो जाता था। बापू इस पत्रमें मुझे ढाढ़स बंधाते हैं।]

बोरसद
१४-६-'३१

प्रिय अमतुल

तुम्हारा खत मिला। अपनी कमजोरी पर या इस हकीकत पर कि तुम्हें आश्रमसे सेवा लेनी पड़ती है तुम्हें क्षोभ नहीं करना चाहिये। हर कोई जानता है कि तुम सेवा करनेके लिए आतुर हो। अगर तुम धीरज रखोगी तो खुदा तुम्हें सेवा करनेकी जरूरी ताकत देगा। तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

बापू

गंगाबहन[1]से अपना इलाज करवाओ।

---

[1] आश्रमकी एक गुजराती बुजुर्ग बहन जो यूनानी दवायें जानती थीं। वे आज करीब ८२ सालकी हैं। और करीब २१ सालसे गुजरातके बोचासण गांवमें वल्लभ विद्यालय नामक संस्थामें रहकर दवाखाना गोशाला खादी वगैरा प्रवृत्तियां चला रही हैं।

Borsad,
14-6-'31

Dear Amtul

Your letter. You must not brood over your weakness or the fact that you have to receive service from the Ashram. Every one knows that you are eager to serve. If you will have patience God will give you the necessary strength for service. You must not worry.

Bapu

Let Gangabehn treat you.

४

[मैं जब आश्रम पहुँची तब बापू दौरे पर थे। कब उनके दर्शन पाऊं, उनकी रहनुमाई पाऊं, मैंने जो कदम उठाया वह ठीक है या नहीं — वगैरा विचार जोरोंसे मेरे मनमें उठा करते थे।]

बोरसद
२९–७–३१

प्रिय अमतुल

तुम्हारा खत मिला।

तुम बहुत अधीरी हो। ईश्वरकी इच्छा होगी तो मैं अगले महीनेकी पहली तारीखको अहमदाबादमें होनेकी अपेक्षा करता हूं।

सब तरहसे सावधानी रखनेके बाद अपनी बीमारीकी फिक्र नहीं करनी चाहिये। अगर तुम जल्दबाजी न करोगी तो बीमारी ठीक हो जायगी। खुदा तुम्हें जो थोड़ा कुछ भी करनेकी शक्ति देता है उससे संतोष मानना चाहिये। अगर हम सब अपने हिस्सेमें जो भी सेवा आये वह करनेकी मनसे तैयारी रखें तो वह काफी है।

बापू

Borsad
29-7-'31

My dea Amtul,

I h e your letter

Y ar very impatient. God willing I expect to be in Ahmedabad on the 1st of next month

You must not mind yo illness after having take all the precautions. It will come all right if you won t be *in a hurry*. You should be satisfied with whate little G [illegible] bles you [illegible] It is n u h f [illegible] all ha [illegible] readiness [illegible] for an se that com [illegible]

u

५

१२-८-३१

प्रिय अमतुल

तुम्हारा खत मिला। नारणदास जैसा कहें वैसा करो और जो वे कहें उसमें पूरी श्रद्धा रखो। यहांसे मैं तुम्हारा ज्यादा मार्गदर्शन नहीं कर सकता। तुम्हारी अम्मा और भाईसे मैं मिला था। उनसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

प्यार,

बापू

12-8-'31

My dear Amtul

I have your letter Do as Narandas says and have full faith in what he says. I cannot give you greater guidance from here. I saw your mother and brother and was delighted to see them.

Love

Bapu

फ्रन्टियर डाउन मेलमें
२८-८-३१

प्रिय अमतुल

अब तो कुछ समयके लिए हम नहीं मिलेंगे। तुम अगर कमजोर और बीमार रहती हो तो हवाफेरके लिए चली जाना और तभी लौटना जब पूरी तगड़ी हो जाओ और साबरमतीमें मलेरियाका मौसम खतम हो जाय। हर हालतमें अपनेको पूरा शान्त और खुश रखना चाहिये। किसी प्रकारकी चिंता मत करो। लेकिन जो कर सको वह सेवा करो। एक क्षण भी बेकार न जाय। तुम तकली चला सकती हो, बिनाज-सफाई, सिलाई, रुई-सफाई और ऐसे दूसरे बहुतसे हलकी मेहनतके काम कर सकती हो। भारी मेहनतके कामोंके जितने ही ये भी उपयोगी हैं। यह

On the Frontier Down Mail,
28-8-31

My dear Amtul,

So we shall not meet for some time now. You will go away for change if you are weak and ailing and return when you have recouped yourself and the malarial season at Sabarmati is over. In every case you must keep yourself perfectly at peace and cheerful. Don't worry about anything. But do such service as you can. Let there be not a single idle moment. You can do Takli spinning, grain cleaning, sewing, cotton cleaning and many other such items of light labour. They are just as useful as heavy labour. All these things come naturally to those who will concentrate not upon themselves but upon the good of all and the contribution that they can make towards the promotion of that good. You must write to me. My address you will learn from Narandas.

Love

Bapu

सब उनके लिए स्वाभाविक है जो अपनी ही नहीं सोचते बल्कि सबके भलेकी सोचते हैं और उस भलेकी बढ़तीके लिए शक्तिभर अपना हिस्सा अदा करते हैं। मुझे जरूर लिखो। मेरा पता नारणदासभाईसे पाओगी।

प्यार,

बापू

७

मौनवार,
एस एस राजपुताना
–९– ३१

प्रिय अमतुल

अभी मैंने तुम्हारा खत पढ़ा। किसी भी बातकी फिक्र मत करो। नारणदासभाई जो करनेको कहें वह सब आनन्दसे करती रहो। भविष्यका विचार मत करो पर आजका अपना जो काम हो वह करो। और अगर तुमने उसे पूरा किया तो आनन्द करो। तुम्हारा काम तो अपनी तबीयतको देखनेका है और जो नारणदासभाई कहें सो करनेका है।

प्यार,

बापू

Silence Day
S S Rajputana
9-'31

My dear Amtul

I have just read your letter Do not worry about anything Simply do cheerfully what Narandas may ask you to do. Do not think of the future but do your task for the present and rejoice if you have done it. Your task is to attend to your health and do what Narandas asks you to do.

Love,

Bapu

६

फ्रंटियर डाउन मेलसे
२८-८-३१

प्रिय अमतुल

अब तो कुछ समयके लिए हम नहीं मिलेंगे। तुम अगर कमजोर और बीमार रहती हो तो हवाफेरके लिए चली जाना और तभी लौटना जब चंगी तगड़ी हो जाओ और साबरमतीमें मलेरियाका मौसम खत्म हो जाय। हर हालतमें अपनेको पूर्ण शांत और खुश रखना चाहिये। किसी प्रकारकी चिंता मत करो। लेकिन जो कर सको वह सेवा करो। एक क्षण भी बेकार न जाय। तुम तकली चला सकती हो, अनाज-सफाई, सिलाई, रुई-सफाई और ऐसे दूसरे बहुतसे हलकी मेहनतके काम कर सकती हो। भारी मेहनतके कामोंके जितने ही ये भी उपयोगी हैं। यह

On the Frontier Down Mail,
28-8-'31

My dear Amtul

So we shall not meet for some time now You will go away for change if you are weak and ailing and return when you have recouped yourself and the malarial season at Sabarmati is over In every case you must keep yourself perfectly at peace and cheerful. Don t worry about anything But do such service as you can Let there be not a single idle moment. You can do Takli spinning grain cleaning sewing cotton cleaning and many other such items of light labour They are just as useful as heavy labour All these things come naturally to those who will concentrate not upon themselves but upon the good of all and the contribution that they can make towards the promotion of that good. You must write to me My address you will learn from Narandas.

Love

Bapu

८

[यह खत यरवडा जेलसे लिखा है।]

२८-१०-३१

प्रिय अमतुल

तुम्हारे खत मिलते रहते हैं। लेकिन आश्रमवासियों और दूसरोंके सब खतोंका मैं जवाब नहीं दे सका हूं। समय ही नहीं मिलता। मैं तुमको सविस्तर जवाब नहीं लिखूंगा। तुम्हें जरूरी दवा और डाक्टरी सलाह लेनी चाहिये। तुम्हें जल्दी अच्छा हो जाना चाहिये। बहुत सोचा मत करो। सब बातोंमें एक खुदाका ही भरोसा करो।

प्यार

बापू

28-10-'31

My dear Amtul,

I have been receiving your letters. But I have not been able to reply to all the letters from the Ashram people and others. I get no time. I must not give you a detailed reply. You should take such medicine and such medical advice as may be necessary. You must get well quickly. Do not think much. Simply trust God in all things.

Love

Bapu

है। और अगर वह नहीं दी जाय तो मुझे डर है कि दूसरोंसे मिलनेका सुख मुझे छोड़ना पड़ेगा। लेकिन तुमको फिकर नहीं करना है।

प्यार,

बापू

Though I wrote to Dr   I have not heard from him.

I do not want you to send me your diary book. I simply wanted your day's work. This you have given quite n cely

Your Urdu writing is quite clear this time. I have been able to decipher every word It is un doubtedly better than your English. Try to write more and more in Urdu. And when you will let me, I too shall write to you in Urdu.

The Government have not yet granted permission for Mirabehn to see me And if it is not granted, I am afraid I must deny myself the happiness of seeing the others. But you must not worry

Love

Bapu

१०

यरवडा मंदिर,
२८-३-३२

प्रिय अमतुल

मुझे अचरज हो रहा था कि तुम्हारा कोई खत क्यों नहीं आया। नारणदास मुझे तुम्हारे बारेमें बताते रहे। अब तुम्हारा खत आया सो अच्छा लगा। कुछ भी लिये बिना डॉ   ने तुम्हारा इलाज किया यह उनकी भलमनसी है। वे अपनी जिन किताबोंकी सिफारिश करें, वे

Yeravda Mandir
28-3- 32

My dear Amtul,

I was wondering why there was no letter from you. Narandas kept me informed. Now I am glad I have your letter It was very good of Dr   to treat you without making any charge You may send such books of his as he may recommend. The question of deciding the place for you is a little difficult. You must go to hill or to a sea-side place I think you can go to Porbander or Sasavne I cannot think of another place just now You must not lose your gain by any false step If any of your people are living in Mussoorie you need not hesitate to go there. I agree with Narandas that you should not live at the Ashram during these hot days.

Of course you can come and see me whenever you wish. Sardar Vallabhbhai and Mahadev are with me. As my right hand causes a little trouble if I write with it, I have been using the left hand

Love,

Bapu

है। और अगर वह नहीं दी जाय तो मुझे डर है कि दूसरोंसे मिलनेका सुख मुझे छोड़ना पड़ेगा। लेकिन तुमको फिकर नहीं करना है।

प्यार,

बापू

Though I wrote to Dr   I have not heard from him.

I do not want you to send me your diary book. I simply wanted your day's work. This you have given quite nicely.

Your Urdu writing is quite clear this time. I have been able to decipher every word. It is undoubtedly better than your English. Try to write more and more in Urdu. And when you will let me, I too shall write to you in Urdu.

The Government have not yet granted permission for Mirabehn to see me. And if it is not granted, I am afraid I must deny myself the happiness of seeing the others. But you must not worry.

Love

Bapu

१०

यरवडा मंदिर,
२८-३-३२

प्रिय अमतुल

मुझे अचरज हो रहा था कि तुम्हारा कोई खत क्यों नहीं आया। नारणदास मुझे तुम्हारे बारेमें बताते थे। अब तुम्हारा खत आया सो अच्छा लगा। कुछ भी लिये बिना डॉ   ने तुम्हारा इलाज किया यह उनकी भलमनसी है। वे अपनी जिन किताबोंकी सिफारिश करें, वे

Yeravda Mandir
28-3-32

My dear Amtul,

I was wondering why there was no letter from you. Narandas kept me informed. Now I am glad I have your letter. It was very good of Dr   to treat you without making any charge. You may send such books of his as he may recommend. The question of deciding the place for you is a little difficult. You must go to hill or to a sea-side place. I think you can go to Porbander or Sasavne. I cannot think of another place just now. You must not lose your gain by any false step. If any of your people are living in Mussurie you need not hesitate to go there. I agree with Narandas that you should not live at the Ashram during these hot days.

Of course you can come and see me whenever you wish. Sardar Vallabhbhai and Mahadev are with me. As my right hand causes a little trouble if I write with it, I have been using the left hand.

Love,

Bapu

तुम्हारे बारेमें मैं नारणदाससे लिखा-पढ़ी कर रहा हूं। बहरहाल, तुम जब चाहो तब आश्रम आ सकती हो। मुझे ऐसा लगता है कि जहां तुम्हारी तबीयत ठीक रहे वहां तुम्हें रहना चाहिये। सेवाके मौके सब जगह मिलते हैं। ठीक समय पर एक मामूली वचन भी कहा जाय तो वह अच्छी सेवा है। एक मामूली विचार भी अगर अमलमें लाया जाय तो वह अच्छी सेवा है। शरीरसे जो काम नहीं लेता है, दूसरी नहीं ऐसा मानना तो बुतपरस्ती है।

तुम्हारा दिनका कार्यक्रम लिखो। डायरी रखती हो?

बापू

प्यार

१३

य. म.
२८-५-३२

प्रिय अमतुल

तुम्हारे दोनों खत मैंने पढ़े। तुम्हारी उर्दू लिखावट मेरे लिए काफी साफ नहीं है। करीब एक घंटा मग्न किया फिर भी तुम्हारे

Y. M.
28-5-32

My dear Amtul,

I have read both your letters. Your Urdu writing is not clear enough for me I gave nearly an hour to it and could only get the substance of your letter I gather that it is only a paraphrase of your English letter If you can keep your head cool and composed, I think you should stay with the family for the time being and then go to the Ashram If you find it impossible to be at peace with yourself living with your people you should stay with Noorbanu. Does this answer all your questions? If not, write again and that in English, write partly in Urdu also I shall write to I was glad you were able to come. You must regain the lost weight.

Love,

Bapu

सबका मैं सार ही समझ सका। म समझता हूं कि तुम्हारे मसला उसका यह विस्तार मात्र है। अगर तुम अपना दिमाग ठंडा और ठीक रख सको तो मेरा खयाल है कि हाल तुरंत तो तुम्हें अपने कुटुंबके साथ रहना चाहिए और बादमें तुम आश्रम आ सकती हो। अगर कुटुंबियोंके साथ रहते हुए तुम अपनेको शांत रखना अशक्य समझो तब तो तुम्हें मूरबानुके साथ रहना चाहिए। इसमें तुम्हारे सब सवालोंके जवाब आ जाते हैं न? अगर नहीं तो फिरसे लिखो यह भी अंग्रेजीमें कुछ उर्दूमें भी। म   को लिखूंगा। तुम आ सकी इससे मुझे खुशी हुई। गंवाया हुआ वजन तुम्हें फिरसे हासिल कर लेना चाहिए।

प्यार, बापू

१४

य मं
१७–६–३२

प्यारी अमतुल

तुम्हारा खत मिला। मुझे खुशी है कि तुम अपने लोगोंके साथ रहती हो।   को अब तक मैं लिख नहीं सका हूं। लेकिन जल्दी ही लिखूंगा। अगर मुलाकातोंके लिए फिरसे द्वार खुल जायें तो तुम जरूर आना और मुझसे मिलना। कुछ पढ़ती हो क्या? तुम्हारा दिनका कार्यक्रम मुझे लिखो। कुछ-न-कुछ उर्दूमें हमेशा लिखा करो।

प्यार, बापू

Y M.
17-6-'32

My dear Amtul

I have your letter I am glad you are staying with your people. I have not yet been able to write to   But I will do so early If the door to inter views is again opened you shall certainly come and see me Are you reading anything? Give me your day's diary Do write something always in Urdu.

Love Bapu

१५

प्यारी अमतुल

तुम आश्रममें आ गई और साथमें अपनी भतीजीको भी ले आई इससे मुझे खुशी हुई। उम्मीद करता हूं कि उसको हवा माफिक आयगी। अब तो तुम्हें अच्छा रहना चाहिये। हवा तो अब बिलकुल ठंडी होगी।

तुम्हारा उर्दू खत पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। ऐसे ही लिखा करो। हिन्दी सीखनेका इरादा तो अच्छी बात है। और तुमको कुछ तकलीफ ही नहीं होगी। मेरे हरफ पढ़नेमें कुछ मुश्किल आती है क्या?

आशा करता हूं कि मेरा उर्दू लिखा हुआ तुम पढ़ सकोगी। वह खराब है यह मैं जानता हूं। तुम्हारी भतीजी[1] से मुझे लिखनेको कहना अगर वह लिख सकती हो तो। क्या उम्र है उसकी?

प्यार, बापू

---

[1] मेरे भाईकी लड़की कुदसिया। उसकी माके मरनेके बाद वह ज्यादातर मेरे साथ ही रही — यानी तीन सालकी उमरसे। अब वह नौ सालकी थी।

My dear Amtul,

I am glad you have arrived at the Ashram and taken your nieco there. I hope the climate will agree with her You ought to keep well now Tbe weather must bo qulte cool.

तुम्हारा उर्दू खत पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। ऐसे ही लिखा करो। हिन्दी सीखनेका इरादा तो अच्छी बात है। और तुमको कुछ तकलीफ ही नहीं होगी। मेरे हरफ पढ़नेमें कुछ मुश्किल आती है क्या? (उर्दू लिपिमें)

I hope you can read my Urdu hand. I know it is bad. Let your niece write if she can. How old is she?

Love Bapu

चाहिए। उसे इस बारेमें ज्यादा मालूम नहीं है। लेकिन तुम दोनों

and women to shed this false shame about the monthly sickness. There may be a sense of shame on the part of those who want to indulge (in) their animal passions and treat the monthly business in terms of sexuality. But those who want to lead a life of continence should discuss this sickness as any other sickness. Now for the remedy. In the first place you should take perfect rest as soon as there is any symptom of the sickness coming and rest should be continued whilst there is slightest discharge. During the free days of the month regular sitz baths should be taken as also hip baths in order to avoid undue discharge or a discharge beyond three days in pains. There should (be) no pains during the sickness. If there is, the treatment does not answer. You should allow the womb to be examined by a doctor. On this matter you should consult Mrs. Lazars and be guided by her. She is likely to be able to tell you what to do. You should take Prema behn into your confidence. She does not know much about this. But you two can put your heads together and read up the literature on the subject. If you do not know what sitz baths are Prema also does not. You should read up Kuhne's book. If you master the secret of this illness, you can impart it to the other girls. It is the most fruitful source of the diseases of women. A false sense of shame prevents girls from understanding the sickness and regulate it in the proper manner. It is sinful to hide this thing and then suffer untold miseries.

Love Bapu

तुम्हारा उर्दू खत अच्छा है। जवाब तुम्हें इस दूंगा। आज वक्त भर गया है। (उर्दू लिपिमें)

मिलकर सोच सकती हो और इस विषय पर जो साहित्य हो वह पढ़ डालो। अगर तुम्हें ठीक बात क्या है यह मालूम नहीं है तो प्रेमाबहनको भी मालूम नहीं है। तुम्हें कूनकी किताब पढ़ लेनी चाहिये। अगर तुम इस बीमारीका सब जान लो, तो दूसरी लड़कियोंको भी बता सकती हो। बहुतोंकी बहुतसी बीमारियां इसीमें से पैदा होती हैं। झूठी लज्जाके कारण लड़कियां इस मासिक धर्मको समझ नहीं पातीं और ठीक तरहसे उसे नियमित नहीं कर सकतीं। इसे छिपाना और फिर असीमित यातनाएं सहन करते रहना पाप है।

प्यार,

बापू

१७

[मेरी बचपनसे ही अध्यात्मकी ओर रुचि थी। दस सालकी उम्रसे पहले ही कुरान शरीफका उर्दू तरजुमा मैंने पढ़ डाला था और उसे पूरा लिख भी डाला था। मूल खत उर्दू लिपिमें है।]

२१–८–१२

माई डियर अमतुल (अंग्रेजीमें)

तुमने कुरानके बारेमें ठीक पूछा है। मैं किसी किताबके लिए यह नहीं मानता हूं कि उसे फरिश्तोंने किसीको खुदाकी तरफसे दिया। लेकिन पैगम्बरोंको अन्दरूनी आवाज आयी। हमारे लिए इतना काफी होना चाहिये। कुरानके माने अच्छी तरह समझ लेनेका तुम्हारा इरादा अच्छा ही है। दीनी किताबें पढ़नेका मतलब तो यह है कि हमें पता चले कि उनमें क्या लिखा है और हमारे दिल पर उसका क्या असर होता है।

कुदसियाको उर्दू मालूम ही नहीं ऐसा क्यों? क्या तुम्हारे घरमें सब अंग्रेजी ही जानते हैं? थोड़ी तुम्हारे कबीलेकी हिस्ट्री (इतिहास) दो। क्या वहांके रहनेवाले? उर्दूका शौक सबसे छूट गया और

१ कुदसिया अंग्रेजी स्कूलमें पढ़ती थी जहां उर्दूकी पढ़ाईका इन्तजाम नहीं था। इसलिए उसने अंग्रेजीमें छोटासा खत लिखा था।

करो? अब तुमको अच्छा रहना होगा। इसमें ज्यादा मेहनत मत करो। किसी बातपर ज्यादाती न किया करो। खुशमिजाज रहो और जितना पूरा करना है उसे गनीमत मानो। तो गम भूला होगा। क्या तो मेरा यह खत (तुम) माशरजीसे पढ़ सकी? उर्दू लफ्ज तुमको मालूम नहीं हों तो उर्दूमें ही लिखना पसन्द करूंगा। हर हफ्ता तुम मेरे पास लिखा करना। अगर तुमको अंग्रेजी खत ज्यादा पसन्द है तो लिखा जाया करेगा। मेरा मतलब तुमको खुश रखना है। हां अब हिन्दी सीख जाओगी तब हिन्दीमें लिखोगी। तुम अब उर्दूमें लिखा करोगी तो अच्छा है मगर साफ हरफ निकालना होगा। नहीं तो मैं नहीं पढ़ सकूंगा।

बापू

१८

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

यरवडा मंदिर
२८-८-३२

बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारी मरजी नहीं होगी तब तक मैं उर्दूमें ही खत लिखना पसन्द करूंगा। आखिर बदनको पूरा आराम देनेसे अच्छा ही होगा। और खानेमें जितना नारणदास कहें उतना ही करना। जिसका दिल साफ है और विचार रोशन है उसे इस जगतमें कुछ भी घबरानेका है ही नहीं। तुम्हारे दर्दके बारेमें कोई किताबका नाम मैं नहीं जानता। मैं तलाश करूंगा।

बेगम कादरसे पूछो। उसे मालूम होना चाहिए। को मेरा खत पहुंच गया होगा। तुम्हारे हिन्दी हरफ अच्छे हैं। ऐसे ही थोड़ा थोड़ा लिखा करो। कुदसिया कहां तक पहुंचनेवाली है?

बापू

१९

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

४-१-३२

बेटी अमतुस्सलाम

बहुत अच्छे हरफोंमें मशकियां दुरस्त की हैं। ऐसे ही हमेशा किया करो। सुवाद कहां सीन कहां हे कहां है कहां — इसका कायदा अगर जानती हो तो मुझे बता दो। अब तुम्हारे मेरे पाससे अंग्रेजी खत चाहिए मुझे लिखो और मैं तुम्हें अंग्रेजीमें लिखूंगा। तुम्हारे वास्ते मैं शान्ति और सेहत चाहता हूँ।

बापूकी दुआयें

२०

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

११-१-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

सिर्फ अमतुल* क्यों नहीं मुझे समझाओ। जिस पैसेकी उम्मीद रखती हो वह मिले तो ठीक है, न मिले तो भी ठीक समझना। तुम्हारे हरफ अच्छे तो हैं लेकिन और भी साफ किया। ऐसे भी दो चार खत पढ़नेसे सब समझा जायगा। बम्बईमें लड़कियोंकी पढ़ाईका कोई इन्तजाम ही नहीं है यह सुनकर ताज्जुब होता है। मेरा तो खयाल था कि अंजुमनने बहुत अच्छा इन्तजाम किया है। के बारेमें शारदाबहनसे बात करो। मेरे खयालसे तो अगर वे मजहबके कानूनके पाबन्द रहें तो जानेमें कोई हरज नहीं है।

तुलसियाके बारेमें मैं समझा हूँ। सबकी आपसमें अच्छी हो जाय तो कैसा अच्छा होगा? तुम्हारी सेहतके लिए आराम ही बड़ी बात है।

बापूकी दुआ

---

* अमतुल = बंदी सलाम = शान्ति अमतुस्सलाम = शान्तिकी बंदी।

२१

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

यरवडा मन्दिर,
८-१०-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत आया है। कुदसियाके मार्फत खत लिखा है। वह भी इस माहमें आश्रममें चला जायगा। कुदसिया अब ठीक होगी। मुझे शान्ति आ रही है। तू मुझ मिल गई, मुझे अच्छा लगा।

बापूकी दुआ

२२

य मं
१२-१०-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

आज म उर्दूमें नहीं लिखूंगा।

तुम जल्दी अच्छी हो गई, इसके लिए तुम्हें जरूर शाबाशी देनी चाहिए। तुम मुझसे मिलनेकी फिक्र न करोगी तो और भी जल्दी

हरिजनोंका हिन्दू समाजमें ही रखनेके लिए बापूने यरवडा जेलमें उपवास किये थे तब सबको उनसे मिलनेकी इजाजत मिली थी। मैं भी मिलने गई थी।

Y M.
12 10-32

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

आज मैं उर्दूमें नहीं लिखूंगा। (उर्दू लिपिमें)

You do deserve Shabash (शाबाश) for curing yourself quickly You will be all right quicker if you won t worry about meeting me. When God wills it, we shall meet. Meanwhile let us be thankful that we can write to each other

Yes I will write to the other girls about the baths.

अच्छी हो जायगी। खुदाकी मरजी होगी तब मिलेंगे। दरमियान खुदाका शुक्र मानना चाहिये कि हम एक-दूसरेको लिख सकते हैं।

हां मैं दूसरी लड़कियोंको भी स्नानोंके बारेमें लिखूंगा।

आशा रखें कि कुदसियाको नारणदासके साथ घूमते हुए शांति मिलेगी। शांति मिलेगी अगर वह अपनी तबीयत अच्छी रखेगी।

तुम्हारे गर्भाशयके बारेमें तो यही है कि उसमें कुछ रोग न हो तो उसे निकालना नहीं चाहिये। श्रीमती लाजरसकी सलाह लो और वे जो सलाह दें उसके मुताबिक चलो। इस शस्त्रक्रियाके बारेमें कोई जल्दी नहीं करनी चाहिये। शस्त्रक्रियासे हमेशा रोग मिटता ही है ऐसा नहीं है। कुदरती इलाज कुछ अरसे बाद सबसे ज्यादा परिणामकारक होता है और हानिकारक तो कभी नहीं होता। अकसर शस्त्रक्रियाएं हानिकारक सिद्ध हुई हैं और कभी कभी तो प्राणघातक भी।

प्यार,

बापू

Let us hope Quadsia will find her peace during her walks with Narandas. She will if she keeps good health.

As for your womb it must not be *removed unless* it is diseased. For that you should consult Mrs. Lazars and do as she advises. There should be no hurry about this operation. Operations are not always a sure cure. Natural treatment is the most efficacious in the long run and never harmful. Operations have often been harmful and at times even proved fatal.

Love

Bapu

२३

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

यरवडा मन्दिर,
२२–१०–३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। हिप बाथ छोड़ सकती हो। सिट्ज बाथ नहीं छोड़ना। दोपहरको भी तीन बजे ले सकती हो। बहुत ठंडी लगे तो पानी धूपमें रखा जाये और बाथ भी तीन मिनट तक ही लिया जाय। तजारबे-हक़[1] फिर पढ़ती हो तो अच्छा है। इससे ज्यादा काम न लिया जाय। भूख आहिस्ता आहिस्ता आती जायेगी। तुम्हारे धीरज रखना। कुरैशिया शान्त हो गई है सो अच्छा हुआ। मैंने जो कुछ लिखा है अच्छी तरह समझ सकती है? अगर समझनेमें मुश्किल मालूम हो तो मुझे लिखो। मेरी खतियां दुरुस्त करके भेजो।

बापूकी दुआ

२४

२७–१०–३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

हिन्दी सीख रही हो सो अच्छी बात है। इस पर लगी रहोगी तो ठीक होगा। जो काम हाथ धरो उसको अंजाम पहुँचाना। हर हफ्तेमें एक दिनका फाका करनेकी मैं कोई जरूरत नहीं देखता हूँ। हाँ अगर तन्दुरुस्तीके लिए फाका रखनेकी कोई जरूरत हो तो दूसरी बात है। मैंने कहा है वह बिलकुल ठीक समझा। नारणदास जो कहें वही दिलसे करनेमें ही तुम्हारा भला है। कुरैशियाका भी तमाम छोड़ो। नारणदासको (जो) करना है वह करने दो। तुमसे पूछें तो जो कुछ कहना है सो कहो।   के हाथ लिया। उनसे आश्रममें मानो क्या हुआ? यह नाम नामेंम कुछ लिखना था नहीं?

बापूकी दुआ

1. गांधीजीकी आत्मकथाका उर्दू अनुवाद।

२५

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

६-११-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खूबसूरत खत मिला। हरफ बहुत अच्छे हैं। ऐसे ही लिखा करो। हिप बाथ जरूर लो। उससे तो फायदा होना चाहिये। नया काम मजे लिया। लेकिन इससे ज्यादा न किया जाये। जितना हो सके उतना करो और खुदाका अहसान मानो। मेरी दुआएं तो तुम्हारे पास हमेशा है ही। कुनसियाकी कुछ भी फिकर मत करो। उसकी फिकर नारणदास करते हैं। फिर तुम क्यों करोगी? के बारेमें तुमने कुछ नहीं लिखा है। वह जानेवाले थे उसका क्या हुआ?

बापूकी दुआएं

२६

[साबरमती आश्रमके पास वाडज गांवमें मैं हरिजनोंकी सेवा करती थी उसका जिक्र है। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। मेरी फिकर मत करो। हाथमें ऐसी कोई बात नहीं जिससे फिकरका कुछ सबब हो सकता है। मुझको जिस्मसे खूब आराम रहता है। रोजाके बारेमें समझा। न्यूमोनिया गया। आज और नहीं लिखूंगा क्योंकि वक्त नहीं रहा। हरिजनोंकी सेवा कर रही हो सो बहुत अच्छा है।

बापूकी दुआ

२७

[कुदसियाको उसके पिता के गमसे इससे चिन्ता होती थी। मैं सेवा नहीं कर पाती थी इसलिए मरना बेहतर है ऐसा लगता था। बापूके ऐसे खतोंसे रूहानी ताकत मिलती रहती थी जिसके कारण आज तक मैं मर नहीं पाई। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य० मं०
२०-११-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

आजकल मेरी तरफसे लम्बे खतकी उम्मीद न रखी जाये। कुदसियाकी फिक्र छोड़ दो। उसके नसीबमें होना नहीं होनेवाला है। तुम्हारे मरनेकी बात करना नहीं। ऐसे क्यों हार जाती हो? खुदा तुम्हारेसे बहुत खिदमत लेगा।

बापूकी दुआ

२८

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य० मं०
२७-११-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा लम्बा खत मिला। मैं तो छोटा ही लिख सकता हूँ। बेहनी कामके बारेमें और उस चीजमें जैसे नारणदास कहें वही करो। बीमार भी सेवा कर सकते हैं यह बात तुम्हारे अच्छी तरह जानना चाहिये। मने दो तरकीबोंकी बात कुसुम[1] के खतमें लिखी है उसे पढ़ लो। बरन गयासोम पढ़ना छोड़ दो। खुदा तुमको सलामत रखे और सेवा करनेमें सब इन्तजाम तुमको कामयाबी देवे।

बापूकी दुआ

१ कुसुम गांधी।

२९

[आश्रम गांवके हरिजन बच्चोंकी मैं सेवा करती थी। उनके पास कपड़े नहीं थे, इसलिए खुद गरम कपड़े पहनकर उनकी सेवा करना मुझे चुभता था। इस बारेमें बापूने लिखा है। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. म.
५-१२-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

जितना खुदा करता है उससे खुश रहो। दूसरे ठंडीसे ठिठरें (तड़पें) और हम गरम कपड़ा पहनें यह अच्छा नहीं लगता। लेकिन हमको जरूरी कपड़ा पहननेका हक है अगर है तो। दूसरोंके लिए पैदा करनेकी कोशिश करें। देनेवाला तो खुदा है। सब बातकी फिकर छोड़ो।

बापूकी दुआ

३०

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
११-१२-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। फिकर सब छोड़ो। सब खुदाके हाथमें छोड़ो। अगर आश्रम साफ तो अच्छा है। हमारे यहां कुदरती इलाज ही होने चाहिए। लेकिन ऐसा वक्त हमको नहीं मिला तो आश्रमके कानूनका पाबन्द रहें। आजकल मेरे पाससे लम्बे खतकी उम्मीद न की जाये।

बापूकी दुआ

५१

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
२५-१२-३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। बवासीरकी बात पढ़कर रंज हुआ। बाजरेकी रोटी ऐसी हालतमें न खाना। डबल-रोटी मक्खनके साथ खाओ, दूध और फल खाओ। डॉक्टरको बताना भी अच्छा हो सकता है। नारणदास कहें सो किया जाये। अगर सेहतके लिए बाहर जाना मुनासिब समझा जाये तो जाना ठीक लगता है। लेकिन इस बातमें भी नारणदास कहें वही करो। अमला बहन[1] मुझे मिल गई। उसने सब बात सुनाई। कुदसिया कुछ ठीक जम रही लगती है।

बापूकी दुआ

५२

[बीमार रहनेके कारण मैं आश्रमके लिए बोझरूप न रहूँ ऐसा सोचकर मैं बाहर रहकर सेवा करनेका सोच रही थी। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
१-१-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। जब बुखार आता है तब घूम नहीं सकती हो। पूरा आराम लेना चाहिये। खानेमें दूध-फल ही लोगी तो अच्छा होगा। तुमको और कोई चीज लेनेकी जरूरत नहीं है। सेहतमें

1. अमलाबहन बापूका रखा हुआ नाम।

जाकर रहनेका खयाल छोड़ दो। आश्रममें रहकर जो सेवा बन सके करो। बीमार होगी तो कुछ परवाह नहीं। खुदा पर कुछ तो छोड़ो।

को कानून भेजा सो ठीक किया। मगर वह कानूनकी पाबन्दी कर सकें तो मैं उनको लिखूंगा। प्रार्थनामें आजकल नहीं आ सकती हो उससे रंज क्यों? बीमारोंको हमेशा रिहाई है ही। जब पढ़ आओ तब खुदाका नाम लेना। बहुत काम करनेका लोभ छोड़ दो। जितना हो सके उतनेसे खुदाका शुक्रिया अदा करो। खुदा तुमको शान्ति देवे।

बापूकी दुआ

३३

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

८-१-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। अच्छा अब मैं नारणदासको खत मांगनेका नहीं लिखूंगा। बाहर जाकर अच्छी हो जाओ तो कैसा अच्छा होगा? दूध और फल पर कायम रहना। रोटी-भातकी तुम्हें कोई जरूरत नहीं। आराम खूब लेना। कपड़ा तो गर्म है न? को खत लिखता हूं। तुम्हारे लिए भी अगर ठहर जाय तो भी मुझको अच्छा लगेगा। कुदसियाके बारेमें क्यों कुछ नहीं लिखती हो? आजकल कैसे रहती है? खुदा तुमको तन्दुरुस्त कर दे।

बापूकी दुआ

य मं
१५-१-३३

प्यारी अमतुस्सलाम

ऐसे मायूस होनेसे काम नहीं चलेगा। वीणाबहन[1] से तुम्हारे बारेमें मेरी बात हुई थी। वे जो फरमायें वह तुम्हें करना चाहिये। डॉक्टरसे वे जो दवाएं लायें वह लो और अगर डॉक्टरको जरूरी लगे तो शस्त्र-क्रिया भी कराओ। बवासीरकी बात भी बताना। जब इलाज हाथमें है तब पीड़ा सहन नहीं करनी चाहिये। खुदा तुम्हारा भला करे।

प्यार,

बापू

१ अहमदाबादकी एक महिला डॉक्टर।

Y M
15-1 33

My dear Amtulsalam,

It will not do for you to become dejected. I h ve had a chat about you with Veenabehn. You should d a he b ds. Take the medicines she may get for y u from th doctor and undergo the operation f th do tor thinks it nec ssary Mention the piles also Y ught t to uffer when the remedy is at hand God bless y u.

L ve

Bapu

३५

य. मं. प्रिज़न
१७-१-३३

प्यारी अमतुस्सलाम

मुझे तुम्हें जल्दी लिखना चाहिये। इसलिए यह अंग्रेजीमें खत है। मैं चाहता हूं कि कौनसा इलाज करना चाहिये इस बारेमें तुम पक्का निश्चय कर लो। मेरी तो सलाह है कि अगर तुम्हें अच्छा डॉक्टर मिल जाय जो तुम्हारे बारेमें सच्ची दिलचस्पी लेता हो तो उसे पूरा मौका देना चाहिये और जो सूचनाएं वह दे उनका पालन करना चाहिये और जैसा फरमावे वैसा करना चाहिये। मतलब कि वीणाबहन

Y C Prison
17 1 '33

My dear Amtulsalam

I must hurry on to write to you Therefore this English letter I would like you to make up your mind quickly as to the treatment to be followed. My advice is, if you get a doctor there who would take real interest in you, you should give him the fullest chance by obeying all the instructions and doing as he bids. That is to say you should do as Veenabehn advises you. There should be no time wasted in simply making a decision You should be in the hospital and take what medicine or injection is given to you and undergo the operation that may be needed Do not think of the removal of the womb unless the doctor says so. Never mind the letter written to You yourself say that he cannot cure piles. After you are well, you should come and see me.

Love

Bapu

खुदा तुमको सलामत रखे। (उर्दू लिपिमें)

जैसी सलाह दें वैसा करना चाहिये। निर्णय करनेमें समय गंवाना नहीं चाहिये। अस्पताल चली जाओ दवा या सुई जो दिया जाय वह लो और जरूरी शस्त्रक्रिया करवाओ। जब तक डॉक्टर न कहे तब तक गर्भाशय निकलवानेका खयाल मत करो। जो जो कष्ट किया है उसकी चिन्ता मत करो। तुम कुछ कहती हो कि वह तसवीर नहीं मिटा सकेंगे। जब तुम अच्छी हो जाओ तब आना और मुझसे मिलना।

प्यार, बापू

३६

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
२०-१-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे बारेमें तार भेजा था सो मिला होगा। खत भी लिखा था। दिमाग डांवाडोल नहीं होना चाहिये। मेरा हुक्म कहो मेरी इच्छा कहो जो कुछ मैंने कह दिया है उसकी तामील करना न करना तुम्हारे हाथमें है। अगर तामील करोगी तो सब फिकर छोड़ दोगी। खुदा तुमको आराम और शान्ति बख्शे।

बापूकी दुआ

३७

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२२-१-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। मैं समझा कि इस बार तुमको देहली न भेजना गलत होगा। इसलिये सीधी देहली चली जाओ और वापसी का खत मिल न सके तो समझ जाना। तुम्हारे खानदानीका हरूफ बोलना चाहिये पर यह भी याद रखो कि हम गरीबोंका दावा करते हैं। गरीब या अमीर सभी [illegible] मदद ही [illegible]

रहते हैं। उनको देखना कर्म कौन देगा? इसलिए जल्दीसे देहली जाओ अच्छी हो जाओ और मुझे आकर भेंटो (मिलो)। खुदा तुम्हारी हिफाजत करेगा। मुझे लिखा करो। हरिजन बच्चोंकी फिकर मत करो। आखिर तो सबको देखनेवाला खुदा ही है।

बापूकी दुआ

५८

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य० मं०
२१-१-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। के पास गई सो बहुत अच्छा किया। मुझे खत हर हफ्ते लिखा करो। ज्यादा लिखोगी तो और भी अच्छा। मैं जरूर लिखूंगा। बिलकुल अच्छी होने पर ही देहली छोड़ो।

बापूकी दुआ

५९

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य० मं०
१२-२-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे खत मिले हैं। देहली सीधी चली गई सो अच्छा किया। अब जब तक बिलकुल ठीक न हो जाओ वहां ही रहना। अच्छी होने पर मुझे मिलकर आश्रम जाना। आश्रम जानेके लिए तैयार हो रही हैं सुनकर मुझे अच्छा लगता है। दिलमें चाहो तब खत लिखा करो। तुमको खत भेजनेमें मुझे कोई तकलीफ नहीं हो सकती। न लिखनेसे जरूर रंज होगा।

कुदसियाको लिखो मुझे लिखती रहे। पटियालामें कैसे रहती है?

बापूकी दुआ

४०

[कुदसिया आश्रमसे जाते ही घरके रंगमें रंग गई। मैं तो आशा करती थी कि वह भी आश्रममें रह जायेगी तो उसकी जिंदगीका दूसरा रूप होता। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
१८-२-३३

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला है। कुदसियाको भूल जाओ। आखिर तो उसके वालिद जो करें वही हो सकता है। हमारा काम हमारे हाथोंमें जो आया उसे तन-मनसे करना है। फल खुदाके ही हाथमें है। [illegible] की बेटी अच्छी होगी। इलाज क्या किया गया? तुमको सब तरह अच्छा हो रहा है जानकर मुझे बड़ी खुशी होती है। क्या क्या इलाज होते हैं क्या खाती हो यह सब हाल लिखो। मने तुमको काफी खत लिखे हैं। मेरे पास हिसाब है। मैं जरूर लिखता रहूंगा।

बापूकी दुआ

४१

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

य. मं.
१८-२-३३

प्यारी बेटी

तुम्हारा खत मिला। देवदास[1] आ गया तो बहुत अच्छा हुआ। तुम्हारे दूसरोंकी नजाके लिए जल्दबाजी नहीं करना चाहिये। पहले तो तुम्हारी सेहत अच्छी कर लो। पीछे सब कुछ अच्छा हो जायगा। [illegible] का मनोभाव जरा पर होगा और फिर सचमुच आश्रम जाना होगा तो रास्ता खुदा ही साफ कर देगा। [illegible] की अपनी डॉक्टरीमें पूरा यकीन है ना आश्रममें सुशीला तो है ही और बहुत लोगोंसे इत्मीनान पैदा हो जायगा। [illegible] उम्मीद न रखें।

बापूकी दुआ

१ बापूके कनिष्ठ पुत्र।

४२

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

म म

२३-३-३१

प्यारी बेटी

तुम्हारा खत मिला है। मैंने तुमको खत लिखा है सो मिल जाना चाहिये। तुम्हारे निरास नहीं होना (है)। खुदा चाहता है वही करता है। हम इलाज करके खामोश रहें। को मैंने आश्रम जानेके बारेमें लम्बा खत लिखा है। वह मिलना चाहिये। उसके साथ तुम्हारे लिए खत था। लक्ष्मी की शादीका तो तुमने सुन ही लिया होगा। वह बारडोली चली गई है।

बापूकी बहुत दुआ

४३

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

८-४-३१

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। मैं ठीक लिखता रहता हूं। अब तुम्हारे के उपचार पर भरोसा रखकर रहना (है)। खुदाको जो करना होगा वह करेगा। हमारी समझ बर्तनवाले भी सब तो अच्छे नहीं होते हैं। इसलिए जिस पर हमारा एतबार जमा है उस पर कायम रहें। का लड़का अच्छा हो गया होगा। फिर चाहे तब आश्रम आ सकते हैं।

बापूकी दुआ

तुमको पता है (कि) अमीना दुखी होनेके लिए फाका कर रही है?

पुरुषोत्तम सलाम करता है।

---

१ गांधीजीकी पाली हुई हरिजन लड़की।

२ पुरुषोत्तम नारणदास गांधी।

४१

[यह खत बापूने अपनी हरिजन-यात्रासे हम सब आश्रमवासी बहनोंको जो साबरमती जेलमें थीं लिखा था।]

२-१-३४

प्यारी बेटी

मुझे अंग्रेजीमें लिखना होगा, क्योंकि जो कुछ क्षण मैं निकाल सकता हूँ उसीमें लिखना होगा। मैं लिखूं और तुम्हें खत न मिले तो मुझे दोष नहीं देना चाहिये। पर कोई खत तुम्हें अगर न मिला तो उसमें तुमने कुछ गंवाया नहीं है। मेरा सफर इतनी तेजीसे चलता है कि किसीका भी कसूर न होते हुए भी मेरे कुछ पत्र लापता हो जायं तो कोई आश्चर्य नहीं। लेकिन अगर मैं लिखता नहीं हूं तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम सबका सतत विचार नहीं करता हूं।

---

2 1 '34

My dear daughter

I must write in English as I must write during the few moments I have to spare. You may not blame me if letters I write do not reach you. But you have lost nothing if any letter has not reached you. I am mo ing about so rapidly that there need be no sur prise f some of my letters go astray without anybody's f ult. But m not writing does not mean that I do not constantl think of all of you. I do. But I write sparingl fo w t of time and in order to enable others to ha e chance of writing My letter to any n I u should b eg rded as letters to all. By t t me ar discharged I shall be travelling th t me s th f India If you think that F I k g ll th v merely to see me I ll me I w ld strongly advise you to u ll I d ll th t lking through mp d

जरूर करता हूं। परंतु समयकी कमीके कारण मैं बहुत थोड़ा लिखता हूं और इसलिए भी कि दूसरोंको लिखनेका मौका मिल सके। मैंने किसी एकको खत लिखा तो वह सबको लिखा हुआ गिना जाना चाहिये। अब तक तुम लोग रिहा होगी। मैं ठेठ दक्षिण भारतमें सफर करता होऊंगा। सिर्फ मुझे मिलनेके लिए इतनी दूर तक तुम्हें आना ठीक लगता हो तो जरूर आओ। मेरी तुम्हें भारपूर्वक सलाह तो यह होगी कि तुम संयम रखो और जो भी बात करनी हो वह पत्रव्यवहारसे करो।

Of course you should see your mother and also Narandas. They are both within easy reach. But the final decision rests with you. My advice to all the others is just what I am giving to you.

I am glad you have kept so well.

I have heard about Velabehn and Durgabehn, also Lilavati. They must all write to me when they are discharged. I hope you have all made the best use of your time. My health is excellent. The last weight was hundred and eight (108) lbs. My food is milk and oranges and one green vegetable plain boiled without salt I take other fruit when it easily comes my way This is either fresh grapes or pomegranates. Generally speaking I take no dates at present. I do not seem to need them. My work commences at three a.m. and ends generally at nine p.m. Of course I try to get some sleep in the middle of the day Your Hindi writing as also your Gujrati is not bad. I hope the Ramjan fast has not weakened you. Has Amina been taking it? Tell her I often receive news about her children who are getting on nicely I have just got a report from their Urdu teacher

Love to you all.

Bapu

Om and Kishan are with me. Keeping well.

अलबत्ता अम्मासे और भारतनवासभाईसे भी मिलना चाहिये। दोनों नजदीक ही हैं। आखिरी निर्णय तो तुम्हें करना है। मैं तुमको जो सलाह दे रहा हूं वही सबके लिए है।

तुमने इतनी अच्छी तबीयत रखी है, इसकी मुझे खुशी है।

मेलाबहन[1] दुर्गाबहन[2] और लीलावती[3]की खबर भी मिली है। रिहाई होने पर वे सब मुझे मिलें। उम्मीद करता हूं कि तुम सबने जो समय मिला उसका सदुपयोग किया होगा। मेरी तबीयत उत्तम है। आखिरी वजन एक सौ आठ पौंड था। मेरी खुराक है दूध सन्तरे और बिना नमककी सादी उबाली हुई एक सब्जी। अब आसानीसे मिल जाय तो दूसरा फल भी लेता हूं। वह या तो ताजे अंगूर या अनार। सामान्य तौर पर आजकल मैं खजूर नहीं लेता। मुझे उनकी जरूरत भी महसूस नहीं होती। मेरा काम भोरमें तीन बजे शुरू होता है और अकसर रातको नौ बजे पूरा होता है। हां दोपहरमें थोड़ासा सो लेनेका प्रयत्न रहता है। तुम्हारी हिन्दी और गुजराती खराब नहीं है। उम्मीद करता हूं कि रमजानके रोजोंसे तुम कमजोर नहीं हुई होगी। अमीना[4] भी कर रही है? उससे कहना कि उसके बच्चोंके बारेमें समाचार मुझे अकसर मिलते रहते हैं उनका अच्छा चल रहा है। अभी उनके उर्दूके उस्तादकी रिपोर्ट मिली है।

सबको प्यार।

ओम[5] और किशन[6] मेरे साथ हैं। अच्छी हैं।

बापू

---

१ वालजीभाई देसाईकी पत्नी।

२ महादेवभाई देसाईकी पत्नी।

३ लीलावती आसर आश्रमवासी बहन।

४ आश्रमवासी इमामसाहब अब्दुल कादर बावाजीरकी बेटी।

५ जमनालाल बजाजकी कनिष्ठ पुत्री।

६ प्रेमाबहन कंटककी सहेली।

५०

[जेलसे छूटनेके बाद यह खत मुझे मिला था।]

१५-१-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

उर्दूमें ज्यादा लिखनेकी कोशिश नहीं करूंगा। सचमुच मैं इतना थक गया हूं कि ज्यादा लिख नहीं सकता। हाथमें दर्द होता है और मौनवारके रातके ८॥ बज चुके हैं। पर कुछ खत तो मुझे लिखने ही होंगे। उम्मीद है कि मेरा खत तुमने जेलमें पाया होगा। मैंने तुम्हें कहा है कि मेरे पास नहीं आना। मैं तुमसे बहुत दूर हूं। परंतु आनेकी इच्छाको अगर तुम रोक न सकती हो तो जरूर आओ। किसी भी सूरतमें तुम्हें अपनी अम्मा और नारणदासभाईसे तो मिलना ही चाहिये। मुझे तफसीलसे लिखो। आशा करता हूं तुम शरीर और मनसे अच्छी होगी।

प्यार

बापू

15-1 34

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

I must not attempt to write more Urdu. I am really too tired now to write any more. The hand aches and it is past 8.30 p.m. silence day But I must write some letters. I hope you got my letter in the jail. I have told you that you should not come to me I am far away from you. But if you cannot resist the wish you must come. You should of course see your mother and Narandas in any case Write to me fully I hope you are well in body and mind.

Love

Bapu

५१

[राजाजीके आश्रममें मैं बीमार थी तब हरिजन-यात्राके समय वहां आश्रममें आकर यह पत्र लिखा है।]

प्यारी बेटी

तुम मूर्ख हो। किसने कहा कि मैं तुमसे नाराज हूं? देखती नहीं मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं? मैं तुम्हारे पास दो बार आया था। लेकिन तुम नींदमें थी। मैं बार बार नहीं आता हूं क्योंकि मैं बहुत काममें हूं। लेकिन यहांसे मैं सब बातोंका संचालन करता हूं। लेकिन तुम मूर्ख हो जिद्दी हो और बेहद नाजुक स्वभावकी हो। न आज मौन रखना है न कल। राजी-खुशीसे आज्ञा मानना तुम्हें सीखना चाहिये। आज्ञा माननेसे तुम्हें शान्ति मिलेगी न कि मनमाना मौन ले बैठनेसे या और किसी बातसे। यही शिस्त और श्रद्धाका अर्थ है।

समझमें आया?

बापू

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

You are stupid. Who told you I was displeased? Do you not see I have put myself in front of you? I came up to you twice and you were asleep I do not come to you oft n, for I am busy But I direct every thing from here But you are stupid, obstinate and se sitive No silence today or tomorrow You must learn to obey cheerfully Your peace lies in obedience not in wilful silence or anything else. That is th meaning of disc pline and faith.

समझम आया? (उर्दू लिपिम)

बापू (उर्दू लिपिमें)

५२

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२७–२–३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

रोज तुमको लिखनेका इरादा करता था लेकिन वक्त कहांसे निकालूं? आज चन्द मिनिट मिलनेसे यह लिख रहा हूं। तुमको अच्छा होगा। की तरफसे अब तक कुछ पता नहीं मिला है। न मालूम तुमको कुछ मिला हो तो। मैं ऐसी जगहमें हूं (जहां) खत-पत्र बहुत देरसे मिलते हैं। हम सब अच्छे हैं।

बापूकी दुआ

५३

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

हरिजन टूर,
२–३–३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत कल मिला। सारा पढ़ लिया। मुझे रंज हुआ इसके यह मानी नहीं कि मैं तुमसे नाराज हूं। और अब तो बात भी भूल गया। माफ तो करना क्या था? तुमने कुछ गुनाह तो नहीं किया था। और क्या चाहती हो? राजाजी[1] जहां तक वहीं रहो। जेल जानेकी कोई जल्दी नहीं है। तुमने कबूल किया है कि जब तक बिलकुल अच्छी नहीं होगी तब तक जेल जानेकी बात नहीं करोगी। यह भी समझो कि राजाजीका संग जितना मिले उतना अच्छा ही है। वहां रहकर जो सेवा बन सके किया करो। का मेरे पर कुछ खत या तार नहीं है। अब पागल मत बनो। खुश रहो। मुझे लिखा करो।

बापूकी दुआ

---

१ श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। उन्होंने मेरी जो सेवा की वह बयानसे बाहर है। शायद ही कोई मां उससे ज्यादा देखभाल कर सके।

५४

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

पटना

२२-१-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला है। आरामसे रहो। अच्छी होने पर वर्धा चली जाओ। का तार अभी आया। वह वर्धा आ रहा है। तुम्हारे जेल जानेका वक्त आयेगा तब म लिखूंगा। उसकी फिकर मैं करूंगा। तुम्हारे बिलकुल अच्छी हो जानेकी ही फिकर करनी है। (मैं) यहां नहीं बुला सकता हूं चूंकि यहां रहने खाने पीनेकी तकलीफ है। आगे देखा जायगा। कृष्णा को खत भेज दो। उसका पता मुझे भेजो।

बापूकी दुआ

५५

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

९-४-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे खत मिले हैं लेकिन वक्त कहांसे निकालूं? अब तो के पास आ गई। मेरे बारेकी इतनी फिकर न रहनी चाहिये। मेरा निवेदन तुमने देखा होगा। अब तुम्हारे जेल जानेकी बात रहती नहीं है। तुम्हारा वहीं रहना आजकल तो अच्छा लगता है। आगे देखा जायेगा।

बापूकी दुआ

---

१ कृष्णाकुमारी आश्रम व जेलकी मेरी साथिन।

हरिजन दौरेसे बापूने सत्याग्रह बन्द करनेका निवेदन किया था। हमारी ही कमजोरियोंके कारण बापूको सत्याग्रह बंद करना पड़ा इसका मुझे बड़ा आघात लगा।

५६

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

गौहाटी
२४–४–३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे खत मिले हैं। अब तो   तुम्हारे पास है इसलिए मैं तुम्हारे बारेमें बेफिकर हूँ। अब तो तुम्हारे किसीको भेज जाना नहीं है। एकबारगी अच्छी हो जाओ बादमें सोच लेंगे क्या किया जाये। जो   कहे वही करो।

बापूकी दुआ

की लड़कीको दुआ लेना चाहिये।

५७

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२७–४–३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

अब तो जेलकी बात भूल गई हो न? याद रखो कि जेलमें जानेका कोई अलग धर्म नहीं है। बाहर रहकर शान्तिसे अपना काम करते रहना यह भी बड़ा धर्म हो सकता है। तुम्हारे सामने काम कहीं कम है। एकबारगी यहां रह कर अपनी सेहत अच्छी कर लो।
के लिए भी तुम्हारा वर्धामें रहना मुझे अच्छा लगता है।

बापूकी दुआ

६०

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत व तार मिले। डॉ. जीवराज पर खत भेजता हूं। डॉ. को नहीं लिखता। इस तरह उनको बुलाना अच्छा नहीं है। किसीकी जरूरत हो तो बम्बईसे हो सकता है। तुम्हारी तरफसे खत बराबर मिलते रहने चाहिये। १९ ता. तक पटना बादमें कटक।

बापूकी दुआ

६१

[बापू उड़ीसामें हरिजन-यात्रा पैदल कर रहे थे। उसमें शामिल होनेकी मेरी तीव्र इच्छा थी। लेकिन शरीरकी हालतके कारण वह पूरी न हो सकी। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे सब खत प्यारसे पढ़ गया हूं। तुम आसमना ऐश करती हो। एक तरफसे मेरे दुखके इन्तजारमें रहती हो दूसरी तरफसे हरएक किस्मके ख्याल करती हो। जो हुक्म-बरदार रहते हैं वे कभी दुखी नहीं रहते हैं। तुम्हारी तबीयत काम न कर सके तेह काम करनेका तुम्हारे ख्याल तक नहीं रखना चाहिये। तुम्हारी अम्माके पास जरूर जाना। बवासीरके लिए ऑपरेशन करा लेना। मेरे पास आनेका मोह छोड़ देना। पैदल मुसाफिरी तुमसे हो नहीं सकती। देहातमें खाना भी चाहिये ऐसा नहीं मिलता है। मेरा काम करना मेरे साथ ही रहने जैसा हुआ। तुम्हारे धीरज रखना जरूरी है। आश्रममें ही रहना है। ऐसा क्यों मान बैठी हो कि अब उसमें जाना ही नहीं है। तुम्हारे उसकी तैयारी करनी है। तैयारीमें ख्याल रखना बाद छोड़ना फिर नहीं करना वगैरा है। को नाराजी हो तो भी अच्छा नहीं है। अब क्या लिखूं?

बापूकी दुआ

[मनमें सदा बापूके पास रहनेकी अभिलाषा रहती थी। गुस्से या जोशमें मैं लिख बैठी कि आपके पास मेरे जैसी अनपढ़के लिए जगह नहीं है। उस पर यह मीठी डांट है।]

२८-५-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम सच कहती हो कि मेरे नजदीक अमीर और लिखे-पढ़े लोग रह सकते हैं। अमीरको फकीर बनाना है और लिखे-पढ़ोंके हाथमें झाड़ू रखना है। तुमको साथ क्यों रखूं? ज्यादा फकीर बनानेके लिए? या तुम्हारे हाथमें झाड़ू रखनेके लिए? पटनामें क्या था? तुम्हारे माफक काम न था? तुम्हारे सेवा करनी हो तो शान्त होना होगा। तुम्हारा तार मिल गया था। क्यों ऑपरेशन मौकूफ किया गया? तुम्हारे खतसे पता लगेगा। हां अच्छा तो होगा अगर अम्माजानकी बात मानकर शादी कर लो। कुमारिका रहनेके वास्ते तुम्हारेमें जो एकाग्रता चाहिये सो कहां है? हर किस्मके ख्याल आते रहते हैं। कोई एक चीज पर दिल नहीं लगता। कुमारिका रहना है तो बिलकुल शान्त हो जाओ। हिन्दी कब सीख लोगी? गुजराती भी अब तो जानना चाहिये। बोलो अब क्या करोगी? मैं १८ तारीखको बम्बई पहुंचूंगा १८ (तारीख) तक रहूंगा। बाद पूना। पूनामें ५ दिन रहूंगा। पीछे अहमदाबाद। अच्छी हो जाना। नादानीकी बात छोड़ दो।

बापूकी दुआ

६३

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

११-५-४४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। अस्पतालमें गई और ऑपरेशन नहीं हुआ यह कैसे? मैं जून १४को बम्बई पहुंचता हूं। कैसा अच्छा होगा अगर ऑपरेशन हो जाये। मेरे साथ चलनेके बारेमें तुमको लिख चुका हूं। ऑपरेशनसे इतना क्यों डरती हो? खुदा पे इतना एतबार नहीं है?

बापूकी दुआ

६४

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

४-६-४४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत और डॉक्टरका तार साथ पहुंचा। ऑपरेशन हो गया सो बहुत अच्छा हुआ। मेरे बम्बई पहुंचने पर तो फिरती हो जाओगी। फिकर किसी चीजकी मत करो। चन्द्रकान्ता[1] और राजे[2] को गम मिलता है। अच्छा हुआ दोनों वहां हैं।

बापूकी दुआ

---

१ कानपुरके डॉ. जवाहरलालकी लड़की जो के० ई० एम० अस्पतालमें हाउस-सर्जन थी।

२ अली डॉक्टरके लड़के जो उसी अस्पतालमें हाउस-सर्जन थे।

८-७-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला है। अच्छी होनेके लिए मेरे पास न आना चाहिये। लेकिन अच्छी हो जानेके बाद जरूर आ सकती है। डॉक्टर क्या कहते हैं सो लिखना। बस फिर और आ सके तब आना। जल्दी चाहे (आना हो तो) कानपुर (आ सकती है)। लेकिन बेहतर यह है कि तू ५ तारीखको वर्धा पहुंच। मैं कानपुर २१ ता. को पहुंचता हूं। बनारस २६ को। वर्धा ५ तारीखको।

बापूके आशीर्वाद

९६

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

बम्बई,
२२-१०-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। हां सच तो है कि मुझे तुम्हारे बरतावसे दुख हुआ है। मैंने जो माना था सो नहीं मिल सकता है। लेकिन उसमें तुम क्या कर सकती हो? जो तुम्हारेमें है वही तो दे सकती हो यह समझकर मैं शान्त हो जाता हूं। तुम्हारी सेहत अच्छी रहती होगी।   के बारेमें तो क्या लिखूं? मेरेसे जो कुछ हो सकेगा सब करूंगा। मसवदा यहां पहुंचनेकी उम्मीद तो है।

बापूकी दुआ

८-३-३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

[illegible] मारी पाने [illegible] दरकार [illegible] कम्पामा बहुती [illegible] वर्धा आकर। कानपूर [illegible] मीए।

बापूके आशीर्वाद

६७

२४-१२-३४

प्यारी बेटी

जल्दी न लिखकर बड़ी फिक्रमें तुमने मुझे रखा। लेकिन ऐसा न करे तो अमतुल कैसी? फिर भी खुदाका शुक्र है कि कल तुम्हारा कार्ड और खत मिला। यहां सब अच्छे हैं। लाली बम्बईमें खेलता है। मेहर यहां कुछ पढ़ती है और खेलती है। वह खुश मालूम होती है। दिल्लीके लिए हम ता. २८को रवाना होंगे। आशा है तुम अच्छी हो रही होगी। आज ज्यादा नहीं।

प्यार,

बापू

---

१ खान अब्दुल गफ्फारखां (सरहद गांधी)का लड़का।
२ खान अब्दुल गफ्फारखांकी लड़की।

24-12 '34

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

You have kept me in great anxiety by not writing earlier But you will not be you if you did otherwise. Thank God however that I have your card and letter received yesterday All well here. Lali is playing in Bombay Mehr is here studying a little and playing She seems to be happy We leave for Delhi on 28th. Hope you are getting well No more today

Love

Bapu

तो हुक्म मिला कि 'बापू तो दे सकती हो।' सब चले गये। मैंने
नहीं किया। कन्याओंकी सेवा शुरू हुई तो बापूजीने कहा कि कुदसियाकी
निगाहसे सब लड़कियोंको देखना है। अब कमियां तो बहुत होती हैं।
कुदसियाकी तंदुरुस्तीके लिहाजसे जो खुराक देना जरूरी समझूं सो
उन कन्याओंको भी न दूं तो खुद कैसे खाऊं? कन्यासेवाकी बीमारी
यहींसे लगी। बापूने कहा 'कन्या-आश्रमका बजट उसकी कमेटी बनाती
है। मेरा कोई दखल नहीं।' मेरी मांग एक पाव दूधकी थी। खैर,
आखिर सोचा कि क्यों न अपने घर देहातमें देहातकी गरीब लड़कियोंको
लेकर ग्रामसेवा भी करूं और घर भी रहूं? बापूने काफी समझाया और
अन्तमें मेरी नौजवानोंकी मन-तरंगोंको सुनकर कहा 'अच्छा वहां जाकर
भी मेरी ही सेवा करोगी। वहां पटियाला जैसी स्टेटमें कोई भी नहीं
कर रहा है।' मैं जाकर सो गई। आधी रात नींद उठी तो मनकी हालत
अजबसी थी। न जाने क्या मुझसे अपराध हुआ या होने जा रहा है।
दूरसे देखती हूं कि बापूके कमरेमें रोशनी हो रही है। रोती रोती भागी
गई और बापूकी गोदमें सर रखकर खूब रोना शुरू किया। बापू जब
जोरसे हंसने लगे और कहा कि 'बावली मैं कब मना करता हूं?
विनोबा गये बालकोबा गये छोटेलाल गये भनसाली गये। मैंने
किसीको नहीं रोका। वैसे अब तुम जाना चाहो जा सकती हो।' लेकिन
मनकी हालतसे मैं परेशान थी। मीराबहन प्रेमसे बाहर ले गईं। प्रार्थनामें
भी चित्त शान्त नहीं था। आखिर मेरी सांस रुकने लगी। चलती थी तो
लगता था कि आगे न जाने किस कमरेमें गिर रही हूं। परेशान
होकर मैंने यह फैसला बापूको सुनाया कि 'मैं घर नहीं जाऊंगी।
फिर सोचूंगी।' बापू बहुत खुश हुए।

बापूको ही रचनात्मकमें काम करना हो तो किसी संस्थामें रहकर
ही कर सकती थी। फिर इसी उलझनमें पड़ी कि क्या करूं? उन्हीं दिनों
बापू देहली जा रहे थे। हरिजन कॉलोनी किंग्सवेकी बुनियाद
डालने जा रहे थे। तो दिमागमें नया विचार आया कि क्यों न देहलीमें
ही एक झोंपड़ी डालकर दो हिन्दू, दो मुस्लिम लड़कियोंको अपनी
जिन्दगीके उद्देश्यको पूरा करनेके लिए तैयार करूं? जो बचपनसे साथ

रहूँगी पढ़ूँगी पढ़ाऊँगी वे अवश्य ही सेवाकार्यमें लग जाऊँगी। लेकिन मुझे दुनियाका अनुभव ही कहाँ था? माँकी गोदसे परदेकी चहारदीवारीसे बापूके चरणोंमें आई। ऐसे कामोंमें क्या मुश्किलात आ सकती हैं सो मैं क्या जानूँ? और, बापूने इस विचारको भी मंजूर किया। और देहली बापू जा ही रहे थे तो वे मुझे भी साथ ले गये। मैंने भी संकल्प किया कि अब झोंपड़ी बनने तक यहाँ ही रहूँगी। कारण हम हरिजन कॉलोनीमें कच्चे मकान बननेवाले थे। पीछे स्कीम बदली। मैं अकेली जंगलमें पड़ी बीमार भी हो गई। बापू बहुत चिन्तामें पड़ गये। लेकिन मैं भी अपना संकल्प कैसे छोड़ती? बापूका इसमें आग्रहसे झुकाना मेरी बड़ी कसौटी थी। पहले तो देवदासभाई ले गये। बापू इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें गये तो मैं वहाँ भाईके पास पहुँच चुकी थी। लेकिन वहाँ भी बच न पाई। बापू कहते वर्धा पहाड़ है मैं खुद डॉक्टर, ठीक कर दूँगा। ऐसा कहकर मुझे साथ ही वर्धा ले गये और फिर बापूकी निजी सेवा रसोई व बीमारोंकी सेवामें मैंने अपनेको लगा दिया।]

वर्धा
१-२-३५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

तुम्हारा खत मिला। बायें हाथसे लिखनेमें बहुत देर लगती है, इसलिए इसे लिखवा रहा हूँ। तुमको मैं क्या सलाह दूँ? जिसमें तुम्हारे दिलको शान्ति मिले वही करो और वही मुझे पसन्द होगा। हरिजन मुसल्मान रहो तो मुझे अच्छा लगेगा ही। पटियालामें भाईके साथ रहकर कुदसियाकी सेवा करोगी तो भी अच्छा है। अम्बालेमें स्वामी के साथ रहकर तन्दुरुस्त हो जाओ और शरीरकी रक्षा करते हुए जो बिन पड़े सेवा भी करो तो बहुत अच्छा हो सकता है और साथ साथ जो बबाजान भाई रहता है उनकी भी कुछ सेवा करोगी।

स्वामी स्वामी उमाप्रसाद जो बड़े भाई अब्दुलरशीदखांके दिवानखाने रहते थे और जिन्हें पिताजी भाभा मानकर बड़ा मानते थे।

ये अब्दुलगफ्फारखाँ बबाजान नहीं कर्णाजाद भाई हैं।

इतना याद रखो कि जिसको सेवा ही करना है उसके लिए सारा जगत क्षेत्र है। जहाँ जो सेवा मिल गई उसे खुदाकी नियामत समझ कर करें। अब तुम्हारे एक निश्चय पर आ जाना चाहिये और किसी स्थान पर बैठ जाना चाहिये। तारावती[1]के हरफ अच्छे हैं। उसकी शादीके वक्त यह मेरा आशीर्वाद जरूर भेज देना। इसके पहले मैंने पटियालेके सिरनामे (पते) कार्ड भेजा है वह मिला होगा।

बापूकी दुआ (उर्दू लिपिमें)

७०

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

वर्धा
१ -२- ४५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारे दोनों खत पढ़ गया हूँ। दुख हुआ। मैंने तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया है। कर भी क्या सकता था? जबलपुरमें जाना मुनासिब न था। *मेरी बात मानो तो कृपा (करके) मेरे पास आ जाओ।* तुम्हारा सब दुख भाग जायेगा। मैंने देवदासको लिखा है तुमको यहाँ भेज देवे। इतना मेरा मानोगी तो मैं तुम्हारी बड़ी मेहरबानी मानूँगा। हरिजन वासमें सब लोग चाहें उसके साथ जा सकती हो। इस वक्त वहाँ रहकर क्या करोगी? हाँ मुझे फिकरमें जरूर डालती हो। मेरी बात माननेके लिए तैयार नहीं हो तो देवदासके साथ रहो। यह भी नहीं करना है तो हरिजन-वास जरूर छोड़ दो। कृपा करके यहाँ आ जाओ यहाँ आ जाओ यहाँ आ जाओ। यह न कर सको तो मुझे छोड़ दो खुदाके लिए।

कसूर खतम हो गया।

बापूकी दुआ

१ एक हरिजन लड़की।

७१

वर्धा
११-२-४५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

तुम्हारा खत मिला। तुमको क्या लिखूं? मैंने मनाई की थी तो भी दुरुस्त होनेके पहले पटियाला गई। अब मानी क्योंकि मैंने मनाई की थी। ये कहांकी बात? अपने आप नाहक दुःखी होती हो मुझे भी करती हो।

अमीनाका पता — मंजुला मामा अहमदाबाद। दरजीका नाम ठाम बापा[1]के पास है। हाल तो उसको भूलो। अच्छी हो जाओ। बादमें देखा जायगा।

नाके सिरके लिए हालमें ही एक इलाज किसीने बताया है। बायें नाकसे साफ ठंडा पानी खींचना और मुंहसे थूक देना। एक कटोरेमें पानी रखकर दाहिने नाकको दबाकर बायें नाकको पानीमें डुबो देना गर्दन नीची करना मुंह बन्द रखना। पानी अपने आप ऊपर जायगा। कुछ पेटमें जाये तो हरज नहीं। लेकिन जहां तक हो सके उसे थूक डालना। गलेमें आय बाजू पर थूकना। मुंह बन्द रखना। बाद दाहिने नाकसे लेना।

अब तो अच्छी ही जाओगी तो तुम्हारी मेहरबानी कृपा थी कुछ नहीं मानूंगा। अम्बालेके नजदीक रहने है उस भाई[2]का क्या? यहां सब मजेमें आराम है।

बापूके आशीर्वाद

१ श्री अमृतलाल ठक्कर हरिजन-सेवक-संघके मंत्री।
२ सर महमूदाबाद भाई अब्दुल्ला [illegible] (उस वक्त जामियाके [illegible] थे)। आजकल [illegible] है।

७२

[बापू इस वक्त मगनवाड़ीमें जो जमनालालजीने ग्रामोद्योग-संघको दी थी रहते थे।]

वर्धा
२१-२-३५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

तुम्हारा खत मिला। इसमें उर्दू हुरूफ बायें हाथसे ठीक नहीं बनते हैं। मेरे तार परसे तुम नहीं आई। खत मिलनेसे पता चलेगा क्या हुआ। हालत बदल जानेसे तुम्हारे खतका उत्तर देनेका नहीं रहता। जहां मन बेचारा कहे सो करो। ऐसा ही जो करना चाहते हैं वह हमेशा कर लेते हैं। तुम नाहक मानती हो कि तुम्हारे मेरे पास आनेसे दूसरे नाराज होंगे। यहां तो मेरे पास ऐसे कोई हैं भी नहीं। मैं तो बगीचेमें रहता हूं। लेकिन जैसा अच्छा लगे वही करो।

बापूके आशीर्वाद

७३

वर्धा
२५-२-३५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

तुम्हारा खत आया था। तार देने जैसा कुछ नहीं था। और मेरे तारका जवाब कहां रहा है? मेरी बात सुनना चाहती हो तो

१ मेरे पास आ जाओ या
२ बंबई जाओ या
३ इंदौर जाओ या
४ पटियाला।

और किसी जगह जाना या रहना गुनाह समझा जाय। फिर तो जैसा दिल चाहे ऐसा करो। मैं तुमको क्या कह या कर सकता हूं? खुदा ही तुम्हारी देखभाल करेगा।

बापूके आशीर्वाद

वर्धा
२४–३–३५

प्यारी बीबी

तेरा खत मिला। मैं क्या करूं? अगर हरिजन-आश्रममें दूसरा कोई रहे और मलकानी[1] और देवदास इजाजत देवें तो जा। जिस तरह तबीयत अच्छी रहे वही कर।

बायें हाथसे ज्यादा नहीं लिख सकता। चरखा वगैरा मिल गया होगा। और कुछ चाहिये तो लिखना। मैंने तो तुमसे सब तरहसे आग्रह करना छोड़ दिया है। तुझे जैसा ठीक लगे वैसा करके तू तन-दुरुस्त और मन-दुरुस्त हो जा। डॉ. अनसारी जैसा कहें वैसा कर। डॉ. खानसाहब और मेहरताजसे मिलती है क्या? न मिलती हो तो मिलना।

के पास जाना हो तो जाना। लेकिन उस पर बहुत बोझ है। घरमें समावेश नहीं होगा। लेकिन मैं जानता हूं कि उसे तेरा बोझ नहीं लगेगा। डॉ. अनसारीकी इजाजत लेकर जाना।

---

१ प्रो. नारायण मलकानी हरिजन-सेवक-संघ दिल्लीके मुख्य कार्यकर्ता थे। पहले गुजरात विद्यापीठ अहमदाबादमें अध्यापक थे।

वर्धा
२४–१–३५

प्यारी बीबी

तेरा खत मिला। मैं क्या करूं? अगर हरिजन-आश्रममें दूसरे कोई रहें और मलकानी और देवदास इजाजत देवें तो जा। जिस तरह तबीयत अच्छी रहे वही कर।

डाबे हाथे वधारे नथी लखी शकतो। रेंटियो वि. मळी गयुं हशे। बीजुं कंई जोईए तो लखजे। में तो तारी साथे बधो आग्रह छोडी दीधो छे। तने जेम ठीक लाग तेम करीने तुं तन-दुरस्त ने मन-दुरस्त थई जा। डॉ. अनसारी कहे तेम करजे। डॉ. खानसाहबने अने मेहरताजने मळे छे? न मळती होय तो मळजे। पासे

७७

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

१-४-४५

प्यारी बीबी

तुम्हारा खत मिला है। इंदौरसे मैं वर्धा वापिस आ जाऊंगा। झोंपड़ी होने तक वर्धामें रहो। और भी रह सकती हो। झोंपड़ीके बारेमें मुन्नालालको मैं लिख देता हूं कि दो कमरे बनावें भले थोड़ा ज्यादा खर्च हो और पक्की ईंटकी बनवी। मेरे आने तक बिलकुल अच्छी हो जाओगी ना?

बापूकी दुआ

७८

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

८-४-४५

प्यारी बीबी

भाई साहबको राजी रखनेके लिए दो दिन को देखने दो। कुछ कहना मुश्किल है वर्धा कहां तक ठहर सकना। सब कहना मानोगी तो जरूर ज्वरसी व दिलकी कमजोरी मिटा दूंगा। कच्ची ईंटसे बनेगी झोंपड़ी करन न देवे तो क्या किया जावे?

बापूकी दुआ

७९

[अपने खतमें सबोधनमें बीबी लिखा है। उसके बारेमें मैंने लिखा था कि मुझे बीबी क्यों लिखा? मेरे घरके सब लोग मुझे बीबी कहते थे व लिखते थे। उस परसे बापूकी कलम पर भी वह चढ़ा तब मैंने उन्हें लिखा। बीबीका अर्थ है बहन। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

१४-४-४५

प्यारी बेटी

क्या बेटीको बीबी नहीं कह सकते हैं? देवदासको पैसा वापिस

देनेकी क्यों फिकर करती हो? अब* कांग्रेसका टिकट लेनेकी कोई जरूरत नहीं है। मेरे सामके साथ देखा जायेगा। बाकी मिलने पर।

बापूकी दुआ

८०

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

वर्धा

१७-४-३५

प्यारी बेटी

मेरी तो उम्मीद है कि तुम मेरे साथ ही रहोगी। मुझे पता नहीं वहांका इन्तजाम क्या है। अब तो कुछ दिन बाकी नहीं हैं। सब पता लग जायेगा।

बापूकी दुआ

८१

[बापूको खूनका दबाव ज्यादा होनेसे जब वे वर्धा छोड़कर जा रहे थे उस समय मैं स्टेशन पर औरोंके साथ उन्हें पहुंचाने गई थी। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

बोरसद

२१-५-३५

प्यारी बेटी

तुम्हारा खत मिला। स्टेशन आकर कोई ऐसा गुनाह तो नहीं किया। क्या आमला परेशान होती हो? तुमने सब खबर ठीक दी है। परमात्मा खुश होगी। राजकिशोरी को मेरा खत मिला होगा। तुम्हारे तबीयतके बाहर काम न करना। मैं तो तारीखका पहुंच जाऊंगा।

बापूकी दुआ

* यह और [illegible] तक म [illegible] पहुंच गई थी तब [illegible] लिया गया [illegible] मालूम [illegible] टिकटकी बात है।

[illegible] शर्मा।

[illegible] आपसमें [illegible]

८२

[बापूकी तबीयतको देखते हुए उन्हें तकलीफ न देनेके खयालसे मैंने लिखा था कि मुझे पत्र लिखनेका कष्ट न करें। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२७-५-४५

प्यारी बेटी

तुमने तो मुझे लिखनेकी मनाही की है, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे खतसे तुमको खुशी होगी। मुझे लिखनेका वक्त है। वहां सब अच्छा चल रहा है जानकर खुशी होती है। जापानी साधु[1] अच्छे होंगे।

बापूकी दुआ

८३

[देहलीमें हरिजन कॉलोनीके मकान बन जाने पर मैं वहां पहुंच गई थी और हरिजन बच्चोंका रसोड़ा संभाल रही थी। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२९-१-४६

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

मेरे खत मिल होंगे। बहुत दिनोंसे तुम्हारे खत नहीं है। खत लिखनेमें आलस न किया जाय। अब तुम्हारा कैसे चल रहा है? तुमको अब तो अच्छा जगह मिल गई है। रसोड़ेकी सब जिम्मेवारी तुम्हारे सर पे आई है न? कुछ दवा चलती है?

बापूकी दुआ

१ जापानी साधुको बापूने आनंद नाम दिया था।

८४

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

अहमदाबाद
११–२–३६

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला है। पटियाला जानेके बारेमें तो कान्तिको लिखनेको कह दिया था। [1] [2] बापा'से ले लो और लाला दुनीचन्द को दे दो। कमरेका किराया देती हो यह अच्छा है। मेरे देहली[3] आनेके बाद देखेंगे क्या करना चाहिये। कान्ता[4] खाना मुझे अच्छा लगता है। तुम्हारे बारेमें डॉक्टर अनसारीसे पूछो। तबीयत अच्छी हो जानी चाहिये। बाकी खबर कान्ति से मिलेगी। मेरी तरफसे इतना बस समझो।

बापूकी दुआ

१ ठक्करबापा।
२ अंबालाके कांग्रेस कार्यकर्ता।
३ देहलीके पास हरिजनोंका एक गांव।
४ कान्ति गांधी गांधीजीके ज्येष्ठ पुत्र हरिलाल गांधीका पुत्र।

८५

वर्धा
२८-२-३९

चि अमतुस्सलाम

तूने मुझे लिखनेकी मनाही की इसलिए मैंने नहीं लिखा। अब तक दूसरेसे लिखवाना शुरू नहीं किया है। आज आश्रमी आ रहे हैं। मैं तो वहां ता. ८को पहुंचनेकी आशा रखता हूं। आश्रमीसे ज्यादा मालूम होगा। तेरा शरीर बढ़िया देखनेकी उम्मीद है।

बापूके आशीर्वाद

वर्धा
२८-२-३९

चि अमतुस्सलाम

तें मने लखवानी मना करी एटले में न लख्युं। बीजानी पासे लखाववानुं हजु शरू नथी कर्युं। आज आश्रमी [illegible]। हुं तो त्यां ८ मीए पहोंचवानी आशा सेवी रह्यो छुं। आश्रमीमां वधारे खबर पडशे। तारुं शरीर वधारे सरस जोवानी उमेद छे।

बापुना आशीर्वाद

१-४-३९

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा लंबा खत मिला। ध्यानसे पढ़ा। बापाके खतसे मैं जरा भी दुखी नहीं हुआ हूं। मैं जानता हूं कि तू हारनेवाली नहीं है।

बहनके ताने तुझ पर असर नहीं करेंगे यह भी मैं जानता हूं। लेकिन बापाके खतकी ध्वनि यही है कि सचमुच तेरी वहां जरूरत नहीं है। तू जहां होगी वहां सेवा तो करेगी ही। यह बात अलग है। तेरी सेवाकी जहां जरूरत हो वहां मैं तुझे रखना चाहता हूं। ऐसी जरूरत और जगह है ही। इसलिए मैंने बापाको लिखा कि

१-४-३९

बेटी अमतुस्सलाम

तारो लांबो कागळ मळ्यो। ध्यानपूर्वक वांच्यो। बापाना कागळथी हुं जराये दुःखी नथी थयो। हुं जाणुं छुं के तुं हारे एम नथी। बहेनना महेणां तारी उपर असर न करे एम जाणुं छुं। पण बापाना कागळनी ध्वनि एवी छे के तारी त्यां जरूरत नथी। तुं ज्यां होय त्यां सेवा तो करे ज। ए वात जोदी। तारी सेवानी ज्यां गरज होय त्यां तने राखवा इच्छुं छुं। एवी गरज बीजे ठेकाणे छे ज। तेथी मैं बापाने लख्युं छे के जो अमतुस्सलामनी त्यां जरूर न होय तो मारी पास मोकली देजो। हवे जेम बापा कहे तेम करजे।

[illegible] मम [illegible] कोई [illegible] उपर खाक नाखे छे ए तो [illegible] छे। [illegible] तुं [illegible] छो [illegible] कोई खाक छो [illegible] के [illegible] कोई खाद नो [illegible] [illegible] ममत्व छे। [illegible] मारी उपर खाक नाखुं [illegible] बापाना [illegible] आवजे।

बापुनी दुआ

अगर अमतुस्सलामकी तबीयत वहां बहुत खराब न हो तो मेरे पास भेज दें। अब बापा जो कहें सो करना।

तू मुसलमान है इसलिए लोग तेरा दोष निकालते हैं यह तो बिलकुल गलत है। लेकिन तू स्त्री है और कुमारिका है इसलिए कोई दोष देखें तो सहें। लेकिन तू यकीनन् मान कि ऐसे हैं भी तो इने गिने ही। जो तेरी पवित्रताके लिए तुझे पूजते हैं और चाहते हैं ऐसे असंख्य लोग हैं। लेकिन तुझे पूजाकी या निंदाकी क्या परवाह? मैं तुझ पर खाक डालूं तब तू फिकर करना। सेगांव पहुंच या। बापाके पाससे भाग निकल।

बापूकी दुआ

८७

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

२२-४-३६

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। रोना तो छोड़ना चाहिये। काम जितना हो सके उतना ही किया जाये। त्यागीकी बहुत आशा न की जाय। अच्छे हैं लेकिन अपना चित्त ठिकाने नहीं रख सकते हैं। तुम्हारे इन्जेक्शन लेना है। जल्दी शुरू कर दो। कांति तो मेरे साथ ही है। मेरी तबीयत अच्छी है। गर्मी तो है। मे (मई) माहके नजदीक सरदार[1] को लेकर बंगलौर जाना होगा।

बापूकी दुआ

---

१ वल्लभभाई पटेल।

रहा हूं। मेरे साथ कांति और कनु[1] हैं। महादेव[2] और पूना होकर आयेंगे। कुमारप्पा[3] बादमें आयेंगे।

बापूकी दुआ

१०

[डॉ. अनसारीका देहान्त होने पर यह खत मुझे बापूने लिखा था। बापूसे दूर रहकर देहातोंमें हरिजनों और मुसलमानोंमें काम करनेके लिए डॉक्टर साहब और ठक्करबापासे मुझे बहुत मदद मिली थी। डॉ. साहबके देहान्तसे मुझे सख्त चोट लगी थी। मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

नन्दी दुर्ग
१७-५-३६

प्यारी बेटी

डॉक्टर साहब के बारेमें तुमने जो लिखा है वह सब सही है। उनकी जोड़ी हमारे पास नहीं है। लेकिन हम क्या जानें उनकी मौतसे अच्छा है या बुरा? खुदा ही बेहतर जानता है। वह देता है वह लेता है। हम तो डॉक्टर साहबकी मौतसे भी सबक सीखें। जो उन्होंने छोड़ा है सो हम करें। रोना फाका करना फजूल है। खुदाको माननेवाले मौतसे क्यों घबरायें? पैदा होते हैं उनको मरना तो है ही। तुम्हारे अपने कामोंका अब तो कुछ बचाव नहीं चाहती हो? अब न पटियाला जाना है न मेरे पास आना है न चित्रकूट जाना है। मेरे पास आनेका तुम्हारा दिल हो तब आ सकती हो। बाकी तो हरिजन आश्रम ही तुम्हारे लिए सब कुछ है। यह मेरे कहनेसे नहीं लेकिन

---

१ कनु गांधी नारणदास गांधीका पुत्र।

२ महादेवभाई देसाई।

३ जे० सी० कुमारप्पा ग्रामोद्योग-संघके मंत्री प्रसिद्ध गांधीवादी अर्थशास्त्री।

४ डॉक्टर अनसारी।

डॉक्टर साहबके आखिरका खतसे। डॉक्टर साहबने बताई हुई दवा तो (तुमने) खा ली होगी। हम सब अच्छे हैं। स्वामीजीको अलग नहीं लिखता। राजकिशोरी खुश होगी।

बापूकी दुआ

११

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

नन्दी दुर्ग
१८-५-३१

प्यारी बेटी

बापासे क्या खफा रही है? बापाने जो कुछ लिखा सो तुम्हारे भलेके लिए था या ना? वे तुमको ‌ ‌ ‌ से बचाना चाहते थे। यह कोई गुनाह था क्या? बापा कहते हैं मैं तुमसे खुलासा करूं। कहो क्या खुलासा करूं?

बापूकी दुआ

१२

२८-५-३१

चि. अमतुस्सलाम

बहुत दिनोंके बाद तेरा खत मिला। अब तुझे खत लिखनेमें मुझे डर लगता है। तू बहुत वहमी हो गई है। इसलिए अर्थका अनर्थ करती है। उर्दूमें लिखनेका भी अब कम या नहीं सोच रहा हूं। जिस खतमें आप भी तुम लगते वैसा कुछ भी नहीं था उसीका उलटा अर्थ करके तू दुःखी हुई। मैंने तो ठक्करबापाके बड़ाई करनेका लिखकर

२८-५-३१

चि. अमतुस्सलाम

तमे बापाने तारो कागळ मळ्यो। मने हवे तने कागळ लखतां डर लागे छे। तु बहु वहेमी थई गई छो। एटले अर्थना अनर्थ करे छे। उर्दूमां लखवानु पण बंध करवु के नहि ते विचारी रह्यो छु। जे कागळमां

मजाक ही किया था। मैं तो जानता हूँ कि तू किसीसे झगड़नेवाली नहीं है। इसलिए तेरे बारेमें झगड़ेकी बात कहूँ तो वह विनोद ही हो सकता है न? ठक्करबापाका प्रेमपूर्ण खत मिला। सब ठीक हो गया ऐसा माना इसलिए तो मैंने विनोद किया। उससे राजी होनेके बजाय उसका दुःख कैसा?

अब तुमसे विनोद करना छोड़ दूँ क्या?

वहाँ तेरे बारेमें अनेक प्रकारकी बातें होती भी हों तो भी क्या? उसमें भी तेरा वहमी स्वभाव तो काम करता नहीं है न? तुझे तो अपने कामसे मतलब है। हरिजन बालकोंको पढ़ाकर खिलाना सब साफ-सूफ रखना। इससे बढ़कर काम कौनसा है? और फिर तेरे पास तो त्यागी और राजकिशोरी है इसलिए मुश्किल नहीं होनी चाहिये।

अगर तूने अपना शरीर बिगाड़ा तो मुझे भारी पीड़ा होगी। वहाँ अनसारीकी मौतका दुःख भूल जाना चाहिये। वे जो छोड़ गये हैं वह काम करना है।

मुद्दल दुःख लागवा जेवुं कंई ज न हतुं तेनो ज उलटो अर्थ करीने तु दुःखी थई। में तो ठक्करबापानी साथे लडाई करवानुं कशीय मश्करी ज करी हती। हुं तो जाणुं छुं के तु कोईनी साथे लडाई करे एवी नथी। एटले तारे विषे लडाईनुं कहुं ए तो विनोद ज होय ना! ठक्करबापानो प्रेमाळ कागळ मळ्यो। बधुं ठीक थयुं समज्यो एटले तो विनोद कर्यो। तेथी राजी थवाने बदले दुःख शुं?

हवेथी तारी साथे विनोद करवानुं छोडी दउं के?

त्यां तारे विषे अनेक प्रकारनी वात थती होय तोय शुं? एमां पण तारो वहेमी स्वभाव तो काम नथी करतो ना? तारे तो तारा कामनी साथे काम छे। हरिजन बाळकोने भणावीने जमाडवुं, बधुं साफसूफ राखवुं। आथी वधारे सारुं काम शुं? वळी तारी पासे त्यागी अने राजकिशोरी छे एटले मुश्केली न आववी जोईए।

जो तारुं शरीर बगाडशे तो मने भारे पीडा थवानी छे। त्यां अनसारीना मोतनुं दुःख भूलवानुं छे। ते मूकी गया छे ते काम करवानुं छे।

पटियालेमें भाइयोंसे जो बात हुई वह ठीक नहीं है। उसमें तेरा पागलपन था इसलिए तुझे जवाब भी ऐसे ही मिले। तुम्हीं कुंदुंनी और क्या कहेगा? तेरी जिदके सामने सबको झुकना पड़ता है।

तेरी सूचना मिलनेसे पहले ही मैंने सरस्वती को और उसकी माको बुलाया है। मैं मानता हूं कि वे बंगलौर आयेंगे। कांतिकी फिकर न कर।

जवाब अब बंगलौर सिटी देना।
सुकीर्ति और रामको खत लिखता हूं।
तेरी तबीयतकी खबर देना।
यह खत ठीक पढ़ पाई या नहीं यह लिखना।
अब तो सब सवालोंके जवाब आ गये न?

बापूके आशीर्वाद

पतियाळामां भाईओ साथे वात थई ते बरोबर नथी। एमां तारुं गांडपण ज हतुं एटले तने जवाब पण एवा ज मळ्या। तुम्हीं कुंदुंनी बीजुं शुं कहे? तारी हठनी पासे बधाने नमवुं पडे छे।

तारी सूचना मळ्या पहेलां ज में सरस्वती अने तेनी माने बोलावेल छे। हुं मानुं छुं के बंगलुर आवशे। कांतिनी फिकर न करजे।

उत्तर हवे बेंगलुर सीटी देजो।
सुकीर्ति अने रामने कागळ लखुं छुं।
तारी तबियतना खबर आपजे।
आ कागळ बराबर उकले छे के नहीं ए कहेजे।
हवे तो बधा सवालोना जवाब आवी गया ना?

बापुना आशीर्वाद

१ कांति गांधीकी पत्नी।
२ हरिजन आश्रम दिल्लीकी लड़की।

१३

बंगलौर सिटी

५-६-३६

चि० अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला।

तेरे सामने मेरी कुछ चल सकती है? तबीयत खराब हो तो मेरे पास क्यों नहीं आती? वहां खराब तबीयतमें क्यों पड़ी रहती है?

वहांकी खुराकके बारेमें समझा। फिलहाल तो सूचना करने लायक कुछ सूझता नहीं है। जो जाना चाहिये वह तू अगर नहीं जायगी तो मुझे बड़ा दुःख होगा।

वहां रहनेवाले लड़कोंसे एक बार खत लिखवा फिर मैं लिखने लगूंगा। उनके नाम काम वगैरा भी जानूं तो अच्छा होगा।

सुकीर्ति कहां गई?

हम १४को वर्धा पहुंचते हैं।

बापूके आशीर्वाद

बेंगलुर सीटी

५-६-३६

चि० अमतुस्सलाम

तारो कागळ मळ्यो।

तारी पासे मारुं कंई चाले के? तबियत खराब होय तो मारी पासे का न आवे? त्यां खराब तबियतमां केम पडी रहे?

त्यांना खोराकनुं समज्यो। हमणां तो सूचना करवानुं सूझतुं नथी। तुं जे जावुं घटे ते नहीं जाय तो मने भारे दुःख थशे।

त्यां रहेता छोकराओ पासे एकवार कागळ लखाव एटले हुं लखतो थईश। तेओनां नाम तेओनुं काम वि० पण जाणुं तो ठीक।

सुकीर्ति क्यां गई?

अमे १४ मीए वर्धा पहोंचीए छीए।

बापुना आशीर्वाद

१४

७–१–४६

चि० अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। प्रकाशमणिके अकस्मात् अवसानसे खेद होता है। उनका कोई यहां हो तो उन्हें मेरा खेद बताना।

सुकीर्ति कहां गई?

लड़कोंकी संभाल रखते हुए अगर तू अच्छी हो जाय तो उससे अच्छा क्या हो सकता है?

का बरताव अब कैसा है? तू जो मनसारीके यहां जाती है क्या?

पापरम्मा और सरस्वती कल सुबह यहां आती हैं। अब कान्तिके लिए हरिलालके पास जानेकी बात कहां रही? वह शान्त है। हरिलालके बारेमें मैंने लिखा है सो पता होगा।

बापूके आशीर्वाद

७–१–४६

चि० अमतुस्सलाम

तारो कागळ मळ्यो। प्रकाशमणीना अचानक अवसानथी खेद थाय छे। एमनुं कोई त्यां होय तो मारो खेद जणावजे।

सुकीर्ति क्यां गई?

छोकराओनी खबर राखता तुं सारी थई जाय तो एना जेवुं सारुं शुं होय?

हवे केम वर्ते छे? तुं जा मनसारीने त्यां जाय छे के?

पापरम्मा ने सरस्वती काले सवारे अहीं आवे छे। हवे कान्तिने हरिलाल पासे जवापणुं क्यां छे? ए शान्त छे। हरिलाल विषे में लख्युं छे ते जाण्युं हशे।

बापुना आशीर्वाद

९५

सेगांव वर्धा
१९-९-३९

चि अमतुस्सलाम

को मैंने तेरे पास भेजा इसलिए तेरी डांट मेरे सिर आंखों पर। मुझे माफ करना। अब फिरसे ऐसा गुनाह नहीं करूंगा। तू किसकी बात मानती है कि   की मानेगी? एक जमाना था जब तू उनको पूजती थी उनकी सलाह तू मानती थी और उनका कहा माननेसे फायदा हुआ है ऐसा भी कहती थी। अब उनकी सलाह तुझे नहीं भाती यह जमानेकी तासीर है।

कान्तिको काकासाहब[1] के पास जानेकी प्रेरणा मैंने नहीं की। लेकिन काकासाहबको उसकी सेवाकी और मददकी जरूरत है ऐसा

---

१ आचार्य श्री काकासाहब कालेलकर गांधीजीके आश्रमके सबसे पुराने साथियोंमें से एक प्रसिद्ध शिक्षणशास्त्री गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद) के भूतपूर्व कुलनायक और आचार्य।

सेगांव वर्धा
१९-९-३९

चि अमतुस्सलाम

ने में तारी पासे मोकल्यो तेनो ठपको माथे चडावुं छुं। मने माफ करजे। हवे फरीथी एवो गुनो नहीं करुं। तू कोनी वात माने छे के   नी मानं? एक जमानो हतो के ज्यारे तुं तेने पूजती तेनी सलाह तू मानती ने तेनुं कहेलुं माननाथी फायदो थयो छे एम पण कहेती। हवे तेनी सलाह तने गमती नथी ए जमानानी तासीर छे।

कान्तिने काकासाहेबनी पासे जवा में प्रेर्यो नथी। पण काकासाहेबने तेनी सेवानी ने मददनी दरकार छे एम तेने लाग्युं एटले ते ए सेवा

उसे मालूम हुआ इसलिए वह उस सेवाके लिए तैयार हो गया। मुझे उसकी तैयारी अच्छी लगी। उससे उसे फायदा ही होगा। जब काकासाहबका काम पूरा होगा तब या जब शान्तिकी इच्छा होगी तब वह मेरे पास लौटेगा।

तूने भाइयोंको आश्रमियोंको लिख डाला वह जाना। उसमें मैं अदब नहीं देखता। उसमें मैं मनस्वीपन (स्वच्छन्दता) देखता हूं। लेकिन तुझे समझानेमें कौन समर्थ है? जो तू करे वह मेरे जैसेको देखते रहना होगा। छुट्टियां लगे तब जरूर आना।

मेरी तबीयत ठीक है। सेगांवमें हूं। आज सरस्वती आई होगी। लड़कोंके लिए खत साथमें है।

बापूके आशीर्वाद

माटे तैयार थई गयो। मने तेनी तैयारी गमी। तेथी तेने फायदो ज थशे। ज्यारे काकासाहेबनुं काम थई रहेशे त्यारे अथवा शान्तिनी इच्छा थशे त्यारे ते मारी पासे आवशे।

तें बाईओ ने भाईओने लखेलो कागळ में जोयुं। एमां हुं अदब नथी जोतो। एमां मनस्वीपणुं जोउं छुं। पण तने कोण समजाववा समर्थ [illegible] मारा जेवाए जोया करवुं रह्युं। छुट्टीना दिवस आवे त्यारे तुं आवी जजे।

[illegible] सारी छे। [illegible] छुं। आज सरस्वती आवी हशे। छोकराओ माटे कागळ [illegible] छे।

बापुना आशीर्वाद

सेगांव वर्धा
२१-१-३९

चि० अमतुस्सलाम

मैं क्या जवाब दूं? तूने लिखा आपको [illegible] को भेजना ही नहीं चाहिये था। मैं उनकी बात माननेवाली नहीं हूं। लेकिन मैंने तो उन्हें भेजनेकी गलती की। अब उस गलतीके लिए माफी मांगनी चाहिये न? मैंने लिखा कि तू [illegible] को पूजती थी। तू लिखती है मैं इन्सानको पूजती ही नहीं। बोल हमारा अब कैसे मेल बैठेगा? मैं तो सबको पूजता हूं। तुझे पूजता हूं। मैं मानता था कि तू कान्तिको पूजती है द्रौपदीको पूजती है। जो खुदाको पूजता है वह उसकी खल्कतको नहीं पूजेगा तो क्या करेगा? मुझे पूजनेवाली मेरे कान्तिको

मैंने बापूको लिखा था कि मैं आपको खुदाई रहनुमा मानती हुई जरूर आपकी पूजा करती हूं। मैं आपको इन्सान नहीं मानती।

सेगांव वर्धा
२१-१-३९

चि० अमतुस्सलाम

हुं शुं जवाब लखुं? ते लख्युं अमारे [illegible] ने मोकलवो ज नहोतो जोईतो। हुं तेनी वात माननारी नथी। पण मैं तो तेने मोकलवानी भूल करी। हवे ए भूलने माटे माफी मागवी जोईए ना? मैं लख्युं तुं [illegible] ने पूजती। तुं लखे छे [illegible] इन्सानने पूजती ज नथी। बोल हवे आपणो मेळ केम [illegible] ना स्वभावने पूजुं छुं। तने पूजुं छुं। हुं मानतो हतो के तुं [illegible] पूजे छे द्रौपदीने पूजे छे। जे खुदाने पूजे [illegible] नहीं पूजे तो शुं करशे? मने पूजनार मारा [illegible] नहीं [illegible]? तुं जो आपणी मेळवण [illegible] शुं थशे? गुजराती [illegible]

[illegible] भाईनु नहीं [illegible] नहीं। [illegible]

सेगांव वर्धा
१–७–३९

चि० अमतुस्सलाम

तेरा तार और दो खत मिले। सरस्वतीके बारेमें मैंने कान्तिका कहा किया है। तू मिलकर लौट सकती थी। इसलिए कान्तिकी प्रेरणासे मैंने तार किया। तू नहीं आ सकेगी यह डर तो था ही। सरस्वती का कान्तिके यहां आनेकी बात तो थी ही नहीं। अब तो सरस्वती फिरसे जब आये तब देखा जायगा।

महिला-आश्रमके बारेमें तू जो लिखती है वह जरा भी ठीक नहीं है। वह रोग बढ़ता जाता है। लड़कियोंको लौटा देना पड़ता है।

सेगांव वर्धा,
१–७–३९

चि० अमतुस्सलाम

तारो तार अने बे कागळ मळ्या। सरस्वतीनी बाबत में कान्तिनु कहेलु कर्यु छे। तु मळीने पाछी जई शकती हती। तेथी कान्तिनी प्रेरणाथी मे तार कर्यो। तु नहीं आवी शके एवी बीक तो हती ज। सरस्वतीनुं ने कान्तिने त्यां आववापणु तो न ज हतुं। हवे तो ज्यारे सरस्वती पाछी आवे त्यारे वात।

महिला-आश्रम विषे तु लखे छे ए मुद्दल ठीक नथी। ए रोग वधतो जाय छ। छोकरीओने पाछी वाळवी पडे छ। एक पंजाबी छोकरी न रही शकी तथा सरस्वती न रही शकी एम कहेवु बरोबर नथी। सरस्वतीना न रहेवाना कारण मोटु ज हतु। ए बध [illegible] मने [illegible] नथी।

[illegible]

बापुना आशीर्वाद

राजकिशोरी न रह सकी इसलिए सरस्वती भी नहीं रह सकती यह कहना ठीक नहीं है। सरस्वतीके न रहनेका कारण और ही था। यह सब लिखनेके लिए मुझे समय नहीं है।

छुट्टीके दिनोंमें ऑपरेशन करानेकी बात मुझे तो अच्छी लगती है।

बाकी वियोगी हरि[1] कहेंगे। कान्ति और सरस्वती कल ही त्रिवेंद्रम् गये। लीलावती मेरे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

९९

सेगांव वर्धा
१५-७-३६

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत आज मिला और जवाब बन्नूके साथ भेजता हूँ जिससे गुजराती प्रेममें चला जाय।

हिर्नीया ऑपरेशन जरूर हो सकेगा। उसका प्रबंध करूंगा। डाक्टरोंके नाम मालूम करके लिखूंगा।

---

1. हरिजन-सेवक-संघके मंत्री और प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यिक।
2. नासूरका ऑपरेशन।

सेगांव वर्धा
१५-७-३६

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमां)

तारो कागळ आज मळ्यो ने जवाब बन्नुनी साथे मोकलुं छुं जेथी मजाकनी ट्रेनमां पाम्यो जाय।

हिर्नीयानुं ऑपरेशन जरूर थई शके। तेनी तपास करीश। डाक्टरोनां नाम जाणीने लखीश।

मेरी नाराजीकी बात किसीसे सुनकर क्यों मान बैठती है? अपनी नाराजी क्या मैं नहीं बता सकता? ऐसी कैसी बेटी जो अपने बापके बारेमें दूसरेसे सुना हुआ माने?

अपनी हालतके पैसे मुझसे लेनेके लिए मने तुझे कहा नहीं है क्या? आनेके लिए तुझे पैसे मुझसे लेने हैं।

कान्तिकी एक चिट्ठी थी। वह मजेमें है। एक महीनेमें वापस आयगा।

नारू यहां किसीको दिखा है। देवदाससे पूछ।

तेरे खतके जवाब आ गये। ज्यादा लिखनेका समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

मारी नाराजीनी वात कोईनी पासेथी सांभळीने केम मानी बेसे छे? मारी नाराजी हुं न बतावुं? एवी कैवी बेटी के जे पोताना बापने विषे बीजानी पासेथी सांभळेलुं माने?

मने मे मारी हालत साथ पैसा मारी पासेथी लेवानुं नथी कह्युं? तारे आववाना माटे पैसा मारी पासेथी लेवाना छे।

कान्तिनी एक चिठ्ठी हती। ते सुखी छे। एक महिनामां पाछो आवशे।

नारण मारु त्यां कोईने देखाड्ये। देवदासने पूछजे।

तारा कागळना जवाब आवी गया। वधारे लखवानो समय नथी।

बापुना आशीर्वाद

सेगांव
२१–७–३६

चि० अमतुस्सलाम

मेरा खत मिला होगा। साथमें त्यागी और रामके लिए खत हैं। और भी एक खत विद्यार्थियोंके लिए है।

रामनरेश[1]के खत पर जो हकीकत हो वह लिखकर उसे मेरे पास लौटाना। मलकानीजीसे पूछना उसे क्यों मुक्त करना पड़ा।

बापूके आशीर्वाद

१ हरिजन आश्रम दिल्लीका विद्यार्थी।

सेगांव
२१–७–३६

चि० अमतुस्सलाम

मारो कागळ मळ्यो हशे। साथे त्यागी अने रामना कागळ छे। बीजो पण एक कागळ विद्यार्थीओ उपरनो छे।

रामनरेशना कागळ उपर जे हकीकत होय ते लखीने पाछो मोकलजे। मलकानीजीने पूछजे केम रजा आपवी पडी?

बापुना आशीर्वाद

सेवाग्राम वर्धा
१०-७-४१

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तेरे दो खत साथ हो गये हैं। मुझे तेरा ऑपरेशन यहां हो। देवदासकी मारफत जो हो सकेगा वह करूंगा। ब्रजकिशन[1] जब आयेंगे तब वे तो रहेंगे ही। मामला पत्र देवदासको देना।

रुक्मिणीका समझा। अब तो वे गई न? मम्मतानी सर्व हैदराबाद पहुंचा आवें वही ठीक होगा।

तेरा ऑपरेशन हो जानेके बाद तुझे बुलाऊंगा। इस बीच अपना शरीर ठीकसे संभालना। जो चाहिये सो मंगा लेना। देवदासको अगर तू सचमुच भाई मानती है तो उससे जो चाहिये वह निःसंकोच मांगना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ ब्रजकिशन चांदीवाला दिल्ली-निवासी रचनात्मक कार्यकर्ता और गांधीजीके भक्तेवासी।

सेवाग्राम वर्धा
१०-७-४१

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

तारा बे कागळो मळ्या बन्ना छे। तारुं ऑपरेशन मने त्यां थाय। देवदास मारफत ज थय ते करीश। ब्रजकिशन आवे त्यारे ते ना छ ज। मामला देवदासने देज।

रुक्मिणीनो समज्यो। हवे तो ते गया ना? मम्मतानी तेने हैदराबाद पहोंची आव [illegible] करजाय।

[illegible] ऑपरेशन थया [illegible] बोलावीश। दरम्यान तारुं शरीर बराबर [illegible] मंगावजे। देवदासने सगो भाई मानत [illegible] एनी पासेथी मागजे।

बापुना आशीर्वाद

१०२

[कांति गांधी श्री हरिलाल गांधीका लड़का जिसको मांके मरने पर पू. कस्तूरबाने ही पाला था और बेटेका प्रेम भी वे अपने इस पौते पर बरसाती थीं। वे बाहर जाते समय मुझे कांतिके खाने वगैराका खास खयाल रखनेको कह गई थीं जिसका पालन करनेका नतीजा यह हुआ कि मेरी सेवासे उसमें मेरे लिए माकी भावना पैदा हुई। वह मुझे अम्मा अम्मा कहने लगा। उस उमरमें जब मैं मा बनी भी नहीं थी अम्मा सुनकर मुझे शर्म आती थी। जब पू. बापूकी सेवा छोड़कर उसने पढ़नेका विचार किया तो पू. बापूने नीचे लिखा पत्र देकर कांतिको मेरे पास देहली भेजा था। मेरे दिल पर भी मूरताका गहरा असर हुआ कि बापू मुझसे आशा रखते हैं कि मैं कांतिको अम्माके नाते समझा सकूंगी। लेकिन जब बापू जैसी प्रेमभरी शक्ति उसे न रोक सकी तो मैं कहांसे रोक सकती थी? जितना मैं उसे समझाती थी उतना ही उसे मेरे लिए तिरस्कार पैदा होता था। मैं इस खयालसे कि भले वह मेरा तिरस्कार करे, लेकिन मैट्रिक करके भी पू. बापूकी सेवामें आ जावे तो ठीक बार बार उसे समझाने जाती जिससे काफी गैरसमझ पैदा हुई। लेकिन सांचको आंच नहीं। जैसे ही पढ़ाईका जमाना गुजर गया जमानेके बदलनेके साथ उसकी वो उमंग भी वो पूरी हो गई। कांतिके मनमें मेरे प्रति वही आदर और प्रेम फिरसे पैदा हो गया जो आज भी है। कान्ति उसकी पत्नी सरस्वती व उसके बच्चे वर्धामें मेरे भाई-भतीजोंसे बढ़के रिश्तेदारोंके मुताबिक मिलते रहते हैं। एक दुःख एक लालसा सदा मानिक दिलमें मैं पाती हूं कि कैसे भी पू. बापूके कामकी सेवा करके बापूकी आशाओंको वह पूरा कर सके। इसके लिए बम्बई जैसी जगहमें आज भी लोक-सेवक-संघ बनाकर यथाशक्ति डॉक्टरके नाते जो सेवा वह कर रहा है सो देखकर, सुनकर आनंद होता है।]

सेगांव वर्धा
२७-८-३९

चि. अमतुस्सलाम

अब तो कांति यहां पहुंचा है। देखता हूं अब तू क्या पराक्रम करती है? झगड़ना मत। मिठाससे जो समझाना हो वह समझाना। अब उसे रोका नहीं जा सकेगा ऐसा मुझे तो लगता है।

डॉ. भारद्वाज[1] जैसा कहें वैसा करना। सबको नसीहत देती है लेकिन तू अपने शरीरकी संभाल रखना। मुझसे अभी लंबे खतकी आशा न रखना।

बापूके आशीर्वाद

[1] देहलीमें नाकके उपचारक थे।

सेगांव वर्धा
२७-८-३९

चि. अमतुस्सलाम

हवे तो कान्ति त्यां आव्यो। जोउं छुं तुं शुं पराक्रम करे छे? झगड़ो न करजे। मीठाशथी समजाववानुं होय ते समजावजे। एने हवे रोकी नहीं शकाय एम मने तो लागे छे।

डॉ. भारद्वाज कहे तेम करजे। बधाने शिखामण आपे छे पण तुं तारा शरीरनी संभाळ राखजे। मारी पासेथी हमणां लांबा कागळनी आशा न राखजे।

बापुना आशीर्वाद

१०६

प्यारी बेटी

तेरे दो खत मिले हैं। डॉ॰ भारद्वाज जो कहते हैं उस पर विश्वास रखना है। डॉ॰ अनसारी भी यही करते। इसलिए तुझे नाक साफ करना है और दूसरी जो सिफारिशें उन्होंने की हैं उन्हें मानना है।

नीलम[1] का खत साथमें है। नीलमकी बीमारी अगर न होती तो तुझे जरूर बुला लेता। कांतिको तेरे दोनों खत दिखाऊंगा। वह आयेगा तो इत्तला दूंगा। उसने जो कदम उठाया है वह मुझे भी पसंद तो नहीं है। लेकिन उस पर मैं दबाव नहीं डालना चाहता।

अभी समय नहीं है इसलिए यहीं खतम करता हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ महिला-आश्रमकी बहन जो दिल्ली आकर बीमार पड़ गई थीं। महादेवी ताई और यह दोनों तीर्थयात्रासे आई थीं।

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमां)

तारा बे कागळ मळ्या छे। डा॰ भारद्वाज कहे छे तेनी उपर विश्वास राखवानो छे। डा॰ अनसारी पण तेम ज करत। एटले तारे नाक साफ करवानुं छे ने बीजी जे भलामणो तेम करी छे ते मानवानी छे।

नीलमनो कागळ साथे छे। नीलमनी मांदगी न हत तो तने जरूर बोलावी लेत। कांतिने तारा बन्ने कागळो बतावीश। ते आवशे तो खबर आपीश। मने पण तेनुं पगलुं पसंद तो नथी ज। पण हुं तेने दबाववा नथी मागतो।

हमणां वखत नथी एटले आटलेथी ज पतावुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

१०४

तार

२-९-३६

तबीयत सुधारनेके लिए इन्दौर, पतियाला, बम्बई, वर्धा जा सकती हो। कान्ति बम्बई वकीलके स्कूलमें भर्ती हुआ है। बा मैं देवदास जब फिकर नहीं करते तब तुम्हारा फिकर करना गलत है।

बापू

१०५

तार

३-९-३६

सरस्वती सोमवारको त्रिवेन्द्रम् जाती है। संभव हो तो पहले आ जाओ।

बापू

2 9-'36

You can go Indore Patiala, Bombay Wardha for improving health. Kanti joined Vakils School Bombay When Ba I Devdas do not worry It is wrong for you to worry

Bapu

3 9 '36

Sa ..w k k l dr m Monday Come bef t j ll

Bapu

[बापूजीको सेगांवमें मलेरिया हो गया था और उन्हें इलाजके लिए वर्धा अस्पतालमें जाना पड़ा था।]

वर्धा
७-९-३६

प्यारी बेटी

तीन दिनसे बुखार नहीं है इसलिए उस गया समझो। अस्पतालमें बिस्तरमें से यह लिख रहा हूं। कान्तिका खत इसके साथ है।

तू उसकी चिंता करती है सो ठीक नहीं है। बासे और मुझसे भी तेरा संबंध ज्यादा गहरा है? तेरे प्रेमका प्रमाण अधिक है? जरा समझ और शांत हो।

तेरी सेहत सुधरती नहीं यह ठीक नहीं है। मेरा तार मिला होगा। उसका जवाब नहीं है। कैसी निर्दय है तू!

वर्धा
७-९-३६

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमां)

त्रण दिवसथी बुखार नथी एटले तेने गयो गणीए। इस्पितालमां बिछानामां था लखी रह्यो छुं। कान्तिनो कागळ आ साथे छे।

तु तेनी चिन्ता करे छे ए बरोबर नथी। बाना करतां ने मारा करतां पण तारो संबंध वधारे ऊंडो? तारो प्रेम वधारे मापनो? जरा समज ने शांत था।

तारी तबियत नथी सुधरती ए ठीक नथी। मारो तार मळ्यो हशे। तेनो जवाब नथी। केवी निर्दय!

पूर्ण इलाज मोकली छेवटनो निर्णय कर।

वर्धा आवजावी करे छे ए तारी मूर्खाई सूचवे छे। पण मन कदी मानहु नथी। तु ज्यां तारी धाई सके त्यां जा।

बापुना आशीर्वाद

जिभे त्यां छे?

कान्तिके लिए तू पैसे दे और यह बात मैं उसे न कहूं यह मैं कैसे समझ सकता हूं? तूने तो तेरे साथ इसके बारेमें चर्चा करनकी मनाही की थी। उसे मैंने माना। कान्तिको मैंने जरूर फटकारा। तब कान्तिने लिखा कि तेरी मांग धर्मकी न थी। बाकी तो तू अपने आप दुःखी हुआ करेगी तो मैं क्या करूंगा?

ऑपरेशनका तो तय ही यह बताना।

सांताक्रूझ पो॰ ऑ॰ का खत मिला? अब तो उसकी शिकायत नहीं है न? जरा तो समानी बन। जरा तो हंस। तू अपने आप जो दुःखी होती है इसमें तू कुछ अपनी अच्छाई नहीं दिखाती।

बापूके आशीर्वाद

कान्तिने सारु पैसा आपे ने तेने न कहुं ए हुं केम समजुं? तें तो तारी साथे ते विषे चर्चा करवानी मनाई करी हती। एने में मान आप्युं। कान्तिने में ठपको जरूर आप्यो। त्यारे कान्तिए लख्युं तारी मागणी धर्मनी न हती। बाकी तुं हाथे करीने दुःखी थवा करश तो हुं शुं करीश?

ऑपरेशननुं छेवट नाम ते जणावजे।

सांताक्रूझ पो॰ ऑ॰ नो कागळ मळ्यो? हवे तो फरीयाद नथी? जरा तो डाही था। जरा तो हस। हाथे करीने दुःखी थाय छे एमां कंई तारुं डहापण नथी बतावती।

बापुना आशीर्वाद

[बापूने मुझे नाक और गलेके ऑपरेशनके लिए बम्बई भेजा था।]

सेगांव वर्धा
२१-९-३९

चि. अमतुस्सलाम

तू मूर्ख तो है ही पगली भी है। तेरे खतमें पागलपन भरा है। तेरे मन कोई अच्छे आदमी हैं ही नहीं। तेरा डॉ. गिल्डर[1]वाला खत मिला है। तेरा एक भी उर्दू खत उन्होंने खोला नहीं है पढ़ा भी नहीं है। पिछले खतमें कुछ जानने की नहीं था इसलिए वह मैंने

---

१ बम्बईके प्रसिद्ध पारसी डॉक्टर।

सेगांव वर्धा,
२५-९-३९

चि. अमतुस्सलाम

तु मूरख तो छे ज पण गांडी पण छो। तारा कागळमां गांडपण भर्यु छे। तारे मन कोई माणस सारा जणाता ज नथी। तारो डा. गिल्डरवाळो कागळ मळ्यो छे। तारो एक पण उर्दू कागळ तेमणे खोल्यो नथी। वांच्यो पण नथी। छेल्ला कागळमां कांई जाणवा जेवुं न हतुं तेथी मे ते महादेवने आपी समजाव्यो। मा-बापने पोताना मूरख छोकराओनी मूरखाई बतावबाना धरम खरो? मा-बापने एटलो धरम न होय?

डा. गिल्डरवाळा कागळनो जवाब में तुरत आप्यो हतो। तेमां लख्युं हतुं के डा. गिल्डरने बतावबानी जरूर पडशे ज तो ते करी लेजे। एक कागळ वालीस मारफते फिलोसोफिकल सोसा. मोकल्यो हतो ते मळ्यो? तारा एक पण कागळनो जवाब नथी लख्यो एम नथी बन्युं।

महादेवको पत्र सुनाया। माँ-बापको अपने मूर्ख बच्चोंकी मूर्खता दिमागमें धरना चाहिये? माँ-बापको इतनी भी छूट नहीं?

डॉ॰ गिल्डरवाले खतका जवाब मैंने तुरन्त दिया था। उसमें लिखा था कि डॉ॰ गिल्डरको दिखानेकी जरूरत पड़ेगी ही तो वह हो जायगा। एक खत बारी के पते पर थियोसॉफिकल लॉज भेजा था। वह मिला? तेरे एक भी खतका जवाब न लिखा हो ऐसा नहीं हुआ। लेकिन तुझे खत न मिलें तो मैं क्या करूँ? अगर तू कहे तो सर्टिफिकेट ऑफ पोस्टिंग लूँ। बेकार अपने आप क्यों दुःखी हुआ करती है?

मोहरा और दौलत की शादी आज दिल्लीमें है।

बिल्कुल आनन्दी रहेगी।

मुझे बराबर खत लिखती रहना। उर्दूमें ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

पण तने कागळो न मळे तेमां हुं शुं करुं? तुं कहे तो सर्टिफिकेट ऑफ पोस्टिंग मेळवुं। नकामी तारे हाथे दुःखी केम थया करे छे?

मोहरा-दौलतनी शादी आजे दिल्हीमां छे।

साव आनंदमां रहेजे।

मने बरोबर कागळ लख्या करजे। तु उर्दूमां ज लखजे।

बापुना आशीर्वाद

१ मेरे भाई।
२ डॉ॰ अनसारी (मरहूम) की लड़की।
३ उनके दामाद।

सेगांव वर्धा,
२१–९–३६

चि. अमतुस्सलाम

तेरा पेन्सिलसे लिखा हुआ खत मैं ही पढ़ गया। अभी तेरा तार मिला है। डॉ. शाह[1] के नाम खत भेजता हूँ। वे अगर वहाँ न हों तो उनका खत डॉ. जीवराज[2] को तू दिखा सकती है। और कोई जरूरत हो तो मुझे तार करना।

तू मूर्ख है। अपने आप दुःखी होती है। जान-बूझकर कामों पर थक जाती है। बुखारमें भाग जानेकी क्या जरूरत थी? चिट्ठी लिखकर

---

१ बम्बईके डॉक्टर।

२ डॉ. जीवराज मेहता बापूजीके मित्र डॉक्टर। आजकल गुजरात राज्यके मुख्यमंत्री हैं।

सेगांव वर्धा
२१–९–३६

चि. अमतुस्सलाम

तारो पेन्सिलथी लखाएलो कागळ हुं ज वांची गयो। हमणां तारो तार मळ्यो छे। डॉ. शाह उपर कागळ मोकलुं छुं। ते त्यां न होय तो एनो कागळ डॉ. जीवराजने बतावी शके छे। बीजी जरूर पडे तो मने तार करजे।

तुं मूरख छो। हाथे करीने दुःखी थाय छे। हाथे करीने कामकोनी उपर [illegible] तावमां भागी जवानी शी जरूर हती? चिट्ठी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन [illegible] लोग बहुत है।

[illegible]

[illegible] करवा चाहे छे?

[illegible] पर काम कोण छे?

बापुना दुआ

११२

सेगांव वर्धा
१-९-३९

चि. अमतुस्सलाम

तेरा खत तरंगोंसे भरा है। तू न भाइयोंका मानती है, न मेरा। झोंपड़ी कैसी? वहाँ क्यों जाना चाहिये? सेहत बम्बईमें ही सुधारनी चाहिये। भाईका घर सच्ची झोंपड़ी है। डॉ. शाह जो मेरे बगैर नहीं करते हु वह अगर पैसेसे करेंगे तो मुझे नीचा देखना होगा। उनको जो ठीक लगता है वह करते हैं ऐसा समझकर उनसे इलाज करवाना चाहिये। यही मेरी सलाह है। वे नाकका पूरा इलाज कर लें बादमें होमियोपैथीका इलाज कराना ही तो जरूर कराना।

तेरे उर्दू खत कहीं भी तो नहीं ही गये हैं। मैंने जवाब तो दिये ही हैं। महरुन्निसा यहींके बच्चोंके स्कूलमें पढ़ेगी। लाली पंचगनी हाईस्कूलमें गया है। अगर तू धीरज नहीं छोड़ेगी तब तो सब ठीक

सेगांव वर्धा
१०-९-३९

चि. अमतुस्सलाम

तारो कागळ तरंगोथी भर्यो छे। नथी मानती भाईओनुं, नथी मानती मारुं। झूंपडी शी? त्यां शाने जवुं? तबियत मुंबईमां ज सुधारवी जोईए। भाईनुं घर साची झूंपडी छे। डॉक्टर शाह जे मारा वगरपैसे करता ते पैसाथी करे तो मारे नीचुं जोवानुं थाय। तेने जे ठीक लागे छे ते करे छे एम समजी तेना उपचार कराववा एम मारी सलाह छे। ए नाकनुं पूरुं करे पछी होमियोपैथीनुं कराववुं होय तो जरूर कराव।

तारा उर्दू कागळ क्यांय तो नथी ज गया। में जवाब तो आप्या ज छे। मेहरुन्निसा त्यांनी बच्चोनी निशाळमां भणशे। लाली पंचगनी हाईस्कूलमां गयो। तुं धीरज नहीं छोडे तो तो बधुं ठीक ज थई रहेशे। तुं राजकोट जाय तो त्यांनी हवा सारी छे। बालकृष्ण हमणां त्यां गया छे। तेने ठीक लागे छे। तारो कागळ आखो वांची गयो छुं।

बापुना आशीर्वाद

हो जायगा। तू अगर राजकोट जाना चाहे तो वहांकी हवा अच्छी है। बालकृष्ण[1] आजकल वहां रहते हैं। उनको ठीक लगता है। तेरा खत मैं भूल पड़ गया हूं।

बापूके आशीर्वाद

११२

सेगांव वर्धा
२-१०-३९

चि अमतुस्सलाम

तेरा खत मिलते ही जवाब दे रहा हूं। साथमें बबूरेका भी खत है। उसमें तू मेरी सलाह देखेगी। जल्दी है इसलिए ज्यादा नहीं लिखता। तू विचारपूर्वक कदम उठायेगी तो अच्छा होगा। तुझे बहुतसे रोग हैं। नाकका इलाज तुरन्त करना ही चाहिये। नाकके बारेमें शाह जो कहें वह करना ठीक होगा। लेकिन तुझे होमियोपैथीका इलाज करना हो तो भी वही कर। अहमदाबादमें भी बहुत डॉक्टर हैं और राजकोटमें

[1] विनोबाके छोटे भाई बालकोबा।
[2] मेरा भतीजा।

सेगांव वर्धा
९-१ -३९

चि अमतुस्सलाम

तारो कागळ मळ्यो तेवो ज जवाब आपुं छुं। साथे बबुडनो पत्र छे। तेमांथी तु मारी सलाह जोजे। उतावळ छे एटले वधारे नथी लखतो। तु विचारपूर्वक पगलुं भरे तो सारुं। तने घणा रोग छे। नाकनु तुरत करवु ज जोईए। नाक विषे शाह कहे ते तेम करवुं सारु छे। पण जो तारे होमीयोपेथी करवु होय तो पण त्यां ज कर। अमदावादमां पण डाक्टरो पुष्कळ छे अने राजकोटमां पण छे तो खरा। जो वर्धा तने न ज गमे तो मारी नजर तो राजकोट पर पडे छे। त्यां तु सुखी थईश। तारु मन शांत रहेशे। तने कई रीते शांति मळे ए ज मने पसंद छे।

बापुना आशीर्वाद

भी है। अगर वर्धा तुझे नहीं ही पसंद आये तो मेरी नजर तो राजकोट पर जाती है। वहां तू सुखी होगी। तेरा मन शांत रहेगा। तुझे किस तरह शांति और सुख दूं यही (विचार) मुझे सताता है।

बापूके आशीर्वाद

११४

चि. अमतुस्सलाम

मैं क्या करूं? मुझे हरिलालके बारेमें कुछ भी याद नहीं है। तू साफ बात क्यों न लिखे?

(१) हरिलालसे तू मिल। रामदास[1] या किसीको साथ ले जा सकती है। तुझे कोई नहीं रोकेगा ऐसी आशा रखता हूं। हरिलालके परिवर्तनकी मेरे पास कोई कीमत नहीं है।

हरिलालभाई जब मुसलमान हुए तब उनसे मिलकर उन्हें कुछ समझानेकी बात थी। मैं उनसे मिलने गई। लेकिन कुछ हासिल न हुआ। उस परिवर्तनका धर्मसे कोई ताल्लुक नहीं था।

[1] गांधीजीके तृतीय पुत्र।

चि. अमतुस्सलाम

हुं शुं करूं? मने हरिलाल बाबत कंई याद नथी। तूं चोखवट केम न लखे?

(१) हरिलालने तुं मळ। रामदास के गमे तेने साथे लई जई शके छे। तने कोई नहीं रोके एवी आशा राखुं छुं। हरिलालना फेरफारनी मारी पास किंमत नथी।

(२) कान्ति तने मळवा आव्यो हशे। मारी मनाई—तुं बराबर छो—हजी समजती नथी पण कान्ति पोते तने मळवा मागतो नथी। कान्ति तारी साथे रखीलीमां उतरवा नथी मागतो। छतां तुं मळवा मागे एनो शो अर्थ छे? कान्तिनुं मनुं इन्दुने हाथ था।

(३) तारी तबियत मारी पासे रहीने सारी करी शकुं तो आज तने बोलावुं। पण मने एवो विश्वास ज नथी।

बापुना आशीर्वाद

(२) कान्ति तुमसे मिलने आया होगा। मेरी मनाही तू खराब है ऐसी समझसे नहीं है। लेकिन कान्ति खुद तुमसे मिलना नहीं चाहता। फिर भी तू मिलना चाहती है इसका क्या अर्थ है? कान्तिका भला चाहकर तू शांत हो।

(३) तेरी तबीयत मेरे पास तुझे रखकर अगर अच्छी कर सकूं तो आज तुझे बुला लूं। लेकिन मुझे ऐसा विश्वास ही नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

११५

सेगांव वर्धा
१-१०-३६

चि. अमतुस्सलाम

कल तो बहुत जल्दीमें खत लिखा। आज भी जल्दी तो है ही। मेरे सामने नाणावटी बुखारसे खटियामें पड़े हैं। उनको गीली चद्दरमें लपेटा है। तबीयत अच्छी करनेके लिए त्रिवेंद्रम् जानेको मेरी संमति नहीं मिलती। वहांकी हवा अच्छी नहीं मानी जाती। वहांकी खुराक भी तेरे लिये ठीक नहीं है। वहां तुरन्त कुशल डॉक्टर भी नहीं मिलते।

भा. अमृतलाल नाणावटीको टाइफॉइड हुआ था।

सेगांव वर्धा
१-१-३६

है। उसके पास एक मिनट भी नहीं है। मैंने तुझे साफ कहा था कि कान्ति चाहे तभी तू उससे मिल सकती है। मैंने कान्तिको तुमसे मिलनेकी मनाही की है। और तुझे भी कान्तिसे मिलनेकी मनाही है। कान्तिका तो जो होनेवाला होगा सो होगा। उसकी फिकर तू मत कर। तू अभी हो जा।

मुझे लिखना कि तू उससे अब नहीं मिलेगी। उसे कुछ लिखना हो तो मुझे लिख। मेरा कलका पत्र मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

११७

सेगांव वर्धा,
११-१०-३९

चि. अमतुस्सलाम

मेरा काम ठीकसे चल गया है। अपने मिशनमें पूरा रहना। बम्बई नहीं छोड़ना। मेरी जो मदद चाहिये सो मांग लेना। तुम एक और तबीयत अच्छी कर लो। तबीयत अच्छी करके धर्म ही है। [illegible] मैं पाखाना तो हूं हरिजन हूं। मेरे साथ हरिजन ही हैं [illegible] है। [illegible] तू सेवा करना। अब तो ठीक है? [illegible] बीमार पड़ी तो फिर बम्बई जाना पड़ेगा। [illegible] अपने कुछ इलाज करा लेना। [illegible] मिला होगा। उस पर राजी [illegible] में भी राजी खुशी होंगे। [illegible] याद करती तो तू आ जाती।

सेगांव वर्धा
११-१ -३९

है वह जरूर मिल जाता। अभी भी ऐसा ही कर। मुझे भूल, कान्तिको भूल, सरस्वतीको भूल। केवल ईश्वरका ध्यान कर। इसका यह अर्थ नहीं कि तू मुझे छोड़ दे या मैं तुझे छोड़ दूँ। लेकिन इसका यह अर्थ तो है ही कि मेरे बारेमें तेरा जो कुछ विशेष खयाल है उसे छोड़कर तू सिर्फ खुदाका ही आसरा ले। ऐसा करेगी तो तू जरूर सुखी होगी और शान्त होगी।

खुदाको याद करके रोनेमें तो अर्थ है। मनुष्यको याद करके रोनेसे आँख बिगड़ती है और कुछ नहीं मिलता। अगर मेरा माने तो वहीं धीरजसे पड़ी रह।

बबूलसे कहना। अब उसे अलग नहीं लिखता। यह भी रातको आठके बाद लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

तेमो मळ्या करे छ। पेन मरीने तु सेवा करजे। पछी शुं? पण याद राखजे के मारी पडशे तो पाछु मुबई जवु पडशे। तारे हाथे मारी पडे छ। मन तुरत तुरत करावी लेज।

कान्तिनी बाबत मारी कामठ कागळो मळ्यो हुवे। एनो पनी सुजीपी अमल करशे तो तुं हु ने कान्ति सुखी थईशुं।

मन याद करता करता खुदाने याद करश तो तुं जे इच्छ छ ते जरूर मळी रहेश। हमणां पण एम ज कर। मन भूल कान्तिने भूल सरस्वतीने भूल। केवळ ईश्वरनुं ज ध्यान धर। आनो अर्थ एवो नथी के तु मने छोड अथवा हु तने छोडु। पण एनो अर्थ ए तो छे ज के मारे विषे तमारे पकडु मानी लि छ ते छोडी मात्र खुदा उपर ज आधार राख। आम करश तो तु जरूर सुखी थईश ने शान्त थईश।

खुदाने याद करीने रोवामां अर्थ छ। मनुष्यने याद करी रोवामां आंख बगडे ए सिवाय कंई न मळे। जो मारुं मानती होय तो त्यां ज धीरजथी पडी रहेज।

बबुलने कहेज। हवे तेने जोदा कागळ लखतो नथी। आ पण रातना आठ वाग्या पछी लखी रह्यो छ।

बापुना आशीर्वाद

[बापूको मैं अपने और भगवानके बीच अपना [illegible] मानती थी। अगर बापूके पास नहीं रहना हो तो मैं किसी धार्मिक स्थानमें चली जाऊं ताकि आध्यात्मिक सहारा मिले। इस समयसे मैंने मक्का शरीफ जानेके बारेमें बापूको लिखा था।]

११-१०-४१

चि० अमतुस्सलाम

तेरे खत मिले हैं। लेकिन मुझे बीमारोंकी तीमारदारीमें से एक मिनटकी भी फुरसत नहीं मिलती। नानावटी और मीराबहन[1]को टाइफॉइडका बुखार है। उनके पास दिन-रात किसीको बैठना पड़ता है। शायद ही किसीको खत लिख सकता हूं। अगर तुझे सब सुविधा मिले और तेरा शरीर जाने लायक हो तो जरूर मक्का शरीफ जा।

[1] मीराबहनका असली नाम मिस स्लेड है। इंग्लैंडके जहाजी सेना अफसरकी लड़की है। वे अपने परिवारको छोड़कर बापूजीके पास आई थी।

११-१०-४१

चि० अमतुस्सलाम

तारा कागळ मळ्या छे। पण मने दरदीओनी चाकरीमांथी एक मिनिटनी पण फुरसद नथी मळती। टाईफोईडथी नानावटी ने मीराबहेन पीडाय छे। तेओनी पासे रात ने दिवस कोईए बेसवुं पडे छे। भाग्ये कोईने कागळ लखी शकुं छुं। तने बधी सगवड मळे तो ने शरीर जवा जेवुं थाय तो जरूर मक्का शरीफ जा।

[illegible] करना माफ करे तो मारे कहुं [illegible]।
[illegible]। [illegible] ना शीखु नथी। [illegible] पण नथी।
[illegible] कागळ आ साथ छे। [illegible]
[illegible] छे।
[illegible]।

बापुना आशीर्वाद

तू अपना शरीर किसी भी तरह अच्छा करे तो बड़ा काम होगा। मुझे तो ठीक ही है। वजन तो किया नहीं। साधन भी नहीं है।

डॉ. जीवराजके लिए खत इसके साथ है। डॉ. मिस्त्रीके बारेमें भी लिखता हूं।

फिलहाल ज्यादा बातकी माथा छोड़ देना।

बापूके आशीर्वाद

११९

सेगांव वर्धा
२१-१ -३९

चि. अमतुस्सलाम

तेरा खत अभी मिला। कान्तिके कुशल समाचारका पत्र परसों शायद (गांधी-जयन्ती) का था। इसमें क्या भेजना था? उसे फुरसत नहीं रहती इसलिए मैं उसे तकलीफ देना नहीं चाहता।

तू अस्पतालमें गई सो अच्छा हुआ। खुरशेदबहनको मैंने लिखा था। उसे मदद करेगी तो मुझे अच्छा ही लगेगा।

---

१ दादाभाई नौरोजीकी पोती।

सेगांव वर्धा
२१-१०-३९

चि. अमतुस्सलाम

तारो कागळ हमणां ज मळ्यो। कान्तिनो कुशळ खबरनो कागळ रेंटिया बारसनो हतो। एमां शुं मोकलुं? एने फुरसद नथी होती एटले हुं एने तकलीफ नथी देतो।

तुं इस्पितालमां गई ए सारुं थयुं। खुरशेदबहेनने लख्युं हतुं। एने मदद करे तो मने गमे ज।

हुं पोते तो साजो नथी थयो। तीर्थस्थानोमां गंदकी खूब होय छे। मारा शरीरे सर्व आवनार यात्राने मोकलुं छुं। एवी त्यां सर्वे मारा

मैं खुद तो यात्रा नहीं करता। तीर्थस्थानोंमें बहुत पाखंड चलता है। मक्का शरीफ हो आनेवाले बहुतोंको मैं जानता हूं। वे वहां जाकर अच्छे बन आये ऐसा मैंने नहीं पाया। लेकिन तुझे श्रद्धा है इसलिए कैसे तुझे रोकूं? तू खुशीसे जा और ज्यादा दृढ़ तन्दुरुस्त और निर्मोह (बगैर मोहकी) होकर आ। इससे ज्यादा क्या कहूं?

मैं आज काशी जाता हूं। वहां दो दिन रहूंगा और बादमें राजकोट कुछ घटे। १०को अहमदाबाद[1] पहुंचूंगा। बीमारोंको अब बुखार नहीं है। तू जल्दी अच्छी हो जा।

बापूके आशीर्वाद

भाई आत्रा एम म मबा नाई लक्षी। पण तने श्रद्धा छे एटले तने हुं केम रा[illegible] न खुशीथी जा ने वधारे मजबूत तन्दुरस्त अने निर्मोह (मोह विनानी) थईने आव। आथी वधारे शुं कहुं?

आज काशी जाउं छुं। त्यां बे दिवस ने पछी राजकोट थोडा [illegible] म अमदावाद पहोंचश छु। दरदीओने हवे ताव नथी। तुं [illegible] थई जा।

बापुना आशीर्वाद

तो बीरोंके सुखमें हिस्सा ले सकेगी। अच्छी नहीं होगी तो बीरोंको दुखी करेगी।

बा यहां हो जायेगी। चिट्ठीमें सबके अच्छे होनेके समाचार हैं। मनु[1] यहां है।

बापूके आशीर्वाद

१२१

सेगांव, वर्धा,
७-११-३९

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

भाई बारीके जरिये या और किसी तरह उर्दू तरजुमेवाला कुरान-शरीफ मुझे जल्दीसे जल्दी भेज देना। दूसरा तुरन्त न मिले तो तेरे पास जो तरजुमावाला है सो भेजना।

अब तेरी तबीयत अच्छी होगी। नानाभाई आज बम्बई जाते हैं।

बा यहां आ गई होगी। तुझे उसके पास जाना नहीं है। बाको लिखा है कि वह तुमसे मिल ले।

बापूके आशीर्वाद

---

[1] गांधीजीके ज्येष्ठ पुत्र हरिलाल गांधीकी छोटी लड़की। कान्ति गांधीकी बहन।

सेगांव, वर्धा
७-११-३९

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमां)

भाई बारीनी मारफते के बीजी रीते कुरानेशरीफ उर्दू तरजमा-वाळू मने बनती त्वराए मोकली देजे। बीजुं तुरत हाथ न आवे तो तारा पास तरजमावाळुं छे ते मोकलजे।

हवे तने सारु हशे। नानाभाई आजे मुंबई जाय छे।

बा त्यां आवी गई हशे। तारे तेनी पास जवानुं नथी। बाने लख्युं छे के तने मळी जाय।

बापुना आशीर्वाद

१२२

सेगांव वर्धा
२२-११-३९

चि अमतुस्सलाम

तेरे दो खत मेरे पास पड़े हैं। मुझे तो दिवाली होली समान लगती है। जब हमारे सामने ही आग जल रही हो तब दिवाली मनाना पाप लगता है।

भाइयोंका झगड़ा मिटाया इसके लिए तू जरूर शाबाशीके काबिल है। तेरा बम्बईका चक्कर तो इतनेसे ही सफल हुआ मानता हूं। डॉक्टरोंसे मिलना हुआ यह भी ठीक ही हुआ। बाकी सेवा करे उसम भी शक क्या है? बच्चोंकी सेवामें काम होगा। यह भी बड़ी सेवाका अंग बन सकता है।

सेगांव वर्धा
२२-११-३९

चि अमतुस्सलाम

तारा बे कागळ मारी पास पड्या छे। मने तो दीवाळी होळी समान लागे छे। ज्यारे आपणी सामे ज आग बळी रहेल होय त्यारे दीवाळी उजववी पाप लागे छे।

भाईओनो झगडो पताव्यो एने माटे तने जरूर शाबाशी घटे छे। तारो मुंबईनो आंटो तो एटलेथी ज सफळ थयो मानुं छुं। डाक्टरोने मळायुं ए पण ठीक ज थयुं। बाकी सेवा करे एमां य शुं खोटुं छे? हवेनी सेवामां काम हशे। ए पण मोटी सेवानुं अंग बनी शके छे।

निवेदनम् जईने सारी थती होय तो जरूर जा। त्यांनी हवा माफक आवे तो सारी थई पण जाय। रामचन्द्रननी परवानगी आवे त्यारे ज जवाय। मन तो शरीर बगाडे नहि। पण प्रेम तने ठीक लागे तेम करजे। सारी ठीक थता हशे।

बापुना आशीर्वाद

त्रिवेन्द्रम् जानेसे अच्छी हो सकती हो तो जरूर जा। वहाँकी हवा तुझे माफिक आये तो अच्छी हो भी जाय। रामचन्द्रन्[1] की इजाजत मिलने पर ही जा सकती है। मुझे तो इन्दौर ज्यादा पसन्द है। लेकिन तुझे जो ठीक लगे सो कर। सारे अच्छे हो रहे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

१२३

सेवाग्राम वर्धा,
२१-११-३९

चि. अमतुस्सलाम

तेरा लम्बा खत मिला। भाईकी तबीयतके बारेमें बहुत दुःखी हूँ। वे क्यों बीमार रहते हैं? साहब और दूसरे सब तथा कुरान-शरीफ पहुँचे हैं। तुम क्यों गये? इतने ज्यादा पैसे हों तो मुझे क्यों नहीं भेज देती?

दोनों भाइयोंका झगड़ा तू मिटा सके तब तो बहुत अच्छा है। मेहनत करना। ईश्वर तुझे मदद करे।

१. डा. रामचन्द्रन् केरलके प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ता। गांधी स्मारक निधिके मंत्री रहे। मदुराके पास गांधीग्राम संस्थाके संचालक।

सेवाग्राम वर्धा,
२१-११-३९

चि. अमतुस्सलाम

[illegible] भाईकी तबीयतके बारेमें बहुत दुःखी [illegible] बीमार [illegible] साहब और दूसरे सब तथा कुरान [illegible] इतने ज्यादा पैसे हों [illegible]

[illegible] मदद करे। [illegible]

[illegible]

तू कैसी बेवकूफ है! कान्तिको लिखनेकी और मिलनेकी मनाही करनेमें तू खराब है ऐसा किसने कहा? इधर मैंने कान्तिको लिखा नहीं है और उसका खत भी नहीं है। दिवालीको तो मैं पहचानता ही नहीं। बम्बईमें जब होली चल रही है तब दिवाली कैसी? मुझे तो त्योहार भाते ही नहीं हैं। त्योहारके लायक हम हैं कहां?

तेरे बारेमें मेरा यह विचार है। तू वहां रहकर तबीयत सुधार ले और फिर यहां मेरे पास आ जा। तेरी दवा और कहां हो सकती है? बंगलोर जानेको तैयार हो तो वहांका बंदोबस्त कर सकता हूं। वहां डॉक्टरकी मदद तो मिल ही सकती है। लेकिन बम्बईकी सुविधा कहीं भी नहीं मिलेगी। रमजान रखनेकी बात न कर। चंगी हो जा फिर भरपूर रोजा रखना। अगर तू अच्छी हो गई होती तो मैं तुझे सेगांवमें रोजा रखने देता। अगर तू अपनी तबीयत दीनशा[1] को दिखाना चाहे तो खत भेजूं।

तरफथी कागळ पण नथी। दीवाळीने हुं तो ओळखतो ज नथी। मुंबईमां होळी चाली रही छे त्यां दीवाळी शी? मने तो तहेवारो गमता ज नथी। तहेवारने लायकना आपणे क्यां छीए?

तारे विषे मारो विचार आ रह्यो। तारे त्यां रही तबियत सुधारी लेवी ने पछी मारी पासे आववुं। तारी दवा बीजे क्यां थाय? बेंगलोर जवा तैयार होय तो त्यांनो बंदोबस्त करी शकुं खरो। त्यां दाक्तरनी मदद तो मळी ज शके। पण मुंबईनी सगवड क्यांय न मळे। रमजान राखवानी वात न करजी। साजी था पछी पेट भरीने रोजा राखजे। तुं साजी थई गई हत तो तने सेगांवमां रोजा राखवा देत। तुं तारी तबियत दीनशाने देखाडवा मागे तो कागळ मोकलुं।

मरघा खरीदवानो विचार कर्यो छुं ने छोडयो छुं?

मने लागे छे हवे बधा तारा सवालोनो जवाब अपाई गयो।

बापुना आशीर्वाद

१ डॉ. दीनशा मेहता पूना और बम्बईमें कुदरती इलाजका आरोग्य-मंदिर चलाते हैं।

मक्का शरीफ जानेका विचार किया गया और छोड़ा गया।
मुझे लगता है कि अब तेरे सब सवालोंका जवाब दे दिया गया है।

बापूके आशीर्वाद

१२४

४-१२-३९

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। तुमको कैसे खुश करूं? मैंने तुमको कह दिया है कि अच्छी हो जाने पर मेरे पास आ सकती हो। जो सेवा कर पा सकती हो ऐसी मैं आजकी हालतमें तुम्हारे लिए पैदा नहीं कर सकता हूं। यही कारण है कि मैं तुमसे कह रहा हूं कि इस वक्त तुम्हारा मेरे पास आना शायद अच्छा नहीं होगा।

मेरा खुलासा यानी बापूकी राय मिली ही थी कि मक्का शरीफ जानेवाले सब लोग अच्छे होकर ही वहांसे आते हैं ऐसा नहीं है। दूसरे, वहां जानेके लिए इंजेक्शन लेना पड़ता था जो जानवरोंके शरीरमें बनाया जाता था। यह मुझे पसन्द नहीं था। और बिना इंजेक्शन लिए वहां जानेकी इजाजत नहीं मिली। इस कारणसे मैंने मक्का जानेका विचार छोड़ दिया।

४-१२-३९

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। तुमको कैसे खुश करूं? मैंने तुमको कह दिया है कि अच्छी हो जाने पर मेरे पास आ सकती हो। जो [illegible] पा सकती हो ऐसा मैं आजकी हालतमें तुम्हारे [illegible] नहीं कर सकता हूं। यही कारण है कि मैं तुमसे कह [illegible] इस वक्त तुम्हारा मेरे पास आना शायद अच्छा नहीं [illegible]

५-१२-३९

[illegible] यही कारण अच्छी तरहसे [illegible]
[illegible] सीधा बात करें पू

,

५-१२-४६

इतना लिखते लिखते थकान लगी। यहां बात रुका क्योंकि मिलनेवाले आ गये। तू अपने-आप दुःखी होती है। सीधी बात करता हूं उसे भी तू उलटी समझती है। मेरा जीवन बदला है यह तू देखती नहीं है। मैं आश्रम बनाकर नहीं बैठा हूं। इसलिए चाहूं उतनोंको रख नहीं सकता। तुझे बुलाकर तेरी चाकरी न करूं यह कैसे हो सकता है? तू तो कहेगी कि मुझे चाकरी नहीं चाहिये। यह मुझसे कैसे सहा जाय? किसी भी बीमारको मैं यहां नहीं रखता। जो हैं उनसे भी बात कर ली है कि जो बीमार पड़ें वे वर्धा (अस्पतालमें) जायें या अपने गांव जायें। ऐसी स्थितिमें मैं तुझे क्या करूं? चंगी हो जा और आ। ऐसा न करे तो तू कहे वहां तुझे चंगी होनेके लिए भेज दूं। इसीलिए तो बंगलौर भेजनेका लिखा। तू बीमार भी अपने-आप पड़ती है। कान्तिको तेरे पास भेजा उसका अर्थ भी तू नहीं समझती।

बापूके आशीर्वाद

ते पण आडी समजे छे। मारुं जीवन फर्युं छे ए जोती नथी। हुं आश्रम राखी बेठो नथी। एटले मारी मरजीमां आवे तेटलाने नथी राखी शकतो। तने बोलावीने तारी चाकरी न करूं ए केम चाले? तुं तो कहे मारे चाकरी न जोईए। ए माराथी केम सहन थाय? कोई पण मांदाने अहीं हुं नथी राखतो। जेओ छे तेमनी साथे पण वात करी छे के तेओ मांदा पडे तो वर्धा जाय के पोताने गाम जाय। आवी स्थितिमां तने हुं शुं करूं? साजी थई जा ने आव। एम न करे तो हुं तने तुं कहे त्यां साजी थवा सारु मोकलुं। तेथी तो बंगलोर मोकलवानुं लख्युं। तुं मांदी पण तारी मेळे पडे छे। कान्तिने तारी पासे मोकल्यो तेनो अर्थ पण नथी समजती।

बापुना आशीर्वाद

सेगांव, वर्धा
१२-१२-३९

चि॰ अमतुस्सलाम

तेरा खत मीठा लगता है। तू पगली है इसमें कोई शक नहीं। तू जितनी पगली है उतनी ही वहमी है। कान्तिके बारेमें मैंने जो खत लिखा उसका कैसा उलटा अर्थ कर डाला और फिर परेशान हुई? तेरी मदद करना भी मुश्किल हो जाता है। तुझे न तो कोई हिन्दू दुतकारता है न मुसलमान। दोनों तुझे चाहते हैं। ठक्कर बापाको देख, मुसलमानोंको देख, नारणदास, प्रभावती[1] या मीरा बहनको

[1] श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी।

सेगांव, वर्धा
१२-१२-३९

चि॰ अमतुस्सलाम

तारो कागळ मीठो लागे छे। तुं गांडी छो एमां शक नथी। जेटली गांडी छो एटली ज वहेमी छो। कान्ति विषे में जे कागळ लख्यो तेनो केवो ऊलटो अर्थ करी नाख्यो छे ने पछी हेरान थई छो? तने मदद करवानुं काम पण मुश्केल थई पडे छे। तने नथी कोई हिन्दु तरछोडता नथी मुसलमान तरछोडता। बन्ने तने चाहे छे। तारा भाईओ तने चाहे छे। जो ठक्करबापा, जो मुसलमानो, नारणदास, प्रभावती, वा मीरा बहेन इ.। कान्तिनी तो तुं अम्मा थई छो। तारा विना कान्ति जीवी नहोतो शकतो। हवे ए मोटो एवो नथी पण कान्ति हजु तने पूजे तो छे ज। वा अमतुस्सलाम तारे शाने दुःखी थवुं? खानसाहेब तो तारी प्रशंसा करे छे। ए तो आशा राखता हता के तुं रमजान तेमनी साथे करशे। तारी माजी तने पूजे छे। तारा

बगैरा बगैराको देख। कान्तिकी तो तू अम्मा बन गई है। तेरे बिना कान्ति भी नहीं सकता था। अब वह मोह उसे नहीं रहा लेकिन कान्ति अब भी तुझे पूजता तो है ही। डॉ॰ अनसारीने तेरे लिए क्या क्या नहीं किया? खानसाहब तो तेरे लिए तरसते हैं। वे तो आशा करते थे कि तू रमजान उनके साथ करेगी। तेरी भाभी तुझे पूजती है। तेरे भाई तुझे प्यार करते हैं। इससे ज्यादा तू क्या चाहती है? तेरे जैसे नसीब कम लोगोंके होते हैं। कुरशेदबहन जैसी तेरी खुशामद करती है। मैडम वाडिया[1] तेरी मदद करनेको उत्सुक है। जाग कर देखेगी तो मालूम पड़ेगा कि तू पगली है इसीलिए दुखी होती है।

म यहाँसे १९ को निकलनेवाला हूं। उससे पहले तुझे मिल जाना हो तो मिल जा। लेकिन मिलकर तू क्या करेगी? तुझे यहाँ इलाज करवाना हो तो जरूर करा दूं। तो फिर तुझे भागना नहीं है। म कहूं वैसे रहना कहूं सो खाना कहूं सो करना।

बापूकी दुआ

भाईओ प्यार करे छे। आथी वधारे तू (तुं) इच्छे छे? तारा जेवा नसीब थोडाना ज होय छे। कुरशेदबहेन जेवी तारी खुशामत करे छे। मैडम वाडिया तने मदद करवा उत्सुक छे। तु जागीने जोश तो मालम पडे के तुं गांडी छो तेथी ज दुखी थाय छे। हुं अहींथी १९ मीए निकळवानो छुं ते पहेला तारे मळी जवु होय तो मळी जा। पण मळीने शु करीश? तारे दवा अहीं कराववी होय तो जरूर हुं करावी दउं। तो पछी तारे भागभाग करवानी नथी। हुं कहुं तेम रहेजे, कहुं ते खाजे, कहुं ते करजे।

बापुनी दुआ

[1] मैडम सोफिया वाडिया पी॰ ई॰ एन॰ की भारतकी प्रतिनिधि बम्बई।

सेगांव वर्धा,
१८-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तेरा तार मिला। फैजपुर आनेका यह कैसा आग्रह? सेगांवमें मिलने आ और वहां बात कर। पसन्द आवे तो रहना। मैंने सेगांवमें तुझे रहनेको कहा है फिर क्यों जबरदस्ती है? फिर भी तुझे फैजपुर ही आना हो तो आ जाना। मैं सेगांव २९ को पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

बापुके आशीर्वाद

वहां कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन था।

सेगांव वर्धा,
१८-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तारो तार मळ्यो। फैजपुर ज आववानो शो आग्रह? सेगांवमां मळवा आव ने त्यां वात कर। पसन्द पडे तो रहेजे। में सेगांवमां तने रहेवानुं कह्युं पछी केम पकडाय? आम छतां तारे फैजपुर ज आववुं होय तो आवजे। हुं सेगांव २९ मीए पहोंचवानी आशा राखुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

तिलक नगर (फैजपुर)
२४-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। तेरे किन प्रश्नोंका जवाब दूं? शान्ति अब तक यहां आया ही नहीं है। कब आयेगा यह भी मालूम नहीं। पूना अपने किसी मित्रसे मिलने गया है। तू सेगांव जाना। मशविरा करना। रहेगी तो उपचार करूंगा-कराऊंगा। तेरे मनकी शांतिके लिए भी तू आ जाय यह ठीक है। तेरी उंगलीका अभी तक तू कुछ लिखती नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

तिलक नगर (फैजपुर)
२४-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तारो कागळ मळ्यो। तारा क्या प्रश्नोना जवाब आपुं? शान्ति हजु अहीं आव्यो ज नथी। क्यारे आवशे ए पण खबर नथी। पूना तेना कोई मित्रने मळवा गयो छे। तुं सेगांव आवजे। मसलत करजे। रहीश तो उपचार करीश करावीश। तारा मननी शांतिने खातर पण आवी जाय ए बरोबर छे। तारी [आंगळीनुं हजु कंई लखती नथी।

बापुना आशीर्वाद

१२९

तिलक नगर
२७–१२–३६

चि अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। मैं १ तारीखको त्रावणकोर जाऊंगा। शान्ति परसों आया। कल रात उससे तीन मिनट तक बात हुई। तू तीन तारीखको मद्रास आ जाना।

बहुत जल्दी है।

बापूके आशीर्वाद

—

तिलक नगर,
२७–१२–३६

चि अमतुस्सलाम

तारो कागळ मळ्यो। मारे त्रावणकोर जवानुं १ मीए छे। शान्ति परम दिवसे आव्यो। काले रात्रे त्रण मिनिट वात थई। तारे त्रीजी तारीखे मद्रास आवी जवुं।

बहु उतावळ छे।

बापुना आशीर्वाद

१३०

तिलक नगर
२८-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तुझे खत लिखनेके बाद मौन लेनेसे पहले कल रातको कान्तिसे थोडी ज्यादा बात हुई। उसकी तबीयत खराब नहीं कही जा सकती। तू उसके लिए दुआ माग। परन्तु उससे मिलने जैसी बात भूल था। तुझसे जो मिलना था सो उसे मिल गया।

तू तीनके बजाय पहली तारीखको सेगांव आ सकती है। तारीख महादेवको लिखना जिससे गाडी स्टेशनसे तुझे सीधी सेगांव ले जा सके। मगनवाडीमें कुमारप्पासे मिलकर आना हो तो वैसा करना। मेरे साथ तू त्रावणकोर नहीं आ सकेगी। भविष्यका विचार सेगांवमें करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

बापू त्रावणकोर जानेवाले थे।

तिलक नगर,
२८-१२-३६

चि अमतुस्सलाम

तने कागळ लख्या पछी मौन लेता पहेलां काले रात्रे कान्ति साथे थोडी वधारे वात थई। तेनी तबियत खराब न कहेवाय। तुं तेने माटे दुआ माग। पण तेने मळवा जि नू भूली था। तारी पासेथी मळवानु हतु ते मळी गयु।

तु त्रीजीने बदले पहेली तारीखे सेगांव आवी शके छे। तारीख महादेवने लखजे एटले स्टेशन उपरथी तने गाडी परबारी सेगांव लई जाय। मगनवाडीमा कुमारप्पाने मळीने आववु होय तो तेम करजे। मारी साथे त्रावणकोर न अवाय। भविष्यनो विचार सेगांवमां करशुं।

बापुना आशीर्वाद

१२१

सेगांव वर्धा
२५-१-३७

चि अमतुस्सलाम

मेरी यात्राके कारण तूने नहीं लिखा होगा। हम कल लौटे। तेरी हालत लिखना। आना हो तब आ जाना। संकोच न रखना। मैडम वाडियाका खत मिला है। पहुंच लिखती हैं। प्रभा साथमें है। सरस्वती आनन्दमें है।

बापूके आशीर्वाद

त्रावणकोरकी यात्रासे।

सेगांव वर्धा
२५-१-३७

चि अमतुस्सलाम

मारी यात्राने लीधे तें नहीं लख्युं होय। अमे काले पाछा फर्या। तारी हालत लखजे। आववुं होय त्यारे आवी जजे। संकोच न राखी। मेडम वाडियानो कागळ मळ्यो छे। पहोंच लखे छे। प्रभा साथे छे। सरस्वती मजा करे छे।

बापुना आशीर्वाद

१५२

११-१-१

चि अमतुस्सलाम

दाहिने हाथसे लिखना संभव नहीं है। इसलिए थोड़ा
लिखूंगा। रास्तेमें लिखनेका समय ही कहांसे मिलता?

तू एक्सप्रेस खत क्यों भेजती है?

इतने बड़े खतके मानी कुछ नहीं है। खत लिखना कब सीखेगी

सेवाग्राम जानेका शायद अप्रैलके बीचमें होगा। जो हो। मे
तो सलाह है कि तू यहां आ और जो कहना हो सो कह। य
भाइयोंका कुछ करना न हो तो जरूर आ जा।

बापूके आशीर्वा

गांधी-सेवा-संघके सम्मेलनके लिए।

११-१-१

चि अ सलाम

जमणे हाथे लखाय एम नथी। तेथी थोडुं ज लखीश। रस्ताम
लखवानो समय ज क्यांथी?

तु एक्सप्रेस कागळ शा सारु मोकले छे?

एटला मोटा कागळनो अर्थ कंई ज नहीं। कागळ लखतां क्यार
शीखशे?

सेवाग्राम जवानुं कदाच एप्रिलनी अधवचमां थाय। जेम थाय
मारी तो सलाह छ के अहीं आव ने जे कहेवुं होय ते कहे। स्त्री
भाईओनुं करवानुं कंई न होय तो जरूर आव।

बापुना आशीर्वा

१५३

१४-२-३७

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

आज हम आ गये। कांति सरस्वतीको लेकर पूना गया। बम्बई सरस्वतीके साथ आ जायेगा। वापरम्मा[1] बंगलोर गई थी। लेकिन यहां नहीं आ सकी।   तुमको मिल गया। सरस्वतीको मिलनेके लिए जाना चाहती हो तो जा सकती हो।

बापूकी दुआ

१५४

४-३-३७

चि॰ अमतुस्सलाम

तू मजेसे पहुंची होगी। मन परसे बोझ उतारकर जल्दी अच्छी हो जाना। तेरे ट्रंकमें कपड़े नहीं भरने दूंगा। अभी तो उसे मेरी कोठरीमें रखवाया है और मेरे उपयोगके लिए रखा है। और अगर उससे बड़ेकी आवश्यकता नहीं हुई, तो वह मेरी कोठरीमें ही रहेगा। सरस्वतीका तेरे नाम खत है। वह इसके साथ है।

बापूकी दुआ

---

१ कान्ति गांधीकी सास।
ये बंगलोर गई थी।

४-३-३७

चि॰ अमतुस्सलाम

तू मजेथी पहोंची हशे। मन उपरथी बोजो उतारीने जल्दी सारी थई जजे। तारा ट्रंकमा कपडा नहीं भरवा दउं। हमणा तो ए मारी कोटडीमां ज रखावेल छे अने मारा उपयोगने सारु राखुं छुं। अने एथी मोटानी जरूर नहीं पडे तो तो मारी कोटडीमां ज रहेशे। सरस्वतीनो कागळ तारी उपरनो छे। ए आ साथ छे।

बापूकी दुआ (उर्दू लिपिमां)

ठीक नहीं है। बेटी और बेटेके बीच ऐसा भेद क्यों? ईश्वर जो हमें दे उससे संतोष मानना चाहिये। खुदा तुम दोनोंको दीर्घायु करे।

मौलाना साहब[1]को जो तुझे लिखना हो सो लिखकर उनसे क्षमा मांगना हो तो जरूर मांग। मैं तो किसी भी तरह तुझे शान्त देखना चाहता हूं।

कनुसे बात कर ली है। वह तो कहता है कि अभी जो हाथमें काम है उसे छोड़नेकी उसकी जरा भी इच्छा नहीं थी। रामायणके काममें मशगूल न हो गया होता तो तेरे साथ रहकर खादीका काम करना उसे पसन्द आता। लेकिन जिस कामको उसने स्वीकार किया है उसे छोड़े तो व्रतभंग हुआ माना जायगा। इसलिए अगर कनुसे खादी-काममें मदद लेनी हो तो वह वर्धामें ही ली जा सकती है।

तेरी तबीयत बाद तुझे चाहिये वैसी जगह मिली है इसलिए,

नथी। दीकरी अने दीकरा वच्चे एटलो भेद केम? ईश्वर आपणने जे आपे तेथी संतोष मानवो घटे छे। खुदा तमने बन्नेने दीर्घायु करो।

मौलाना साहेबने तारे जे लखवुं होय ते लखीने एनी पासेथी माफी मागवी होय तो जरूर माग। हुं तो केमे करीने तने शांत जोवा इच्छुं छुं।

कनुनी साथे वात करी लीधी छे। ए तो कहे छे के हाथनुं काम छोडवानी एनी जराय इच्छा न हती। रामायणना काममां गूंथी गयो न होत तो तारी साथे रहीने खादीनुं काम करवानुं तेने गमत। पण जे कामनो ए वरी चूक्यो छे ए छोडे तो व्रतभंग थयो गणाय। एटले कनुनी पासेथी जो तारे खादीकाममां मदद लेवी होय तो ते वर्धामां ज लई शकाय।

तारी तबियत त्यां तने जोईती जगा मळी छे एटले सारी थई जवी जोईए। बाकी तारुं मन ठेकाणे नहीं होय त्यां सुधी बीमार ज रहेवानी।

रसीद अने मामीने दुआ।

बापुना आशीर्वाद

१ मौलाना अबुल कलाम आझाद।

पिलानी तो दिल्लीसे दूर है। दिल्लीके रास्तेमें नहीं पड़ता। लेकिन वहाँ तू जब जाना चाहे तब जरूर जा सकती है।

तूने ही लिखा था कि मौलानासे फतवा माँगना है।

अमतुल[1]की तबीयत अच्छी है यह जानकर बहुत खुश हुआ हूँ। अब तो टाँके भी तोड़ डाले होंगे और बेबी भी मजेमें होगी।

राजकुमारी[2] भी गई इसलिए यहाँ बस्ती बहुत थोड़ी है। आज हरजीवन भी गये।

बापूके आशीर्वाद

१३७

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

सेगाँव वर्धा
१-४-३७

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

म जानता हू कि मेरे उर्दू खत पढ़नेमें तुमको कम तकलीफ होती है इसलिए यह खत उर्दूमें लिख रहा हूँ। तुम्हारा खत मिला है। भाभीसे कहो आप लोगोंको तो मैं अमतुस्सलामकी मार्फत ही जानता हूँ। लेकिन उसने इस तरह पहचान करा दी है कि तुम सब मेरे रिश्तेदार-से लगते हो। कैसा अच्छा हुआ कि अमतुल ठीक वक्त पर तुम्हारे पास पहुँच गई! अब तो अच्छा होगा। खुदा तुमको जल्दी आराम करे।

जो खुराक देती हो सो अच्छी तो है। हरी भाजी देनी चाहिये। कडलिवर देना। कान्तिका खत मिला था। वह मैसूर जायेगा। अब तो राजकोट रहेगा। अप्रैलके आखिरमें मैसूर जायेगा। शायद दो तीन दिनके लिए त्रिवेन्द्रम् जाये। देवदासने इजाजत दे दी है। मनुकी शादी सेगाँवमें होगी। वहाँ तो कान्तिको आना ही होगा। मैं यहाँसे १४ तारीखको चल दूँगा। २५को वापस आ जाऊँगा। तुम्हारे सब मेरे

१ मेरे भाई अब्दुल मजीद खाँकी पत्नी।

२ राजकुमारी अमृतकौर।

मेरे भाई अब्दुल मजीद खाँकी पत्नी अमतुल मजीद बीमार थी इसलिए मैं उसके पास गई थी।

पास आना है तब आ जाओ। तुम्हारी तबीयत अच्छी रहती है यह पढ़कर मुझे बहुत खुशी हासिल होती है। बिलकुल अच्छी हो जाओ तो तुम्हारे पाससे पेट भरके काम ले सकूंगा। मैं मद्रासमें कल वापस आया। वहां इस वक्त बहुत काम था।

मामीको पेट पर रातको मिट्टीका पाटा (पट्टी) देना। उससे बहुत फायदा होना चाहिये। पापरम्मा मद्रास आई थी। सरस्वती नहीं आ सकी। है चुप। दुबारा नहीं पढ़ूंगा।

बापूकी दुआ

१३८

११-४-१७

चि अमतुस्सलाम

तेरे दोनों खत साथ अभी मिले। कनुको ५ तारीखका खत परसों मिला। कल वह नहीं आया था। ९ का कल मिला।

तुझे देलवाड आना हो तो आ सकती है। वहां गालिबन् २१ तक रहना। वहां देरसे देरमें २४को लौटूंगा।

११-४-१७

चि अमतुस्सलाम

तारा बेय कागळ साथे हमणां ज मळ्या। कनुने ५ मीनो पत्र दिवसे मळ्यो। काले ते न होतो आव्यो। ९ मीनो काले मळ्यो।

तारे देलवाड आववुं होय तो आवी शके छे। त्यां २१ मी लगी बमे भाम रहीश। अहीं मोडामां मोडो २४ मीए आवीश।

शान्ति राजकोटथी आवशे। कदाच पाछो राजकोट जाय। बाद मैसूर अने न त्यांथी त्रिवेंद्रम्। एटले सरस्वतीने देलवाड आववानुं नथी रहेत।

न माव मग्न थो। शान्तिने न नवी मळ्यु। तेमने तेनी मैत्री सख्य छ। मकामी माने छे के मन अविश्वास छे।

तारा भविष्यनुं मळ्युं त्यारे। जमीन बाबत पण त्यारे ज बोलुं। विचार १८ मीए छ

बापुना आशीर्वाद

था। रु० ५ के नोट इसके साथ भेजता हूं। कान्ति अभी राजकोट है। त्रिवेन्द्रम् नहीं जायेगा। समझता हूं मैसूर तो जायेगा ही। ज्यादा लिखनेका अभी समय नहीं है। हम आज ही इलाहाबादसे आये।

हिन्दू भाई-बहनोंने तुझे हरिजन-सेवा नहीं करने दी यह तेरा मानना ठीक नहीं है। लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं। तू अच्छी हो जा और जहां खालिस सेवा कर सके वहां कर। तेरी ही जमीन पर रहकर अगर अच्छा काम कर सके तो जरूर कर। और भी पैसे चाहिये तो मंगाना।

बापूके आशीर्वाद

यहांसे मैं ९ तारीखको गुजरात जाता हूं।

१४०

[मैंने अपने पिताजीकी जमीन पर हरिजनोंके लिए कुआं खुदवाया था और गरीबोंका स्थान साफ करवाया था। उसीका जिक्र पत्रमें है।]

तीथल बलसाड
१०–५–३७

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत आज सुबह ही मिला। तेरे खत मुझे देरसे मिलें और मैं लौटती डाकसे तुझे लिखूं तो भी वे तुझे देरसे मिलें तो इसमें किसका कसूर? तूने ही देहातमें रहनेकी इजाजत मांगी इसलिए मैंने दी। गांव पर बैठी है, हरिजनोंकी चाकरी करती है, गरीबोंका बोझ दूर

तीथल बलसाड
२–५–३७

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपि)

तारो कागळ आज सवारे ज मळ्यो। तारा कागळ मने मोडा मळे ने हुं वळती टपाले लखुं तो पण मोडा मळे एमां कोनो वांक? तें पोते ज गामडामां रहेवानी परवानगी मागी, एटले में आपी। गामडे बेसी हरिजनोनी चाकरी करे, गरीबोना उपरथी भार उतारे [illegible] [illegible] एवा [illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible] मने [illegible] [illegible]

करती है कुएं खुदवाती है, इससे ज्यादा तू क्या करनेवाली थी? इस-लिए मैंने फौरन हां कह दिया। लेकिन सरहद पर काम या ऐसा ही दूसरा काम करे, तो वह भी मुझे प्रिय होगा ही। मुझे इलाहाबाद एकाएक जाना पड़ा था क्योंकि जवाहरके बीमार होनेसे वर्किंग कमेटीकी बैठक वहीं हो सकती थी और मेरी हाजिरी उन लोगोंके लिए जरूरी थी।

सरदारके आग्रहके कारण बलसाडके पास तीथल नामक देहातमें समुद्र-किनारे हूं। बा मीराबहन वगैरा साथ हैं। पहली तारीखको वर्धा पहुंचनेकी आशा है।

ऐसी सूखी हवामें दम और खांसी तुझे क्यों हैरान करती है? लेकिन तेरे वहांको तो काफी समय हो गया। इसलिए आशा है कि यह पहुंचेगा तब तक तू अच्छी हो गई होगी।

लगता है शान्ति बंगलौरमें रहेगा। पढ़नेकी ज्यादा सुविधा वहां है।

बापूके आशीर्वाद

दीधी। पण सरहद उपर काम के एवु बीजु करे तो ए पण मने प्रिय होय ज। मारे अल्लाहाबाद एकाएक जवु पड्यु हतु, केमके जवाहर मांदा होवाथी वर्किंग कमिटि त्यां ज भराय अने मारी हाजरी ते लोकोने जरूरनी हती।

सरदारना आग्रहथी वलसाडनी पासे तीथल नामना गाममां दरिया किनारे छु। बा मीराबहेन वि० साथ छे। १ तारीखे वर्धा पहोंचवानी आशा छे।

एवी सूकी हवामां दम ने खांसी केम हेरान करे छ? पण तारा त्यांवासने तो घणो समय थई गयो एटले आशा छे के आ पहोंचे एटलामां तु सारी थई गई हश।

शान्ति बेंगलोरमां रहेशे एम लागे छ। भणवानी वधारे सगवड त्यां छे।

बापुना आशीर्वाद

१४३

[आरामके लिए मैं त्रिवेन्द्रम् जा रही थी। क्योंकि त्रिवेन्द्रम् जाते मद्रास तक राजाजी उसी ट्रेनमें इन्टर क्लासमें थे। मैं तीसरे दरजेमें थी। उनसे बात करनेकी मेरी इच्छा थी मगर वे इन्टरमें थे। इसलिए मैं उनके पास नहीं गई। उसीके बारेमें बापूको लिखा था।]

सेगांव वर्धा
१४-७-३७

चि. अमतुल

तुम्हारा खत मिला है। हां तुमको त्रिवेन्द्रम्‌में अच्छा न लगे तो दिल चाहे तब मेरे पास आ जाओ। तुम्हारे दर्दका सब हाल रामचन्द्रन्‌को बता दो। वहां कुछ वैद्य लोग अच्छे रहते हैं। उन्हें भी बताना ठीक माना जाय तो बताओ। वहां एक होमियोपैथिक मिशन भी है। लेकिन सच्ची बात तो तुम्हारे मनकी है। वहां बेचैन रहो तो यहां जल्दी आ जाओ। मेरा विश्वास तो ऐसा है कि पापरम्मा वि. तुमसे इतना प्यार करेंगे कि उससे कम वहां थोड़े हफ्तेके लिए शान्ति रहेगी।

कान्तिका खत आया है। वह इसके साथ है। बाका पग (पैर) अच्छा हो रहा है।

कैसी पागल हो? राजाजीके साथ बातें करनेके लिए अवश्य इंटरमें बैठ सकती थी। लेकिन अब तो हुआ।

सब खर्चका हिसाब रखो। बाकी और बालीके कोई खत नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१४४

सेगांव वर्धा
१७-७-३७

चि अमतुस्सलाम

तुम्हारा त्रिवेन्द्रम्का पहला खत मिला। मैंने तो लिखा है ही। अच्छी तरह आराम लो। हां डॉक्टर जो कहें वह खाओ। चिन्ता छोड़ो। कपड़े धोने वगैराकी जिद छोड़ो। जो कुछ सेवाकी जरूरत है सो नम्रतासे ले लो।

बा अच्छी हो रही है। मुझे कुसुम[1] या लीलावती पंखा करती है। बाने भी आजसे कुछ कुछ शुरू कर दिया है।

बापूके आशीर्वाद

[1] कुसुम हरिलाल देसाई।

१४५

सेगांव
२१-७-३७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। अभी तो तू वहीं रह। भले ही एक महीना पूरा हो। बादका सोचेंगे। हरिजनोंका सीनेका काम कर सकती है। वह काम तो है ही। लेकिन शरीर मजबूत करे उतना ही करना।

अगर सरस्वती सचमुच आना चाहे और रामचन्द्रन्‌की भी इच्छा हो तो सरस्वतीका आना मुझे अच्छा लगेगा। अनुभवज्ञान तो वहीं मिलेगा। रामचन्द्रन् राजी हों तो वे क्या चाहते हैं सो मुझे बतायें।

वालीको मने र   १   के बारेमें खत लिखा है कि अगर देना चाहे तो यूं ही दे।

बापूके आशीर्वाद

— —

सेगांव
२१-७-३७

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमां)

तारो कागळ मळ्यो। हमणां तो त्यां ज रहे। एक महिनो भले पूरो थाय। पछीनुं विचारीशुं। हरिजनोनुं सीववानुं काम करी शके छे। त्यां काम तो रहे ज छे। पण शरीर मजबूत करे एटलं ज करजे।

जो सरस्वती खरे ज आववा मागे ने रामचन्द्रन् पण इच्छे तो सरस्वती आवे ए तो मने गमे। अनुभवज्ञान तो वहीं ज मळे। रामचंद्रन् राजी थाय तो ते शुं इच्छे छे ए मने जणावे।

वालीने में कागळ र   १   बाबत लख्यो छे के जो आपवा मागे तो एम ज आपे।

बापूना आशीर्वाद (उर्दू लिपिमां)

१४६

सेगांव वर्धा
२७-७-३७

चि अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत आज मिला। कान्तिका भी मिला है। मैंने उसको पूछा था क्या तुम्हारा वहाँ आना वह पसन्द करेगा? मैंने यह भी लिखा था कि उसके खत तुमको भेज रहा हूँ। वह लिखता है तुम्हारे बंगलौर आनेको बरदास्त वह नहीं कर सकेगा। न (वह) चाहता है कि उसके खत तुमको भेजता रहूँ।

वह लिखता है   मारे माटे मने दुआ कर्या करो के मारामां फरी माता जेवो प्रेम पेदा थाय। अत्यारे तो नथी। जे प्रेम बीजी आश्रमबहेनो प्रत्ये छे एथी वधारे मारामां नथी।

ऐसी हालतमें तुमको वहाँ मेरा भेजना मुनासिब नहीं होगा। मेरी इच्छा थी कि वापिस जाते वहीं जा कर आ जाओ। कान्तिके इस निश्चयसे दुःख मत मानो। कान्तिकी खुशखबर मैं देता रहूँगा। अगर बाजीके लिए बंबई जाना पड़े तो अवश्य जाओ। अम्माकी सेवाके लिए भी जाना जरूरी हो सकता है। मुमकिन है कि तुम्हारे थोड़े दिनोंके लिए बंबई जानेसे भाइयोंकी सेवा होगी। वहाँ कमसे कम एक महीना तो रहना ही।

बापूकी दुआ

मेरे वास्ते आप ही दुआ किया करें कि फिरसे मुझमें माँके जैसा प्रेम पैदा हो। अभी तो नहीं है। जो प्रेम आश्रमकी दूसरी बहनोंके प्रति है उससे ज्यादा मुझमें नहीं है।

१४७

सेवाग्राम वर्धा
२-८-१७

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम (उर्दू लिपिमें)

अभी अखबारमें पढ़ा कि राजा मजूर[1] भोपालमें मर गये। मुझे तार दिया है। वही राजा मजूर न? तुम्हारे हाल कैसे होंगे मैं समझ सकता हूं। खुदा पर भरोसा करो हिम्मत रखो। यही मौत हमारे सामने भी है। कोई आज कोई कल। सब गये सब जायेंगे। सरस्वती पापरम्माको आशीर्वाद।

बापूकी दुआ

१४८

१-८-१७

चि अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। अमतुलको मैंने तुरन्त भोपाल तार भेजा था। कांतिके बारेमें मैं लिख चुका हूं। तुम्हारा महीना खतम हुआ है इसलिए यहां आ जाना ही शायद अच्छा होगा। रामचन्द्रनका खत है। वे नहीं चाहते कि सरस्वती तीन बरस तक कहीं भी जाये। वे चाहते हैं वह अपना अभ्यास पूरा करे। ऐसी हालतमें सरस्वतीको नहीं छोड़ना अच्छा होगा। शादी या बालीके कोई खत मुझे नहीं मिले हैं।

बापूके आशीर्वाद

मेरी तबीयत अच्छी है। कल ही दिल्लीसे आ गया।

---

१ मेरी भतीजी अमतुल मजूरके पति।

१४९

तार

७-८-'३७

अब यहां आ जाना अच्छा है। रामचन्द्रन् सरस्वतीकी पढ़ाई पूरी होने तक भेजनेको राजी नहीं।

बापू

१५०

तार

११-८-'३७

जब तक अच्छा लगे और इलाज कराती हो वहीं रहो।

बापू

7-8-'37

Better come here now Ramchandran unwilling send Saraswati till her education finished.

Bapu

11-8-'37

Stay while you are happy and taking treatment

Bapu

१५१

११-८-३७

चि० अमतुस्सलाम

तुम्हारा खत मिला। मेरा तार मिल गया होगा। मैंने कह दिया है जहां तक रहना चाहिये वहां तक रहो। तबीयत अच्छी हो जाय यह मेरे लिए बहुत ही बड़ी बात है। मैंने तो अमतुल मसूदकी फिकर की थी और अम्माकी। बाकी तो जो रामचन्द्रनको लिखा है वही कायम (निश्चित) समझो। जब वह इजाजत देवें तब ही आओ।

मीराबहन कल आ गई। बहुत अच्छी तो नहीं हुई है। कांति लिखता है जब तक म स मेरे बारेमें आसक्ति रखती है तब तक म उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखूंगा। जब अनासक्त हो जायेगी तब तो बात ही क्या?

तुम्हारा और खत आज मिला। आनेमें जल्दी न की जाय। यदि अच्छा हो रहा है तो और ठहरो।

बापूके आशीर्वाद

१५२

१-१०-३७

चि० अमतुस्सलाम

हम तो बहुत कुछ करना चाहते हैं लेकिन हमारी बेहतरी किसमें है वह तो रामजी जाने। अब रह गई हो तो रहो। कल लीलावतीके साथ आ जाओ और शामकी गाड़ीमें जमनालालजीके साथ जाओ या ऐसे ही। आज रातको आनेकी कोई जरूरत नहीं।

बापूकी दुआ

त्रिवेन्द्रम्से मैं वर्धा आ गई थी और मगनवाड़ीमें रात ठहरी थी। दूसरे दिन सेवाग्राम आनेकी बात बापू लिखते हैं।

१५५

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

हरिपुरा
१३–२–३८

प्यारी बेटी

मैं खुश हूं। (रफ्का) जवाब लीलाके खतसे जानो। ज़ाकिर साहब[1] आज आये। मेरे साथ खाया। कुछ पता नहीं सरहदसे कौन आनेवाले हैं। यहां धूप बहुत है।

बापूकी दुआ

१५६

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

हरिपुरा
१८–२–३८

चि. अमतुस्सलाम (नागरी लिपिमें)

तुमको क्या कहूं? क्यों लिखती नहीं? मेरी उम्मीद तो है कि शायद तुम लोग यहांसे २० या २१ को निकलोगे। देखूंगा कितना वजन बढ़ाया है। रामचन्द्रन् नहीं आया।

बापूकी दुआ

---

१ डॉ. ज़ाकिर हुसैन जामिया मिल्लिया दिल्लीके भूतपूर्व कुलपति। बिहारके राज्यपाल रह चुके हैं। आजकल भारतके उप राष्ट्रपति हैं।

१५७

११-१-४८

चि अमतुस्सलाम

कैसी हो? क्या सुशीला[1] मिलती है यह मैंने लिखा नहीं माना जाय? तुम्हीने लिखा था कि म न लिखूं सुशीला या कोई लिखे तो काफी है। अगर मन स्थिर रखोगी तो अवश्य शीघ्र अच्छी हो जाओगी। मुझे ठीक है। बाकी सुशीलाके बारेमें। तुमने काकड़े (टॉन्सिल) कटवा डाले सो अच्छा किया। मुझे लिखा करो।

बापूके आशीर्वाद

१५८

चि अमतुस्सलाम

अस्पतालमें मन भागता नहीं है। डॉक्टर इजाजत दे तभी। मेरे पास आनेका लोभ छोड़ना। मैं मजेमें हूं।

बापूके आशीर्वाद

१ डॉ. सुशीला नैयर गांधीजीके मंत्री प्यारेलालजीकी बहन। आजकल केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्री हैं।

टॉन्सिल्सका ऑपरेशन मैंने बम्बईमें करवाया था।

चि अमतुस्सलाम

हॉस्पिटलमांथी मन भागवान नथी। डॉक्टर रजा आपे त्यारे ज। मारी पास आववानो लोभ छोडजो। हुं मजामां छुं।

बापुना आशीर्वाद

१५९

प्यारी बच्ची (उर्दू लिपिमें)

कानमका[1] दिल जब तक नहीं जीता है तब तक कुछ नहीं किया।

मेरे पैर छूनेसे मुझे कुछ ही जानेका डर नहीं है।* लेकिन इस बुतपरस्तीको टालना चाहता हूं। मैं अपनेको ऐसा पाक नहीं मानता हूं।

बाल काटनेसे कोई फायदा न महसूस नहीं करता। हां सेवा करनेमें बीचमें आते हैं तो किसीसे भी कटवा ले।

मैं नहीं कहता तू नापाक है। तू अपनेमें कुछ ऐब नहीं पाती है तब तक मुझे क्या डर हो सकता है? कानपुर वगैरा जाना न जाना तेरे दिलकी बात है।

बापू

१६०

[मैंने बापूसे पूछा था कि कानमका दिल कैसे जीतूं?]

इसमें मैं कुछ बता थोड़ा सकता हूं? वह तो प्रेमसे जीता जा सकता है। वह प्रेम अपने-आप पैदा हो सकता है। यह तो पुरानी बात चली।

लिखनेके देनेकी भी बात नहीं है। तेरेसे जो हो सकता है अपने-आप वही कर।

---

१ गांधीजीके तीसरे पुत्र श्री रामदासभाईका लड़का कानम। उसका नाम तो कनु है लेकिन गांधीजी उसे कानम कहते थे। वह बाके साथ रहता था। बा बाहर गईं तब उसकी देखभाल मेरे जिम्मे थी। वह जिद्दी बच्चा था, किसीकी सुनता नहीं था।

* उस समय बापूने स्त्री-स्पर्शका त्याग किया था।

नालायक हूँ तो मुझे क्यों छोड़ती नहीं है? शायद तेरी सबसे ज्यादा बेहतरी मुझको छोड़नेमें ही है।

बापूकी दुआ

१६६

९-९-३८

प्यारी बेटी

कामका हिसाब अच्छा है। इन्हीं कामोंमें मन लगाना। उस समय दूसरे विचार नहीं करना। अगर सरहद जानेकी हिम्मत ही न हो तो न जाना। दुख भूल जाना। क्या खाती है?

बापूकी दुआ

१६७

१४-९-३८

बेटी

मुझे तो तुम्हारा काम अच्छा नहीं लगता। तुमको इलाज बताना भी मुश्किल है। तुम्हारे ३ बजेसे जागनेकी क्या आवश्यकता हो सकती थी? आराम लेना चाहिये। चरखा छोड़ना चाहिये। सुशीला कहे सो इलाज करना चाहिये। अच्छा होगा अगर बंबई जाओगी तो। खानसाहबका जब इनकारका होगा तब तो किसी जानेकी बात ही नहीं हो सकती है। यों भी बवासीर लेकर तो सरहद नहीं जा सकोगी।

बापूकी दुआ

९-९-३८

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमां)

कामनो हिसाब सारो छे। ए ज कामोमां चित्त परोवजे। ते वखते बीजा विचार न करवा। जो सरहद जवानी हिम्मत ज न होय तो न जवु। दुःख भूली जवुं। शु खाय छे?

बापुनी दुआ

१६८

तेरे हठकी कोई हद ही नहीं है। मैं राजी हो कर न ले जाऊं तो लाचारी ही हुई ना? मैं जानता हूं तू सरहदमें नहीं रह सकेगी। तो तुझे वहां ले जानेमें कुछ फायदा नहीं है। जैसी तबीयत आज है ऐसी रही तो मुझे तेरी सेवा करनी होगी। तू महादेवकी क्या करेगी? झगड़ा टालनेके लिए मैं सेवा ले रहा हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि तेरा शरीर सेवा देने लायक नहीं रहा है। तीन रातकी मालिशसे तगड़ी बनेगी और खूब खुश रहेगी। लेकिन यह तो होनेवाला था ही नहीं।

बापू

१६९

[इसका मूल गुजराती है।]

मुझ पर विश्वास करती है तब हठ करना शोभता नहीं। खान साहबने तो मजाक किया। और तू अकेली सरहदमें नहीं ही रह सकेगी। इसलिए मेरी सलाह है कि तू बम्बई जाकर तबीयत सुधार और मैं लौटूं तब तैयार होकर वापस आ जा। हमेशा मेरे ही साथ घूमना नामुमकिन है। हुक्म मानना और हठ करना ये दोनों बातें साथ हो सकती हैं क्या?

१७०

कैसा खत लिखती है? मैंने तो तेरा नाम जानेवालोंमें दिया है। लेकिन (तू) रह जाना चाहती है तो रह जा। खानसाहबके पास भी मजबूरीसे भेजा। मेरे पर मेहरबानी करके जाना चाहती है कि रहा नहीं जाता है इससे जाना चाहती है?

बापू

मारी उपर विश्वास राखे छे तो हठ करवानुं शोभतुं नथी। खान साहेबे मश्करी करी। बाकी तु एकली सरहदमां नथी ज रही शकवानी। एटले मारी सलाह छे के तुं मुंबई जईने तबियत सुधारीने हुं आवुं त्यारे तैयार थई पाछी आवी जा। हमेशां मारी साथे ज फरवुं ए न बने एवुं छे। हुकम मानवो ने हठ करवी ए बे साथे बने के?

१७१

मुझे तंग न कर। मेरी सब खुशामद बरबाद कर रही है। मैंने कुछ भी नहीं कहा है तो भी झगड़ा कर रही है। यह बरताव समझना मेरी समझके बाहर है। अब जितना बन्द करके जो करना है वह कर। मौलाना साहबसे (जो) कहा उसे साबित करती है। अब मुझे क्यों तंग करती है? आना चाहती है तो मेरी इजाजत है। नहीं आना चाहती है तो मैं मजबूरन् नहीं ले जाना चाहता हूं। मेहरबानी करके ।

१७२

अगर हुक्म किसे कहें इसका पालन कैसे होता है इतना समझनेकी शक्ति आ जाये तो सब फैसला हो जाये। तू शान्तिसे यहां भी रह सके। मगर मैं हुक्म देना शुरू करूं तो मेरा तो खातमा ही हो जाये। ज्यादा पूछनेसे क्या फायदा? मैं कुछ भी नहीं कहता हूं। कल इतना बड़ा भारी कसूर हुआ (मेरे नजदीक)। मैंने तो कुछ नहीं किया। मैंने रस नहीं पिया वह अच्छा किया। समझकर तुझे खामोश हो जाना चाहिये था। ऐसा तो न कर सकी। गलती खून का मजा म भुगत रहा हूं। मैं अपने कामोंमें ।

[illegible] यह था कि जब मन्दिरके चौरे पर बापू सुबाई लिखने [illegible] गभाम मामरा [illegible] न रहे थे तब प्रार्थनाका समय हो गया [illegible] मने ही [illegible] अपूर्णका [illegible] निकालनेकी इजाजत [illegible] अमरभा [illegible] बाहर [illegible] गया था इसलिए मैंने चौड़े और [illegible] बापूने पूछा [illegible] उनका हो अपूर्णता [illegible] है? [illegible] और [illegible] है। बापूने इसका निगाह ही [illegible] और यह लिखा होकर [illegible] मन [illegible] अपना [illegible] भी

१७३

तुझे हुक्म देनेकी मेरी शक्ति नहीं है। हुक्म समझनेकी तेरेमें शक्ति नहीं है। उसमें तेरा दोष नहीं है। मेरे हुक्मसे न तुझे हटा भी नहीं सकता हूं। तूने पूछा और कोई सजा? तब तो मैंने कहा न कुछ सजा देना नहीं चाहता हूं। बस मैंने रस नहीं लिया। और तो कुछ नहीं किया। मेरा तो सब रामनाम ले रहा हूं। और मेरे पास क्या चाहती है? शान्तिसे सेवा किया कर, खा पी खुश रह। यह भी न कर सके तो भी मैं तो बरदाश्त किया करूंगा। अब तो शान्त होना चाहिये। तुझे पता न चले उसका क्या किया जाय? जब आदमी एक कहता है और दूसरा करता है (तो) उसे मैं झूठ कहता हूं। जैसा तूने किया ऐसे बाने जब किया (तब) उसको (मैंने) काफी बनाया है और हलका किया है।

१७४

सोमवार

मेरा चाहना क्या चीज है? आज मैं कितना प्यार कर रहा हूं इसका तुझे पता नहीं है। जितना मैं तेरे लिए कर रहा हूं इतना मन किसी लड़कीके लिए नहीं किया है। यह कोई मेहरबानीकी बात नहीं है। मैं दूसरा कर ही नहीं सकता। लेकिन मैं पाता हूं (कि) तू इसे न देखती है न समझती है। शायद तेरा यह नतीजा होना ही नहीं चाहिए था। लेकिन मैं तो खूब जाऊंगा। गुस्सेको जो मंजूर होगा वही होगा। तू गुस्सा करके उसे भी जानती है। मेरा गुस्सा सब कोई मालूम करते हैं लेकिन तेरी सहानुभूतिके आगे सबका सर झुकता है और तेरे गुस्सेको बरदाश्त कर लेते हैं। मैंने तुझे सावधान करनेके लिए लिखा इसका असर गुस्सेमें! और तू जानती भी नहीं कि तूने गुस्सा किया। अब सुन जा काम पर लग जा।

१७५

चि० ब स

मैं क्या कहूं? जो करती है उसमें मैं हूं। उसकी शिकायत नहीं है। फल जा न सकी यही बताता है कि मेरी नहीं चलती है।

बापूके आशीर्वाद

१७६

बेटी

तू तेरी तबीयतको सुधारनेके लिए कुछ भी कर सकती है। बहाना धूंढ कर कुछ नहीं कर सकती है। अच्छी हो जायगी तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

१७७

मैं तो आज कुछ लिख नहीं सकता हूं। सुशीलाने जो कुछ लिखा है ऐसा ही करना। शरीर बिगड़ना नहीं चाहिये।

बापूकी दुआ

१७८

[मृदुलाबहन साराभाई अहमदाबादमें अपनी संस्था ज्योतिसंघके मारफत मुसलमानोंमें बापूका काम करनेके लिए मुझे अहमदाबाद ले गई थी।]

बारडोली
२२-१-४२

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरी चिट्ठी मिली। मैं क्या कहूं? जा तु खी है वहीं। वह चाहती है तू जल्दी आ जा। मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि यहां तेरा काम है तो नहीं आना। भाइयोंके पास भी जाना चाहिये। मेरे सिवाय (तू) नहीं रह सकती यह पागलपन है। फिर तो जैसा चाहे सो कर। मेरे उनके बारेमें क्या लिखूं? मेरे मिजाजमें नहीं निकलेगा। वक्त ही निकाल

सकता है। अपने-आप मुक्त है और जाना है तो अपने-आप जायेगा। तू स्थिर हो जायेगी अपना फर्ज अदा करेगी तो चक्र मिलना ही जायेगा। कोई न कोई वक्त तो तुझे मिला करेगा।

बापूके आशीर्वाद

१७९

बारडोली
२१-१-३९

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरा खत मिला। कैसा खत (है)? दूर बैठी भी काटती है! तेरी चिन्ता न क्यों करूं? भगवान सबकी करता है। ताज्जुब है मृदुलाबहन[1] नहीं मिली। मेरी तबीयत अच्छी है। (एकका दबाव) १६ -९४ दोपहरको था।

बापूके आशीर्वाद

१८०

२७-१-३९

चि. अमतुस्सलाम

मैं हैरान हूं। मैंने मनाही नहीं की है। मैंने तो मेरी हालत बताई। तूने कहा और मैंने पसन्द किया। तेरा ठिकाना नहीं है। और अब तुझे स्पर्श न मिले तो भी फिकर नहीं है। और तेरी फिकर मौलानाके इनकारकी है तो क्यों स्पर्शकी बातसे खत भरा है? लेकिन अब इस झगड़ेमें पड़ना नहीं चाहता हूं। मृदुलाके पास जानेकी कुछ भी जरूरत नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मृदुलाबहन साराभाई, अहमदाबादके मिल-मालिक श्री अंबालाल साराभाईकी बेटी गुजरात विद्यापीठकी विद्यार्थिनी। स्वातंत्र्यकी लड़ाईमें इन्होंने काफी हिस्सा लिया है और कई प्रकारके राष्ट्रीय सेवाके काम किये हैं।

१८१

२९–१–३९

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरे दो खत मिले। मैं क्या हुक्म करूं? मैंने कह दिया है, जो चाहे वह कर सकती है। क्योंकि मैं नहीं जानता हूं कि किसमें तेरा प्रेम है। ऐसी हालतमें मेरा कुछ भी कहना बेहूदापन-सा लगता है। अच्छा यही है कि जैसा तुझे अच्छा लगे वही करना। मैं उसीमें राजी रहूंगा। यह मैं न गुस्सेमें लिखता हूं न रोषमें। सिर्फ तेरा भला समझकर लिखता हूं।

यहां सब खुश होंगे। तेरी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

१८२

[राजकोट सत्याग्रहके समय बापूके साथ हम भी उपवास करें ऐसा विचार चल रहा था। उसके बारेमें बापूने लिखा है।]

राजकोट
१०–४–३९

बेटी अ स

तेरा खत मिला है। फाका करनेसे कुछ भी काम नहीं हो सकता है। यहां सब ठीक हो जायेगा ऐसा मालूम होता है। कुरेशी[1] की फिकर न करें। किसीको आनेकी जरूरत नहीं है। बाके बारेमें सुशीलाके खतसे।

बापूके आशीर्वाद

---

१ गुलामरसूल कुरेशी साबरमती आश्रमवासी इमामसाहबके दामाद।

कस्तूरबा राजकोट सत्याग्रहमें जेल गई थी।

१८३

राजकोट
१८-४-३९

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरे खत आते हैं लेकिन मेरी बात तू कैसे जाने? रातको एक बजे तक सोनेको न मिले ऐसे मौके पर भी मैं भेजूं कुछ तो भेजूं यह कैसी माया? दूसरे नहीं करते हैं। मेरे कामकाजमें क्यों फिकर करूं? तूने तुम्हारे सामने शुरू किया वह तुझे देख रहा था। इतना कम नहीं था?

मेरा तो ठीक ही चल रहा है। तबीयत तो है। मैं खुश हूं। बाकी सुशीला कहेगी।

बापूकी दुआ

१८४

७–५–१

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरे खत आये हैं। मुझे खत लिख गये हैं। न लिखें तो मैं क्या करूं? आज तार भी भेजता हूं। १२ ता. को अहमदाबाद होकर वर्धा जाता हूं। सुशीलाबहन साथमें ही हैं। महादेवभाई भी हैं।

तेरी तबीयत अच्छी होगी। तेरे बारेमें मृदुलाबहनसे भी बातें हुई थीं।

कुरैशीका कुछ फैसला हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

१८५

राजकोट
११-५-३९

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तेरा खत मिला। मैं तुमको बीरमगाम तेरे ही हितके लिए नहीं लाया। लेकिन इच्छा नहीं थी तो भी तूने बनाया था वह आमका रस तो तेरे ही खातिर पी गया। तू नाहक हैरान होती रहेगी उसमें मैं क्या करूं? तेरा विश्वास न खुदा पर है न मेरे पर। जिसमें शक भरे हैं वह तुझे खा जाते हैं, और तू परेशान रहती है। मैं तो कहता हूं जो काम तू कर रही है वह किया कर। उसीमें से सब कुछ हो सकेगा।

मन अच्छा है। हिन्दू-मुसलमानके बारेमें कुछ भी चिन्ता करनेकी नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१८६

राजकोट
१५-५-३९

बेटी अमतुस्सलाम

तुमको एक पत्र हरिजन आश्रम यहांसे भेजा है। तेरा भावनगरमें क्या हुआ? उसमें से सीखना यही है कि तुझे अहमदाबादमें रहकर सेवाकार्य करना है। उसमें से कोई दिन हिं मु (हिन्दू-मुस्लिम) समझौता होगा।

मैं अच्छा हूं।

बापूके आशीर्वाद

अक्ल थी और उनमें इतना जहर भरा था कि मुझे खाना अच्छा नहीं लगता था।]

सेगांव वर्धा
२१-६-३९

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला है। सब कुछ अच्छा ही हो जायेगा। धीरज रख। पैसेकी फिकर मत कर। मु (मुस्लिम) लीगवालोंसे मिला कर। अब तुझे सालेको कहा तो जाना चाहिये था। लिकन भी उन लोगोंसे अच्छा नहीं होगा। हमारा तो काम ही खादी-प्रचार है। खादी पहननेकी शर्त नहीं भूलना। भले अपने लिए बारीक खादी और बारीक व रंगीन खादी बनवावे। अगर खादी पहननेकी शर्तको हम छोड़ें तो हम हार जायें।

तबीयत अच्छी रखना। शायद बा और कानम मेरे साथ जाने पर यहां आयेंगे। साथका (पत्र) लक्ष्मीदास[1] भाईको।

बापूके आशीर्वाद

१८९

ट्रेन पर,
१-७-३९

प्यारी बेटी (उर्दू लिपिमें)

तुझे सिर्फ अहमदाबादमें जो काम कराई हो रही है उसे अच्छे पाये (बुनियाद) पर करना है। उस बारेमें जैसे लक्ष्मीदासभाई कहें वैसा करना। व र से अधिकका खर्च इस वक्त नहीं करना। मुहल्लावालोंको जो मदद कर सकती हो सो करना। लालच देकर किसीसे काम नहीं लेना। तबीयत अच्छी रखते हुए ही काम करना है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री लक्ष्मीदास आसर साबरमती आश्रममें थे। खादी सरंजाम विभागके संचालक थे।

१९७

सेगांव
१–८–३९

चि. अ. सलाम

तेरे दो खत एकसाथ मिले। मैंने तो लिख दिया है जैसा दिल चाहे वैसा कर। यहां आ जाना है तो आ जा। शंकरलाल-भाईसे बात कर लेना।

बापूकी दुआ

१९८

सेगांव वर्धा
७–८–३९

चि. अ. सलाम

तेरी शिकायत मिली। मैं तो बराबर लिखता रहा हूं। शिकायत पोस्ट मास्टरसे कर। मैंने यह भी लिख दिया है कि जैसा दिल चाहे वैसा कर, शंकरलालभाईसे मशविरा कर। इसलिए तार नहीं भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

१९९

सोमवार,
१५–९–३९

चि. अ. सलाम

तू नाम लेगी। खुश रहकर शरीर संभालना।

बापूके आशीर्वाद

सोमवार,
१५–९–३९

चि. अ. सलाम

[illegible] शरीर संभालना।

बापूकी दुआ

१९३

सेगांव
२१-७-३९

चि० अ० सलाम

तू मुझे दुःखी कर, मैं तुझे। यह तो अच्छा सौदा हुआ ना? तुझे रोज खत भेजे जाते थे। हा॰ सु॰ (सुशीला) को तेरे खत देता था। मने गलती की। माफ कर। अब जैसे आयेंगे वैसे फाड़ डालूंगा। जवाब किस चीजका दूं? हा॰ रमण महर्षि[1] के पास जायेगी तो अच्छा तो होगा। अगस्तमें छूटेगी तो क्या पटियाला जायेगी कि बम्बई? मैं तो शायद सारा अगस्त मास यहीं रहूंगा। पीछे तो ईश्वर जाने। सु॰ दिल्लीमें रही है। एक महीना रहेगी।

बापूकी दुआ

१९४

३०-७-३९

चि० अ० सलाम

तेरा खत मिला। मैं क्या करूं? तू तेरी प्रतिज्ञा तोड़ सकती है तो जो दिल चाहे सो कर। मैं रुपये किसी औरको नहीं दूंगा। अखबार को मैं यहां तेरे सिवा नहीं रख सकता। और तू प्रतिज्ञा भंग करके यहां कैसे आ सकेगी? शकरलालभाई से मिलकर बात कर लेना और जो ठीक लगे वह करना।

बापूके आशीर्वाद

१ दक्षिण भारतके परम योगी। उनका आश्रम अरुणाचलमें था। अभी कुछ वर्ष पहले उनका अवसान हो गया।

२ उत्तर गुजरातके रचनात्मक कार्यकर्ता अहमदाबादमें खादी [illegible] कुछ दिन सेवाग्राम आश्रममें रहते थे। [illegible] स्वर्गवासी हो चुके हैं।

३ श्री शंकरलाल बैंकर अहमदाबादमें अखिल भारत चरखा-संघके मंत्री थे। अहमदाबादके मजदूर महाजनके संगठनमें भी उनका काफी हिस्सा रहा।

१९५

सेगांव वर्धा
१–८–३९

चि. अ. सलाम

कल तेरा खत नहीं था। तू अब कहां होगी उसका पता ही नहीं है, इसलिए यह खत ल. भाई (लक्ष्मीदास) की मार्फत भेज रहा हूं। जिस तरह तू अब भाग रही है उसके लिए मैं तैयार नहीं था। कोई जिम्मेदारीका काम तेरे सुपुर्द हो ही नहीं सकता है ऐसा सिद्ध होता है। अच्छा जैसी ईश्वरकी इच्छा होगी ऐसे ही बन सकता है। इसमें से नया सबक मिलेगा। शायद मृदुलाबहनके वापस आने तक (तू) ठहरेगी। यहां सब अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

१९६

सेगांव वर्धा
४–८–३९

चि. अ. सलाम

तुझे तार तो नहीं भेजता। क्या करूं? आना है तो आयगी ही। जो काम नहीं हो सकेगा वो तो कैसे करेगी? तेरी प्रतिज्ञा यह थी कि जब मृदुला व ल. (लक्ष्मीदास) भाई तुझे छोड़ें तब वापिस आ सकती है। अब शं. (शंकरलाल) भाई आ गये हैं। उनसे मिलकर जो ठीक लगे वो कर। मकानके बारेमें मैंने ल. भाईको लिखा तो है। यहां रखनेकी मेरी हिम्मत नहीं है। कल यहां एक मुस्लिम डॉक्टरनी आ गई है। सी. पी. की है। उसके बाप भी डॉ. हैं। महीना भर रहेगी। अच्छी लड़की लगती है। सुशीलाका काम कर रही है।

नीमू[1] तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्रीमती निर्मला रामदास गांधी गांधीजीकी पुत्रवधू।

१९७

सेगांव
६–८–३९

चि॰ अ॰ सलाम

तेरे दो खत एकसाथ मिले। मैंने तो लिख दिया है, जैसा दिल चाहे वैसा कर। यहां आ जाना है तो आ जा। शंकरलाल-भाईसे बात कर लेना।

बापूकी दुआ

१९८

सेगांव वर्धा
७–८–३९

चि॰ अ॰ सलाम

तेरी शिकायत मिली। मैं तो बराबर लिखता रहा हूं। शिकायत पोस्ट मास्टरसे कर। मैंने यह भी लिख दिया है कि जैसा दिल चाहे वैसा कर, शंकरलालभाईसे मशवरा कर। इसलिए तार नहीं भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

१९९

मौनवार,
१५– –३९

बेटी अ॰ सलाम

तू शान्त होगी। खुश रहकर शरीर संभालना।

बापूके आशीर्वाद

मौनवार,
१५–९–३९

बेटी अ॰ सलाम

तु शान्त हश। खुश रही शरीर समाळजे।

बापुना आ॰

२०८

सेवाग्राम
४–९–'४

तो क्यों चुप नहीं बैठती है? बामला इसमें बहस क्या करता था?

बापूके आशीर्वाद

तो माफ कर। मै खामोश हूं।

२०९

अब तो डॉक्टर कहें वही खाना। रा कु का वजन बनाना रातको। मुझको कुछ नहीं लिखना। चुप रहना। बादमें दूसरा।

बापू

हां पढ़ा तो इसस समझोगे और शान्त रहोगे। मेरा विश्वास है कि अगर चोरी प्रगट न हुई, तो मुझे उपवास करना ही चाहिये। इसमें किसीको न त्रास देना है न दबाव। मैं जिसे धर्म समझूं उसका मुझे पालन करना ही है। कितने उपवास होंगे मैं नहीं जानता। यदि सुक्रवार तक पता नहीं चले तो अनिश्चयसे उपवास शुरू होंगे। मेरी आशा है कि जिससे यह दोष हुआ है वह निखालसतासे स्वीकार करके मुझको शान्ति देगा। और इस आपत्ति-कालमें उपवाससे मुझे मुक्त रखेगा। दोष सब करते हैं लेकिन उसका स्वीकार करना उस दोषका सच्चा धुपन (प्रायश्चित्त) है। चोरी मन तो की थी। उसका स्वीकार करके मैं हमेशाके लिए चोरीसे मुक्त रहा। बाने भी की थी। औरोंका क्या लिख? मुझे पता नहीं है। हम दोनोंका नमूना सबके लिए दोष धोनेम मददरूप बनना चाहिये।

बापू

सेवाग्राम   १–६–'४

जो आश्रममें स्थिर रहते हैं उनको पढाना काफी होगा। एक बार बताकर अब या कल पढाया जाय। जो हाजिर न रहे वह इस नोंध(को) पढ़ ले।

२१०

कलकी बात तूने उठा दी। मैं तो कहता हूं कि तुझे इसकी जड़ ढूंढना है। मेरा विश्वास है कि नौकरोंका यह काम नहीं है। मेरे पर असर ऐसा हुआ है कि मैं बेचैन हूं। एक दो दिनमें बात खुलेगी नहीं तो सिवाय उपवासके मेरे पास शान्तिका इलाज नहीं है।

२११

ऐसा नहीं है। उपवास तो तब नहीं हो सकता जब मेरा शक दूर हो जाय या शक सही साबित (हो)। मेरा तुम्हारे साथ झगड़ा तो यह है कि ऐसा (वह) क्यों होने देता है? मेरे मनमें शक क्यों आने देता है?

परवाह न करनेका तो यों है। अगर तूने नहीं किया है तो क्या होता है? क्या क्या नहीं उसकी परवाह (तू) क्यों करे? हां इस चोरीका पता लगानेमें (तू) मदद दे सकती है। तूने ही कबूल किया है कि नौकरोंका यह काम नहीं है।

बापू

२१२

तुझे क्या लिखूं? फैसला तो खुदाके हाथोंमें है न तेरे न मेरे। पटियालाका मामला मैं तो खत्म समझता हूं।

बापू

[सब आश्रमवासियोंके नाम बापूने यह लिखा था।]

मैंने सुना है कि पेन-फाउन्टनकी चोरीके बारेमें नौकरोंको पूछा जाता है। मैंने लिखा है कि मेरा शक उन पर बिलकुल नहीं है। उनको जरा भी सताया न जाये। चोरी हमारेमें से किसीने की है इसलिए तो मुझे दुःख हुआ है और हो रहा है। मेरा निश्चय बढ़ता जाता है कि हममें से किसीने किया है। भगवान उसको सद्बुद्धि दे कि वह अपराध कबूल कर लेवे।

सेवाग्राम ५-६-'४ बापू

बेटी

ऐसा खत लिखते दिल कांपता है। लेकिन अगर मेरा प्रेम तेरे लिए सच्चा है तो लिखना ही चाहिये। बहुत विचार करनेके बाद मेरा सारा शक तेरे पर जाता है। सही है या नहीं? तू वह खत ले सकती थी या था। बाने तो नहीं किया है ऐसा मेरा निश्चय है। बाने चोरी नहीं की है ऐसा नहीं। की है। उसे मैंने सारे आश्रमके सामने जाहिर किया है। तुझ पर शक जाता है वह क्यों? इसमें जानेसे कुछ फायदा नहीं हो सकता है। या तो तूने किया है तो तू जानती है नहीं किया है तो मेरे शकके कारण जाननेमें कुछ नहीं हो सकता है।

तेरा एक ऐब है। तू अपने दोष कम देखती है देखती है उन्हें कम कबूल करती है। तुझ यह काम किया है तो तू दूसरी नहीं होगी। दूसरोंने भी किया है। ने तो घोर पाप किया जिसके लिए मैंने सात दिनका फाका (किया) और एक बरस तक एक ही समय खाना खाया। बहनने किया इसके लिए १४ दिनका फाका करना पड़ा। सब कामकी चोरीकी बात नहीं थी। लेकिन झूठ बोलनेका था। न चोरी ही की थी। मैंने तो की ही थी। सब गुनाह करते हैं। लेकिन सब कबूल नहीं करते हैं। तूने किया है तो मुझे कह देना। नहीं किया है तो मैं जो कुछ भी कहूं उसकी परवाह नहीं करना। यही मेरा मिशन है।

[मा अमतुस्सलामको यह पत्र लिखनेके बाद सब आश्रम-वासियोंके नाम बापूने इस प्रकार लिखा था। —संपादक]

मुझे बड़े दु:खसे कहना पड़ता है कि मेरा शक अमतुस्सलाम पर जाता है। नीरराम न निर्मला मह काम नहीं किया है ऐसा मेरा विश्वास है। यह सब प्रकार मान। उसमें न उदासीन करता हूं या अमतुस्सलाम हो रह जाता है। म उसको सबसे अधिक समझना आता है मेरा मन अन्यथा नहीं ही है। उसका अविश्वास करना बाद न। बात नहीं लेकिन मर सामने दूसरा रास्ता नजर नहीं

महादेवभाईके साथ यह लिखता हूं। कस्तूर (बोके) नहीं करेगी। गुनाह हुआ है तो फिकर नहीं। नहीं हुआ है तो तो कहना ही क्या?

बापूकी दुआ

जाता। वह इतनी ही मक्कम (दृढ़) है कि उसने यह काम नहीं किया है। इस हालतमें मेरे सामने उपवास ही एक आखरी उपाय रहा है। यह उपवास केवल आत्मशुद्धिके लिए समझा जाये। मेरेमें यह शक क्यों पैदा हुआ? अगर वह निर्दोष है तो शकका आना मेरे प्रेममें अशुद्धि बताता है। प्रेम कभी शक नहीं करता। प्रेमके पास दोष छिप नहीं सकता है क्योंकि प्रेमीजन सुरक्षित है। अहिंसा-धर्म यह कहता है कि कोई अमुकअमुकके प्रति घृणासे न देखे उस पर मोहब्बत ही करे। वह झूठी है और मेरा शक सही है ऐसा मानकर जी (कोई) न बैठ जाय। वह निर्दोष साबित होगी तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। मैं तो नाचूंगा।

मेरे उपवास कलसे शुरू होते हैं। कहां तक करूंगा उसका मुझे पता नहीं है। जैसे ईश्वर मुझे बुद्धि और शक्ति देगा ऐसे मैं चलूंगा। कोई चिन्ता न करें।

सेवाग्राम ७-१-'४ बापू

[दूसरे दिन सब आश्रमवासियोंके नाम बापूने यह लिखा था।]

मैं देखता हूं कि मेरे उपवासमें किसीका साथ नहीं है इतना ही नहीं विरोध है। इस हालतमें मैं मेरी शान्ति नहीं रख सकता हूं। इसलिए मैंने उपवास छोड़ देनेका निश्चय किया है। खानेके समय खाऊंगा। इसका मतलब यह नहीं कि मेरा शक रफा हो गया। उसे रफा करना ईश्वराधीन है। न मैं मानता हूं कि उपवासमें कुछ दोष था। लेकिन ऐसा भी अवसर आता है जब मनुष्य अपने साथियोंके लिए भी कुछ छोड़ देता है। ऐसा अवसर यह है।

१ ॥ बजे सुबह ८-१-'४ बापू

२१८

८-१-४

सेवा ही सूझा। रसोईघरमें भी बीमारीकी हालतमें कमसे कम खाना। खाना-पीना चुप होकर करना ही है। अगर यह नहीं होगा तो सब सेवा बन्द।

सबसे अच्छा तो यह होगा कि तू जोहरा[1]के पास जा। वहां उसको रास्ते पर चढ़ा और वहां बैठी बैठी चरखा वगैराका काम भी कर। बिलकुल शान्त होनेके बाद आयेगी। लेकिन यह तेरी मुनसफी (मरजी) पर है। मुझे लगता है कि जोहराके अलीगढ़ जानेसे न अब्बाजानका भला होगा न जोहराका। इसमें मेरी गलती हो सकती है।

बापूकी दुआ

२१९

बेटी

तू आजका रोजा रखना चाहती है। उस बारेमें मैं कुछ भी कहनेका अधिकार खो बैठा हूं। जैसे तुझे खुदा कहे ऐसे कर।

जहर पीनेकी मेरे पास इजाजत चाहती है? अजीब बात है। तू क्या करे? एक चीज अगर तूने नहीं । तूने पूछा था मैं क्या कर सकती हूं? इसके जवाबमें है।

[1] श्री अब्बासभाईकी पत्नी।

२२०

[मेरे मनमें यही विचार चलता था कि बापूके मनमें मुझ पर चोरीका शक क्यों आया?]

खुदा ही जानता है तू हारी है या मैं हारा हूं। दोनोंका मौन चले तो भी शान्ति नहीं। बनावा कभी निकलेगा और कभी कुछ होगा। मैंने क्या गुनाह किया है कि इतना सताती है? मेरा स्पर्श भी तो करती है। रात भर मेरे नजदीक पड़ी है और क्या चाहिये? मैं (तुझे) कैसे खुश करूं मेरी समझमें नहीं आता है। खुदाके लिए तू शान्त हो जा। मेरे शकको मैं क्या करूं? खुदा पर उस चीजको छोड़ दे। मैंने कुछ तेरा त्याग तो नहीं किया है। अच्छी हो जा और देख क्या क्या हो सकता है।

२२१

इस तरह मेरा समय क्या लेगा? तू आयेगी पीछे मैं क्या करूंगा उससे तुझे क्या वास्ता? उसके साथ अगर कुछ तास्सुक है तो मत जा। अब तो मेरी नजरमें नहीं आता है। इतना कबूल करती है या नहीं कि यह काम नौकरोंका नहीं है। तूने कबूल किया वह गुनाह नहीं है। वह अच्छी बात है। तो यह बात यहां खतम हुई। मेरा तो निश्चय है कि यह काम नौकरोंका नहीं। मैं तो मेरी और तेरी बात करता हूं। जिन्दगी भरमें कभी (तू) झूठ बोली है या छिपा है? अरे, मन तो सैकड़ों मुसलमानोंको कुरानशरीफ उठाते और उन्हें झू । लेकिन ऐसे ही पीना उठानेवाले पड़े हैं। अगर कोई (किसी) बाजीने कहा तूने चोरी की है (तो) तू कबूल करेगी? तो पीछे कलकी बात नाहक क्यों उठाती है? तेरी दलील तो रास्तेमें मैंने सुनी। मने तो एक छोटी बात की है नौकरोंने नहीं लिया है। और बाकी रहती है या कोहरा आना लीलावती, तू। तेरा सबूत तेरा घर।

२२२

उस पर मैंने तसल्ली ही नहीं दी है। जब उसने कहा तब मैंने उठाया। मैं उस बारेमें कुछ नहीं जानता। उसका मुझको कुछ सबूत नहीं पहुंचा। हां अगर मेरा शक इस बारेमें पक्का साबित हुआ तो लीलावतीके कागजकी बात पैदा हो सकती है। लेकिन मेरी सावना ही दूसरी है। राधाका खत या उसके पेनकी क्या कीमत है? लेकिन चार दिनके झगड़ेके बाद मेरेमें यह भूत घुस गया है कि तूने (यह) किया है। मुझे (तू) बेचैन करती है। अब क्या लिखूं? मुझे छोड़।

२२३

शून्यवत् बन जाना और अपनेको सबकी धूल मानना इसमें सब कुछ आ जाता है। शून्यके मानी zero। दूसरे ऐसे नहीं हैं उसकी परवाह न करना। रोनेसे भी काम नहीं निपटता। मैं तो कुछ गुस्सेमें नहीं कह रहा हूं। शून्य नहीं हो सकती यह तो चिन्ताकी बात नहीं है। स्वभावमें नहीं (हो) तो एकाएक कैसे आवे?

२२४

तेरे पर बोहराकी जिम्मेवारी तो है ही। शान्तिसे रहना। मेरे मजाककी बरदाश्त नहीं कर सकती है? मैं जानता हूं कि तू ऐसी कभी नहीं करेगी।

२२५

अब यह फिजूल बात करती है। देखती नहीं है कि मैं तुझे जितना [illegible] (रहनुमाई करना) के लायक नहीं रहा। जिसको मन मेरी सारी [illegible] माना उस पर शक क्यों? शक में मजबूरन [illegible] नहीं कर सकता हूं। इसलिए मुझे तू इस वक्त छोड़ दे। [illegible] मुझे शान्ति दे। अगर मेरा [illegible] हुआ या दूर होगा तो मेरा रास्ता ठीक नजर आवेगा। उस वक्त सब [illegible] हो। मेरे साथ तू झगड़ा करना चाहती है पर मैं समझा ही नहीं हूं [illegible] तो मेरे पर [illegible] होगी। [illegible] उसमें भी मेरी तो [illegible] नहीं।

२२६

[बापूने किसी बात पर गुस्सा किया था तो मैंने कहा था कि आपके गुस्सेमें भी प्रेम भरा था और उस गुस्सेमें ही आपने मुझे माफ कर दिया था।]

ऐसी तो काफी चीजों में माफ कर सकता हूं। तेरे लिखने पर भी कुछ गुस्सा नहीं आया। देखाव (दिखने) में हिंसा जैसे ऐसा बर्ताव प्रियजनोंके साथ होता ही है। लेकिन वह सब प्रेम ही है। अहिंसा ही है। तूने पहचान लिया सो अच्छा हुआ। दूसरी बात भी इसी तरह पहचान लेगी तो सब अच्छा होगा।

बापू

२२७

अब मेहरबानी करके जा। कैसी भी है जब वापिस आयेगी तब रखूंगा। इतना काफी नहीं है? मेरी नाराजगी भी तेरे भलेके लिए है। मेरे ठीकके लिए नहीं। इतना भी समझनेका दिल नहीं रखती है। अब जा अपना काम कर। जितना रोती है इतनी मेरी नाराजगी बढ़ती है। रोनेसे न मेरा काम होगा न तेरा।

२२८

मैंने खामोशी ली है जहां तक निभा सकूं तब तक। मैं बहुत अशान्त हो गया हूं। मेरे बोलनेका बुरा परिणाम भी देखता हूं। मौन लेनेके बाद कुछ शान्ति मिली है। अब तक तो इम्तिहानमें (तू) नापास हुई है। सब कृत्रिम (artificial) है। तेरा शरीर मेरे नजदीक है, उसका कुछ मानी नहीं है। दिल दूर है। इसलिए कहता हूं कि तूने मुझको छोड़ दिया है। तूने कहा मने छोड़ा है। अर्थ एक ही हुआ। मैंने छोड़ा उसका भी मतलब यही कि हमारे दिल जुदे हैं। अगर तू बम्बई जायेगी तो मेरे नजदीक आयगी। यहां बैठी बैठी दूर जा रही

है। हां यहां दिलसे रहे सबको अच्छे वैसे-समझमें अपमान सहन कर सके तब तो मेरे नजदीक आई। लेकिन यह तैरेसे होनेवाली चीज नहीं है। ध्यानसे पढ़ना फेंक नहीं देना।

बापू

और चोट तक न लगे यही तो मैं भी कहता हूं।

२२९

मेरे साथ बहुत नहीं करना है। तूने पूछा मैंने उत्तर दिया। अब जो दिल चाहे वह कर। मुझे परेशानी होती है। जब मैंने कुछ लिखा तो बहुत चली। मैं नहीं समझता हूं इसका क्या करेगी। तू आजाद है। जो करना चाहती । यह तो पूरा ही है। इससे ज्यादा मैं कुछ कहना नहीं चाहता।

२३०

बतरनाक था नतीजा तो तेरी इस हठका कि कुछ भी हो तू तो पूछेगी ही। तू उपवास करती है। सामने रो रोके पाव मिलाती है। तो भी मैं तो खामोश हूं।

२३१

मै तो कहता हूं तू आज ही आ जोहराको लेकर। इन्दौर थोड़े दिनों तक रहना। अच्छी हो जानेके बाद मुझे पूछकर आना। इतनेमें आ ठीक हो जायेगी। न आये तो भी काम तो सब छोड़ना ही है। सहन करनेका माद्दा (तू) कहां रखती है?

मै तो तेरा दिल चाहता हूं। दिलके पास माया कहां है? वे पूछी है तो कहना क्या रहता है? पूछता हूं तो कहती है मेरे दिलको पूछो।

२३६

[मूल पत्र उर्दू लिपिमें है।]

मेरी कोई सख्ती नहीं है। जब चाहे यहां (तू) आ सकती है। पटियाला जा सकती है। घर जा। मेरा हुक्म मांगे तब मैं क्या कहूं? जिसमें तेरी बेहतरी देखूं वही तो कह सकता हूं। यही और क्या करूं?

मैं तेरी बेचैनीको बरदाश्त नहीं कर सकता। तेरे भलेमें मेरा भला समझता हूं।

बापू

२३७

इसमें कुछ जवाब देनेका नहीं है। जिसे चाहे उस डाक्टरको भेजो बाकी सब खुदा पर छोड़ो।

बापू

२३८

हमदर्दीके शब्द तेरे लिए जहर होंगे क्योंकि उनमें से तू कोई न कोई (कुछ न कुछ) अर्थ निकालेगी। हमदर्दी वगैरा जो कुछ होगा वह खुदा देखे तो काफी है। अगर जी चाहे तो (वाला) जानेसे अच्छा है नहीं तो तू सो जा और मनसे और शरीरसे आराम ले।

बापू

२३९

कोआपरेशन का खुदा ही बेहतर जानता है। अनुभवसे ही कहा जाय कोआपरेशन किसको कहें। जब तक तेरा जमीर तुझे बाहर न ले जाय तब तक यहां रहेगी अमन्ने मैं मानता हूं कि बहतरी जानेमें है। लेकिन मेरे माननेके कोई मानी नहीं जब तक वही बात तुझे न जचे।

अगर बाहर गई तो हमेशाके लिए ही जायेगी ऐसी बात मैं न कह सकता हूं न मान सकता हूं। क्योंकि हम अपने दिलको नहीं जानते हैं। खुदा ही जानता है।

२४०

मैं कहां कहता हूं कि तू ईश्वरके नजदीक है? कुरान शरीफ मजेसे पढ़। गीता पढ़। माला पहन। मुझ मेरे रास्तेमें जाना है। तू अगर सच्ची है तो कम मौन लेकर तेरा काम कर। खा पी। ईश्वर सच्चा है यह मुझे बता देना। मेरा झगड़ा ईश्वरसे है। अब खतम हुआ। उपवास नहीं छूटेगा। जब ईश्वर छोड़ेगा तब छोडूंगा। ईश्वरकी प्रेरणासे यह उपवास होता है। उसीकी प्रेरणासे छूटेगा।

बापू

२४१

बिसनलालभाईको कहो कि तेरे और मेरे खत सबको बता सकते हैं। यह तो तू चाहती है न? मैं तो नहीं चाहता हूं। मुझे क्या दरकार (जरूरत)? मेरा वास्ता तो तेरे साथ है। मेरा खत बतानेसे क्या फायदा? लेकिन मैं तुझको थोड़ा ही रोक सकता हूं? न रोकना चाहता हूं। किसने बताया? तो तू कैसे कहती है उनको किसने बताया? सो तो खतम हुआ। तो यह खत तूने बिसनलालभाईको बताया। तेरा फर्ज हो चुका। क्योंकि वह मैनेजर है।

२४२

तूने काफी रस दी है। अब इसमें मेरा समय नहीं लेना चाहिये। जितना तू जाहिर करना चाहती है वह कर।

[मैंने कहा आप नहीं चाहते तो अपने सबको वापिस लें।]

बापू — क्यों वापिस लूं? मैं तो नहीं चाहता कि इसकी ज्यादा चर्चा होवे। लेकिन किसी सन्तोषके लिए सबको (तू) बताना चाहती है तो बता।

२४३

मैंने कोई प्रायश्चित नहीं किया था न मैंने पीर इस्लाह किया है। मैंने तो सिर्फ दयाभावसे किया। लेकिन मैं समझता हूं कि तुझे एक उत्तेजना अर्थ मिल तो जाती है। इतना तो मिलना ही है इस जन्म। और तो क्या लिखूं?

बापू

२४८

खुदाके हाथमें से छोड़नेवाला कौन? हम सब उसीके हाथमें हैं। मैंने कल ही खाने-पीनेकी बात पर ताला लगा दिया। मैं समझता था कोई (कुछ) निकला कोई (कुछ)। मैंने तो तबीयतके बारेमें पूछना छोड़ ही दिया था। अब मने सोचा कि अब तो कुछ पूछ सकता हूं तो सुशीलाको बताया। वह भी परेशान हो गई। अब तो वह भी नहीं पूछेगी। इससे ज्यादा क्या चाहती है?

बापूके आशीर्वाद

२४९

तेरा गुस्सा तो अभी भी नहीं गया है। तेरा पैगाम मिला। ईश्वर तुझे हिम्मत और शुद्ध बुद्धि देवे।

बापूके आशीर्वाद

२५०

तू जबरदस्ती करती है, होता कुछ नहीं। क्योंकि मेरेमें विश्वास नहीं। ऐसे ही चलेगा तो जो काम देता हूं वो भी बन्द हो जायेगा। यहां रहना (हो) तो खुश होकर रहना।

मैं क्या काममें हूं उसकी भी तुझे दरकार नहीं है। अजीब बात है। मैं तुमको बिलकुल नहीं समझता हूं। खुदा मेहर करे।

बापू

२५१

ठीक हो सकता है। मैंने जो हो सकता है सो तो कर दिया। औरिसा (उड़ीसा) जरूर जा सकती है। यह तो एक हलकी ही बात हुई।

सतरा खायेगी पानीमें पड़ी रहेगी एनीमा लेगी तो तुरन्त अच्छी हो जायगी। फिर तो जो दिल चाहे सो कर।

बापूकी दुआ

२४४

[मैंने बापूसे पूछा था — आपके दिलमें क्या है? मैं क्या करूं?]

दिलमें इतना ही है कि जो काम जो सेवा मिले वह खुश होकर करना किसीका कभी बुरा न मानना और हमेशा खुशदिल रहना। यही मेरी दुआ आशीर्वाद है।

२४५

अगर कोई कहता है इसीलिए (हम) खाते हैं लेकिन सचमुच हम जरूरत नहीं देखते हैं तो वह माननेमें फायदा नहीं गैर-फायदा है। इसलिए दवाई छोड़ दो और दूसरा भी। मैं जो कुछ कहूं उसकी जरूरत महसूस न हो तब तक न किया जाय।

२४६

यह बेवकूफी हदसे बहुत बाहर जाती है। उपवास तो सिर्फ इसीके कारण था। तुम्हारे खयाल सब दीवानोंके-से हैं। घर जानेसे मैं रोकूंगा नहीं। पर जाना तुम्हारे लिए शर्मिन्दगीकी बात होगी। मेरा हुक्म भी खुशीसे उठाना चाहिये ना? अगर खुशीसे नहीं उठा सकती हो तो हुक्मका उठाना क्या? जहां मैं जाऊं वहां साथ ही जाना कहां तक ?

२४७

बेटी अमतुस्सलाम

मैं नहीं समझता क्या कहूं? वही सवाल पूछती है जो मैंने बार बार समझाया है। मनछाजीभाई मुझे खत लिखते हैं? मेरी शिकायत करते हैं? मैं जो कहता हूं वह उनके दिल-दिमाग तक पहुंचता है। मैं जो कुछ तुमको कहता हूं वह तुमको ठीक नहीं जंचता। खानेका मैं पूछ नहीं सकता हूं। मैं कहूं (कि) कम मेहनत करो तो ज्यादा करोगी। मैं कहूं सो (खाओ) तो नहीं खाओगी। अगर खाओगी तो भी दिल कहेगा यह सलाह ठीक नहीं है। (मैं) क्या जानूं मौलानाने क्या कहा है? अब कहो कैसे समझाऊं?

बापूकी दुआ

२४८

खुदाके हाथमें मैं छोड़नेवाला कौन? हम सब उसीके हाथमें हैं। मने कल ही खाने-पीनेकी बात पर ताला लगा दिया। मैं समझता था कोई (कुछ) लिखता कोई (कुछ)। मैंने तो तबीयतके बारेमें पूछना छोड़ ही दिया था। अब मैंने सोचा कि अब तो कुछ पूछ सकता हूं तो सुशीलाको बताया। वह भी परेशान हो गई। अब तो वह भी नहीं पूछेगी। इससे ज्यादा क्या चाहती है?

बापूके आशीर्वाद

२४९

तेरा गुस्सा तो अभी भी नहीं गया है। तेरा पैगाम मिला। ईश्वर तुझे हिम्मत और शुद्ध बुद्धि देवे।

बापूके आशीर्वाद

२५०

तू जबरदस्ती करती है, होता कुछ नहीं। क्योंकि मेरेमें विश्वास नहीं। ऐसे ही चलेगा तो जो काम देता हूं वो भी बन्द हो जायेगा। यहां रहना (हो) तो चुप होकर रहना।

मैं क्या काममें हूं उसकी भी तुझे दरकार नहीं है। अजीब बात है। मैं तुझको बिलकुल नहीं समझता हूं। खुदा बेहतर करे।

बापू

२५१

ठीक हो सकता है। मैंने जो हो सकता है वो तो कर दिया। औरिसा (उड़ीसा) जरूर आ सकती है। यह तो एक दूसरेकी ही बात हुई।

सतरा लायेगी पानीमें पड़ी रहेगी एनीमा लेगी तो तुरन्त अच्छी हो जायेगी। फिर तो जो दिल चाहे वो कर।

बापूकी दुआ

२५२

काम करनेकी मनाही है। सोना ही होगा। कमसे कम आठ घण्टा। अगर जागना ही है तो मेरी सेवा छोड़नी होगी।

२५३

काफी नियम-भंग हो रहा है। नियम यह था कि हाल तुरन्तमें आराम ही लेना है। परिश्रम नहीं उठाना है। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। सब काम कनुको देना चाहिये। उसकी (बापूकी सेवाकी) देखभाल आराम लेते लेते कर सकती हो। मुझे उत्तर नहीं चाहिये। मैंने तो बताया (कि) मेरी समझ क्या थी। अब वैसी तुम्हारी (समझ) भी ऐसा किया जाये। अगर स्वीकार नहीं किया है तो यह भी नियम भंग है। आजकल खत और स्वीकार पर ही रहनेकी बात थी। ऐसी कोई चीज मैं लिखूं उसका जवाब तक न दिया जाय। जो दुरुस्त माना जाये उसका अमल करना। लिखकर या बोलकर मेरा समय नहीं लेना।

२५४

(तू) बिलकुल दीवानी है। कौन गैर-रस्मी समझता है? मैं क्या नया नहीं लगता हूं? मैं कहता हूं सो ठीक ही है न? बिलकुल सोचनेकी काबिलियत नहीं रखती। याद रख अगर बीमार पड़ेगी तो मैं भी [illegible]। और तो क्या मरा हूं? यह पागलपन जाना चाहिये। तुमसे एक बात भी हो नहीं सकती है। यह कैसी बात?

२५५

मैं क्या बताऊं? तू आराम नाम कर ही नहीं सकती। अब मेरा (बनाया) उपचार करती है तो दूसरी तीसरी चीज क्यों करती है? मेरा उपचार करना है तो सहन कर और सब काम छोड़कर आराम [illegible] (तीसरा मालिश [illegible] [illegible]) उपचार नहीं करना है।

२५६

कातना वगैरा सब बन्द समझो। तुम्हारा खाना यहाँ या आश्रम को खाना चाहो वह। रसोड़ेमें या किसी जगह नहीं जाना है।

२५७

[मैंने लिखा — काम तो पूरा ही फाका न? काम थोड़ा करूँगी उससे भी थकान लगेगी तो छोड़ दूँगी। बापूने लिखा —]

थाक (थकान) लगनेकी इंतजारीमें नहीं रहना चाहिये। बिलकुल खिसकना ही नहीं छोड़ना। तब ही फाका पूरा फायदा देगा। अगर (तू) मेरी सब बात विवेकसे मानेगी और करेगी तो मेरा यकीन है कि हमेशाके लिए अच्छी हो जायेगी। अगर ऐसा नहीं कर सकती है तो भी चाहे सो करनेकी आजादी तो है ही। मोतीबहन भी परेशान है।

२५८

[मैं अकसर बापूसे यह कहा करती थी कि मेरे जैसी नालायक पर आपका इतना वक्त जाता है यह क्या मेरा नाजायज फायदा उठाना नहीं है? बापू मानते थे कि जहाँ इतनी भक्ति हो वहाँ ये सब अधिकार होते ही हैं।]

मुझे काफी गुस्सा आता है जब (तू) नाजायज फायदा उठानेकी बात करती है। जो मेरे ख्यालमें नहीं है वह तू सोचती है। यही बताता है कि तेरी भक्ति कितनी छिछरी है। घड़ी घड़ीमें थक जाता है तो मुझे छोड़।

२५९

तुमको पश्चात्ताप होता है इतना ही काफी है। मीराबहन क्या किसीसे भी इस तरह बात करना ही ऐब है। लेकिन जैसे मीराबहन अपनी आदत नहीं छोड़ सकती ऐसे तुम्हारा भी है। जो हो सो हो। मैं तो भूल ही गया हूँ कि तुमने गलती की।

बवासीर शरीरका तो मैंने छिन लिया है। अपने ही कसूरसे बीमार हुआ करती हो। मैं क्या करूं? क्या कहूं? अब देखता हूं बवासीरका इलाज सुशीलासे सधी हो या नहीं।

मुझको कितने खत लिखा करोगी? बात एक ही होती है। तुम्हारे पास इतना वक्त है, मेरे पास नहीं है।

२६०

दिल मेरे पासमें होगा तो तेरी चीर ही है। लेकिन मैंने कहा है कि दिल तो मेरे पास है ही नहीं। यह तो कोई नई बात नहीं कहता हूं। बस अब छोड़। जो है सो है। मुझे सरमानेकी ।

२६१

तू न समझ उसका मैं क्या करूं? मैं जो करता हूं वह प्रेमके ही खातिर (है)। न गुस्साकी बात है न नाराजगी। सिर्फ तेरे भले ही की है। धीरज रखनी तो सब अच्छा होगा। तबीयत अच्छी रखना। खुश रहना।

बापू

२६२

चि. अ सलाम

तुम्हारा [illegible] कुछ पता ही नहीं है। जवाब तो दो [illegible] आज पूरा होता है। कल तुम्हारे संदेश [illegible] समझाऊंगा क्यों जाना है। तुम्हारा [illegible] हाल [illegible]

बापूकी दुआ

२६३

[मूल पत्र गुजरातीमें है।]

मैं कुछ नहीं समझ सकूंगा। जोहराकी जिस तरह रहनुमाई करनी हो उस तरह कर। यह अगर तेरे कहनेमें न हो तो मुझ पर छोड़ दे। जोहरा मुझसे बातें कर ले। बाकीका तू देख। पूरी कहे वैसा कर। बालासाहब क्या कहते हैं वह देख। जोहरा नहीं सकता।

२६४

मैंने तो कब लिखके दिया। जरूरत न लगे तो क्यों खाना? इसमें तो साफ लिखा है। उसके बाद खाना खाना ही   । बात सीधी है। जब हम किसी पर श्रद्धा रखते हैं तो वह (जो) कहता है उसकी जरूरत भी हम महसूस करते हैं भले उसके   ।

२६५

खानेके बारेमें कोई (किसी) ने मुझको इलजाम नहीं लगाया है। ऐसा   ने लिखा इसलिए मैंने तुझे पूछा। क्या आदमियोंमें गलतफहमी नहीं होती है? अब पूछती है क्या? तूने झूठ नहीं कहा है ऐसा मैं कहता हूं। यह काफी नहीं है? मैंने तो कुछ शकसे नहीं पूछा था। लेकिन तुझे (ऐसा) लगा तो माफ कर।

२६६

मेरी शर्त कुछ पूरी हुई ही नहीं है। घूमना बन्द किया है, क्योंकि तू कमजोर है। इसको तो मिटना ही है। खुराक ऐसे ही जाती है। ऐसी हालतमें मैं ज्यादा काम नहीं देता। ज्यादती खुराक तू जिसको मानती है (वह) मिल रही है।

मने कंई खबर नहीं पडे। जोहराने जेम दोरवी होय तेम दोर। ए जो तारा कहेवामां न होय तो मारी उपर मूकी दे। जोहरा मारी साथे वातो करी ले। बाकीनुं तुं जोज। पूरी कहे तेम कर। बालासाहब कहे ते जो। जोहराई नहीं शकुं।

२६७

[एक दिन रातको मुझे चमका दौरा हुआ तो बापू आधी रातमें उठकर मुझसे पूछने लगे। उस दिन उनका मौनवार था। मैंने तुरन्त कहा बापू आज आपका मौनवार है आप भूल गये हैं। बापूने कहा मुझे याद है। तुमसे निर्णय करवाना है कि तू तबीयत सुधारनेके लिए किससे इलाज करवायेगी। मैंने कहा आप जो कहेंगे सो करूंगी। आप मौन मत तोड़िये।]

अगर मेरा हुक्म मानना है तो सब प्रक्रिया बन्द करो और बगैर दलीलके जैसा कहूं ऐसा करो। खुश होकर मुसंबीका रस पीना है। मूसंबी चूस सकती हो। अनारमें हरज नहीं है। छिलटों (छिलकों) का पानी जो मैं पीता हूं वह भी पीओ।

बापू

२६८

तेरे पास मैं तो और भी काम छुड़वाना चाहता हूं। जब शरीर बिलकुल मजबूत हो जायेगा और जैसे दूसरे रहते हैं ऐसे (तू) रहेगी तब देखा जायेगा। आज तो चेहरा खराब है वजन कुछ नहीं और रातको (तू) बिलकुल सोती नहीं। ऐसी हालतमें जो काम करती है वह भी छुड़वानेको दिल चाहता है। काम एक ही चरखा जितना चला सकती है चला। बाकी समय सोना पढ़ना। अब घूमनेके खातिर आहिस्ता आहिस्ता घूमना।

२६९

मेरी तो पक्की राय है कि हिन्दू-मुस्लिम मसालेसे भी तेरा नहीं रहना फर्ज है। इतना जाननेके बाद जैसा दिल चाहे वह कर।

बापू

२७०

आज भी पेशाबका पॉट टेबल पर रखा। कमोडकी बैठक साफ नहीं होती है। मेरा मलम साबुन नहीं रखा जाता है। स्नानकी मटर कभी साफ नहीं रहती। कमरेके बाहर भीनी जमीन नहीं सूखी है। रोज शामको प्रार्थनाके समय (तू) सो जाती है। मुझे पंखा ऐसे ही मिलता है।* और दूसरोंको बोलना देती है। सोना (हो) तो प्रार्थनामें क्यों बैठना? और मुझ कितनी बताऊं? हमेशा बताता रहूं तो मैं दीवाना बनूंगा। तू पगली बनेगी। तेरी मांगमें मने इतनी तो कहा थी। इसमें सबब एक ही है। (तू) बहुत काम लेकर बैठ गई है, इसलिए कोई पूरा नहीं होता। और जो वक्त तेरा जागत रहनेका है वही आरामका बन गया है।

२७१

२८-९-'४

चि म सलाम

तू भी गुजराती पढ़ना सीख ले। ठीक चलता होगा। खुश होगी। शिमलामें ज्यादा ठहरना होगा। सोमवारको तो पूरा होनेका समय है। तबीयत अच्छी सुधारना। मैंने कहा है सो याद रखना। हिन्दी हिज्जे ठीक कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

---

* जब पंखा झलते झलते मुझे नींद आ जाती थी तो बापू मेरे हाथसे पंखा लेकर खुद झलने लगते थे।

२८-९-४

चि म सलाम

तुं पण गुजराती वांचता शीखी ले। बरोबर चालतुं हशे। खुश हशे। शीमलामां वधारे रोकावुं पडशे। सोमवारे तो पूरुं थवानो संभव छे। तबियत बरोबर सुधारजे। में कह्युं छे ए याद राखजे। हिंदी जोडणी बरोबर करी लेजे।

बापुना आशीर्वाद

२७२

[जब सिंधमें मुसलमान हिन्दुओंका खून कर रहे थे तब अखबारोंमें समाचार पढ़कर मैं सदा पू. बापूजीसे कहा करती थी कि मुझे वहाँ भेजिये जिससे कि अपनी जिम्मेदारीके आदर्शको मैं पूरा कर सकूँ। एक दिन सुबह लेटे लेटे बापू पूछने लगे "तू सिंध जानेको तैयार है?" मैंने लेटे लेटे जवाब दिया "रोज तो कहती हूँ, आप भेजते कहाँ हैं!" तो कहने लगे "मैं तो आज ही भेजना चाहता हूँ और मरनेके लिए भेजना चाहता हूँ।" मैं खुशीसे उठ बैठी। बापूने कहा "बम्बईके रास्तेसे जायेगी तो तेरे भाई मना करेंगे।" मैंने कहा "पूछो तो भले हों लेकिन मेरे कार्यके रास्तेमें रुकावट कभी नहीं डालेंगे। इसलिए आप जिस रास्तेसे कहें उससे जा सकती हूँ।" कराचीके लिए नजदीकका रास्ता बम्बईसे था। फैसला किया कि बम्बईसे जाना है। एक पत्र भी जनाब हारून रशीद मुस्लिम लीगके प्रधानके नाम लिखा। मरहूम मौलाना अबुल कलाम आजादको पता चला कि मुझे सिंध भेजा जा रहा है। उन दिनों दिल्लीमें कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिकी बैठक चल रही थी। पू. बापूजी दोपहरको चर्चा कर रहे थे। मुझे हुक्म मिला कि मैं भी तैयार होकर वहीं चलूँ और वहींसे शामकी गाड़ीसे बम्बई रवाना हो जाऊँ। मौलाना आजादने मुझे बुलाकर कहा कि "सुना है तुम सिंध जा रही हो। यह ठीक नहीं।" मेरे लिए पू. बापूजीके हुक्मको टालनेवाला कोई नहीं था। लेकिन चलते वक्त बापूजीसे मौलाना साहबने इतना जरूर कहला दिया कि जो पत्र हारून रशीदके नाम दिया है उसके बारेमें कल फोन पर बतायें। मानो बापूजी मौलाना साहबसे चर्चा करके इजाजत दें तो ही यह पत्र वहाँ जाकर देना नहीं तो बापूकी लड़कीके नाते जाना।

मेरे बम्बई पहुँचने पर स्वर्गीय महादेवभाईका फोन आया कि पू. बापूजी कहते हैं कि पत्र नहीं देना है। मैं तो किसीको सिंधमें जानती नहीं थी, न पूरे हालात ही जानती थी। परेशान हुई कि आखिर करूँ

तो क्या करूं? महादेवभाईने कहा — तो वापिस आ जाओ। वापिस तो कैसे आ सकती थी? मैं चली गई। वहां जाते ही देखती हूं कि अखबारोंमें बड़े हरूफोंमें लिखा है कि अमतुस्सलाम कुरीतीको बन्द कर वानेके लिए जान देनेको आई है। कारण बापूजीने एक पत्र भी आनन्द हिंगोरानीको लिखा था जिसका अखबारोंको पता लग गया। मुझसे आते ही पूछने लगे — क्या प्रोग्राम है? सिवा इसके कि जो खुदा सुझावे मैं क्या जवाब देती? वहां मैं हातिम अल्वी साहबके घर पर ठहरी थी। कारण हारून रशीद साहब कराचीसे बाहर गये थे। मैंने वहांके मुस्लिम लीडरों मेसमत मुसलमानों व कांग्रेसी बहन-भाइयोंसे मिलकर भर चुन्डीके पीर पगारोस जो जेलमें थे मिलनेकी परवानगी मांगी। जेलमें मुलाकात मिली। रात भर मैं इसी चिन्तामें थी कि बात क्या करूंगी। जब नींद न आई तो जो खुदाने सुझाया सो एक अपीलके रूपमें पीर साहबके नाम लिखा कि यह कुरीती इस्लामके नाम पर चलता है। आप हूरोंसे जो हिन्दू भाइयोंका कतल कर रहे हैं ऐसी अपील करें कि जब तक इस महापापको वे बन्द नहीं करेंगे तब तक मैं एक प्रायश्चित्तके रूपमें भी जेलसे बाहर आना पसंद नहीं करूंगा। और मेरी यह अपील एक मुसलमान बहनके नाते है जो इस मिशनको लेकर जिन्दगीकी बाजी लगानेवाली है। पीर साहबने मेरी इस अपीलको सुना। कहने लगे कि मुझे छोड़ दिया जाय तो मैं उनको बाहर जाकर समझा दूंगा। आप जो कहती हैं वह सब ठीक है लेकिन मैं प्रायश्चित्तके रूपमें जेलमें रहनेकी बात नहीं मान सकता।

मैंने कहा — ठीक है, मेरी तो अपने विचारोंके अनुसार आपसे यह अपील है। आप इसे ठुकरा सकते हैं। आपको जेलसे बाहर निकालना मेरा काम नहीं। वो तो सरकारका है। कारण मुझे जेल-अधिकारीने पहले ही कह दिया था कि पीर बहुत खतरनाक आदमी है। मैं उसे कोई ऐसी आशा न दिलाऊं जिसे सरकार न मान सके और मेरे मिशनमें रुकावट आ जावे।

फिर पीर साहबने कहा — अच्छा तुम लिख दो, मैं उस पर दस्तखत कर दूंगा। मैंने कहा — मैं ऐसा नहीं करूंगी। आप खुद

उठकर फजरकी नमाज और कुरान शरीफ पढ़िये। फिर जो आपके मनमें आवे सो लिखकर भेज दीजिये। आप मेरी अपीलके या मेरे खिलाफ जो कुछ भी भेजेंगे सो मैं दूर भाइयों तक अखबारोंके जरिये पहुंचा दूंगी। मैं तो अपनी जान हथेली पर रखकर आई हूं। इस्लामके नामसे नूरेजांके इस धब्बेको या तो मुझे मिटाना है या खुद मर मिटना है।

चालीस मिनटकी मुलाकात मिली थी। खतम होने पर मैं चली आई। सुबह नौ बजे सिंधीमें पीर साहबके हाथसे लिखा हुआ हुर्रोंके नाम एक पैगाम मिला।* सिंधी भाई कहने लगे यह तो सब तुम्हारी ही अपील मालूम होती है। मैंने कहा मुझे तो सिंधी नहीं आती। और यह अखबारोंमें दे दी गई और नूरेजांकी खबरें आनी भी बन्द हो गईं। मामला महज सियासी था। एक छोटासा मकान था जिसको मस्जिद-गाह कहते थे। जी. एम. सैयद साहबने सब बात सच्ची सच्ची बताई कि बयानात आनेके लिए यह सब झगड़े शुरू कराये गये थे। मुझ तो बयानात ले लिया गया लेकिन साथ ही यह भी फैसला किया

---

* सिंधमें रक्तपातको रोको — भरचुण्डीके पीरका सन्देश

[हमारे संवाददाता द्वारा]

करांची नवम्बर १८। भरचुण्डीके पीर साहबने श्रीमती अमतुस्सलाम जो कि यहां पर शान्तिकी दूत बनकर आई थीं मुलाकातके बाद एक सन्देश दिया। यह सन्देश ईश्वरके नामसे सब मुसलमानोंको दिया है [illegible] सब भूलो कि हिन्दू उसी खुदाके बन्दे हैं जिसके मुसलमान। उन्होंने मुसलमानोंको आगाह किया कि अगर मुसलमान यह समझते हैं कि हिन्दुओंका खून करनेसे उन्हें बहिश्त मिलेगा तो यह सोचना गलत होगा [illegible] करना इस्लामके उसूलोंके खिलाफ है। मुझे उस समय [illegible] तक कि रक्तपात बन्द हो जायगा। आखिरमें उन्होंने [illegible]

[illegible]

गया कि इस झगड़ेका फैसला ट्रिब्यूनल करेगा जिससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं होगा। अब मैं मुसलमानोंसे कहता हूं कि ऐसा मत करो तो वे मेरा ही खून करनेको तैयार हो जाते हैं और कहते हैं कि पहले तो इस्लाम खतरेमें है ऐसा कह कर तुमने हमें उकसाया और अब वजीर बन गये तो कहते हो कि कुरेशी बन्द करो। मैंने कहा अगर ऐसी गलती हुई है तो वजारत छोड़िये और इस्लामके नामसे मुसलमान भाइयोंको समझाइये कि हमको आपसमें मिलकर रहना है। जितना आज तक खून बहा उसका दुःख प्रेमभरे पश्चातापसे मिटाया जा सकता है। सैयद साहबने कहा ऐसी मेरी ताकत नहीं। इस दरमियान जो भी सियासी मामले कुरेशीसे संबंध रखनेवाले मेरे सामने आये उनके बारेमें मैंने बापूजीको ठीक सर्कोके एक पत्रमें लिख दिया और इतना जरूर लिखा कि मौजूदा हालतमें जब तक कुरेशीके सब झगड़े साफ न हो जावें तब तक सिंधमें आप व्यक्तिगत सत्याग्रह करनेकी इजाजत न दीजिये। इस पर अचानक बापूजीका तार आया सिंध सत्याग्रह बंद करना है।

उसी रोज सिंधके झगड़ोंको सुलझानेके लिए मौलाना आजाद वहां पहुंचे और यह तार देखकर वहांके कांग्रेस अधिकारी और मौलाना साहबको आश्चर्य हुआ। मुझे बुलाकर मौलाना साहबने कहा कि मैं भी इसी रायका हूं लेकिन तुमने जरा जल्दबाजी की। मैंने कहा मेरी जल्दबाजीका तो सवाल ही नहीं। मैंने तो बापूको रिपोर्ट भेजी और उन्हें जो निर्णय लेना था सो उन्होंने किया। मैं तो यह भूल भी गई थी और इसकी आशा भी नहीं रखी थी। मेरी इन सारी कोशिशोंकी रिपोर्ट सुनकर मौलाना साहब खुश हुए और वापिस उनकी कोशिशोंके नतीजेकी राह देखनेकी हिदायत की। उधर बापूजीका तार आया Do as Maulana says.

मौलाना साहबके जाते ही दो वजीरोंने इस्तीफे सौंप। सैयद साहब अपनी गलतीको महसूस कर रहे थे कि पहले तो मुसलमानोंको यह कहकर भड़काया कि इस्लाम खतरेमें है मंजिलगाह तुम्हारी है उसके बाद खुद वजीर बन गये और मुसलमानोंको हिन्दुओंसे

खून करनेसे रोकनेकी शक्ति खो बैठे। इस सियासी मामलेके बाबतमें उन्होंने तुरन्त इस्तीफा दे दिया और मुझसे कहने लगे   लो बहन तुम्हारे कहनेके मुताबिक कर दिया। वकालत छोड़ दी है। मैंने न घरवालोंसे पूछा और न दोस्तोंसे सलाह की। जैसे ही मौलानाने इस्तीफा मांगा मैंने तुरन्त दे दिया। खैर! सियासी मामलेका धर्मसे कोई सम्बन्ध नहीं था। मौलाना साहब मंत्रि-मंडलमें हेरफेर करनेके बाद जब जाने लगे तो उन्होंने मुझे बुलाया और बहुत कदरदानीकी भाषामें कहने लगे तुमने जो काम किया सो बहुत अच्छा किया। तुम मेरे साथ पू. बापूजीके पास चलो। हम उन्हें सब हालात बतायेंगे। लेकिन मैं पू. बापूजीकी इजाजतके बगैर कैसे जा सकती थी? लेकिन पू. बापूजीका तार आ गया इसलिए मुझे जाना पड़ा। बीमार भी पड़ी।]

सेवाग्राम, वर्धा,
१-१०-४

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला है। मौलाना साहबसे बात हुई है। बात यह है कि मेरा खत नहीं देखा है। लेकिन (तू) मेरे नामसे गई है मेरे कामके लिए और मेरी बेटीकी हैसियतसे। और क्या चाहिये? उनके वहां ठहर सकती है तो अवश्य ठहरेगी।

मैं अच्छा हूं। और (बातें) प्यारेलाल[1] से।

बापूकी दुआ

१ गांधीजीके मंत्रियोंमें से एक। अब गांधीजीके देहान्तके बाद उनकी जीवनी लिख रहे हैं।

२७६

सेवाग्राम, वर्धा,
११-११-'४

बेटी

तेरा तार मिला, खत मिला। हां, तेरे भाई[1] तो अच्छे हैं ही। तेरी तबीयत अच्छी रहती होगी। तूने तार मांगा है। अब तो कुछ जरूरत नहीं है। काकी[1]को लिखा था और बारीको भी। यहां तू अच्छा काम ही करेगी। सबको सुनना। बात कम करना। मेरी तबीयत अच्छी है। अमीनाबाई[2] अच्छे हैं। इस्लाम बी[3]का सब हो गया है। जमी-दासको बुखार नहीं है। तेरी गैर-हाजिरी मैं महसूस करता हूं।

बापूके आशीर्वाद

२७७

बेटी

तेरे अम्मी बाबाकी इन्तजारीमें हूं। जमशेदजी[4] का खत आया है वे चिन्तित हैं। प्यार के खत आते हैं। सब ठीक चल रहा है।

बापूकी दुआ

---

१ मेरे भाई।

२ लीलावती आसरके भाई, कुछ समयके लिए सेवाग्राम आश्रममें रहने आये थे।

३ सेवाग्राम गांवकी मुस्लिम बहन। इन्हें अपनाकर बादमें कस्तूरबा विद्यालय [illegible] ([illegible]) में पढ़ाईके लिए भेजा गया था।

४ कराची कॉर्पोरेशनके मेयर।

२७८

सेवाग्राम वर्धा
१४-११-४

बेटी

तेरे बारेमें तो अब अखबारोंसे पता चलता है। तेरे खत बादमें आते हैं। तू ठीक वक्त पर पहुची है।

बापूके आशीर्वाद

२७९

१५-११-४

बेटी

तेरा लेख सिंध ऑब्जरवर में है। वह मेरे पास पड़ा है। फुरसतसे पढूंगा। ईश्वर तेरे साथ है।

बापूकी दुआ

२८०

बेटी

तेरा खत मिला। तेरा रोजा मुझे पसन्द नहीं है। लेकिन यहां बैठा मैं दखल नहीं दूंगा। अनशन बगैर मेरी इजाजतके नहीं करेगी। मौलाना साहब वहां हैं तब तक उनकी बात माननी होगी। जब तक तू लोगोंको मिलनेका काम कर रही है, अनशनकी दरकार नहीं है। ऐसा होता है यह बताता है कि तू (जो) रोजा रखती है उसमें खुदाका हाथ नहीं है।

बापूकी दुआ

१५-११-४

बेटी

तारो लखाण सिंध ऑब्झरवर मां छे। ते मारी पासे पड्यु छे। नवराशे ए वांचीश। ईश्वर तारी साथे छे।

बापुनी दुआ

२८१

तार

१६-११-'४०

सिंध सत्याग्रह बन्द करता हूं। तेरा खत बिलकुल अच्छा है। जवाब लिखता हूं। प्यार।

बापू

16-11-40

Am stopping Civil Disobedience Sind. Your letter quite good. Writing reply Love.

Bapu

[नीचेका तार मौलाना आजादने गांधीजीको सेवाग्राम-वर्धा उस समय किया था जब उन्होंने तार द्वारा मुझे सिन्ध सत्याग्रह बंद करनेकी सूचना दी थी।]

१७-११-'४०

सत्याग्रहके बारेमें अमतुस्सलामको लिखे आपके तारसे चकित हुआ। अभी यहां हूं। भविष्यके कार्यक्रमके बारेमें सोचूंगा और आपको बताऊंगा। अभी यहां कोई निर्णय नहीं किया है। यहांसे कोई तार-चिट्ठी आपको मिले तो कृपया मुझे बताइयेगा।

अबुल कलाम आजाद

17 11 40

Surprised at your t legram Amtussalam about Satyagraha Am present here and shall consider about fi ture programm and inform you. No decision made here yet Please refer to me if you get any communication from here

Abul Kalam Azad

२८२

सेवाग्राम वर्धा
१९-११-'४

बेटी

तेरा खत मिला। तार भी। मैंने तारका जवाब दिया है। तेरे सब खत पूरे पढ़ता हूं। अब तो बात दूसरी है न? तेरा खत सुन्दर है। तेरी तरतीब भी सुन्दर है। तू ठीक काम चला रही है। फाका तब और कितना देखेंगे। कोई जल्दी नहीं। जब तक काम हो सके करती रह। जब कुछ बाकी नहीं होगा तब जरूरत पड़ने पर फाका शुरू करेगी। हिन्दूओंकी बात ठीक करती है। देखा जायेगा। तू सवाल बराबर समझ गई है और बहादुरीसे काम ले रही है।

पीर साहब[1] को उत्तर तू ही देगी। बादमें जवाब देना पड़े तो मैं दूंगा। गुलजार[2] या कुरेशीकी मदद चाहिए तो बुला सकती है।

बापूके आशीर्वाद

२८३

सेवाग्राम वर्धा,
१८-११-'४

बेटी

तेरा खत मिला है। सब बातमें आनन्द[3] को भेजा जायेगा। अखबारकी गालियां कुछ सुनी। हम तो जो करेंगे ईश्वरके ही नामसे करेंगे। किसीके सामने (विरोधमें) तो करना ही नहीं है। हिन्दू पागल बनेंगे तो देखा जायेगा। जो कुछ करेगी मौलाना सा० से मशविराके बाद करेगी। वे वहांसे जायें तब दूसरी बात। हाशिम[4] के यहां गई थी अच्छा ही हुआ। खामोशी तो रखेगी ही। गालियोंसे

१ भरचुण्डीके पीर।

२ अहमदाबादके कांग्रेसी कार्यकर्ता।

३ आनन्द हिंगोरानी सिंधी हैं। साबरमती आश्रममें रह चुके हैं।

४ हाशिम अली। कराचीके नेशनलिस्ट मुस्लिम थे।

घबरायेगी नहीं। टेलीफोन पर आजमा तो सही। मैं सुन सकूंगा या नहीं यह तो नहीं जानता हूं। साथमें कुरेशीका खत है।

बापूके आशीर्वाद

२८४

सेवाग्राम वर्धा
२१-११-४०

बेटी

तेरा खत मिला। तार भी। रोजेके बारेमें मैं सोच रहा हूं। जब तक कुछ भी काम है तब तक संयम पालना अच्छा है। लेकिन यहांसे मैं हुक्म नहीं निकालूंगा। तेरी जबान खुली है। मुसलमान तेरी बात सुनते हैं। हिन्दू तो सुनेंगे ही। इसलिए हाल तो प्रचार-काम ही कर। जब सब काम खतम होगा तब देखेंगे क्या करना चाहिये। तेरी तबीयत नहीं बिगाड़ेगी। बाकी ने खत लिखा है। तेरे बारेमें जहरी चीज अखबारमें थी। शायद तुझे भी भेजा होगा। मैंने बाकीको लम्बा जवाब भेजा है।

बापूकी दुआ

२८५

तार

२५-११-४०

दो खत और तार मिले। सावधानीसे चलो। उपवासकी जल्दी नहीं। तुम्हारी हाजिरीका असर पड़ता है। जब तक मौलाना वहां है उनके मार्गदर्शन पर चलो। कुरेशी और जोहराको क्यों चाहती हो? उम्मीद है तुम अच्छी हो। प्यार।

बापू

---

१ मेरे भाई।

25-11 40

Received two letters telegram. Move cautiously No h rry abo t fasting Your presence is having ffect. While Maulan. there be guided by him. Why want Quresh and Zora. Hope keeping well. Love.

Bapu

२८६

सेवाग्राम वर्धा
२४-११-'४

बेटी

मैं कल इतने कामोंमें फंसा था कि तुझे नहीं लिख सका। तेरा तीस सफाका खत पूरा पढ़ लिया। (तेरे) सब खत रखे जाते हैं। आजके टेलीफोनकी बातमें मैं जैसा समझा ऐसा मैंने जवाब दिया। मेरा कहना था कि अब कुरैशीको और बोहराको न भेजा जाये। जल्दी फाका नहीं करना है। मौलानासे पूछकर करना है। जब जरूरत होगी तब कु (कुरैशी) और बो (बोहरा) को भेजूंगा। तूने पैसेका कुछ कहा। मैं जब दरकार (जरूरत) होगी पैसे भेजूंगा। मुझे लिख क्यों और कितने चाहिये। तुझे और कामोंमें दखल देना ही नहीं है। तेरा काम फिजा साफ करनेका है और जब खून बन्द न हो सके तब फाका करना है। कैदी छूटे न छूटे यह दूसरी चीज है। लेकिन सीधी बात ही यह है कि सब देखकर मैं कहूं यह करना है। वहां सबमें शान्तिको लाना तेरा काम है। सियासी कामोंमें काम बन्द करना।

बापूकी दुआ

२८७

सेवाग्राम वर्धा
२५-११-'४

बेटी

तेरा खत मिला। तू बहुत जल्दी कर रही है। अख्तर और हलीम दोनोंको भेजूंगा अगर वे तेरा काम कर सकें तो। तू शादी-कामके लिए नहीं गई है। अगर शादी गरीब मुसलमानोंमें चले तो ठीक है। तेरी मांगोंमें देख तो नहीं कि कौन है और कैसे गरीब हैं? तेरा काम तो एक ही है — खूरेजी रोकना। हिन्दू-मुसलिमोंके सियासी झगड़ोंमें पड़ेगी तो तेरा काम बिगड़ा समझना। आनन्दके खत तूने देखे हैं। जमगेरसीके भी। उन लोगोंके बीचमें और तेरे बीचमें

मतभेद हो गया है क्या? अगर ऐसे लोगोंसे तेरा मतभेद ही क्या तो मैं घबरा जाऊंगा। हाकिम क्या कहते हैं? कैसे भी हो मौलाना साहबकी बातको समझ ले। वे यहां आवेंगे। उनका सामना करके तो हम कुछ नहीं करेंगे। प्या अब तो गुरुवारको आवेगा।

बापूके आशीर्वाद

२८८

तार

२७-११-'४

तार अभी नहीं मिला। मौलानाने जो मना किया हो वह मत करो। उनसे मशविरा कर रहा हूं। सूचनाओंकी राह देखो। फिक्र न करते हुए खामोश और शांत रहो।

बापू

२८९

तार

२८-११-'४

मौलानाका संदेश मिला। तुमको बुला लेनेके लिए मुझे निश्चित सलाह देते हैं। इस हालतमें तुरन्त आ जाओ। प्यार।

बापू

27 11 40

T legram not yet received. You must not do thi gs prohibited by Maulana. Am conferring with him Await instructions. Remain silent quiet without worry

Bapu

28-11 40

Re ei ed Maulana message peremptorily ad vising m re all you Unde ircumstances come immediat l Lov

Bapu

२९०

तार

२८-११-४

अभी लंबा तार मिला। मेरा जाना असंभव है। तुरन्त लौटो जिससे मौलाना आयें तब यहां हाजिर रह सको। मैं अब अच्छा हूं।

बापू

२९१

[बापूके बुलाने पर मैं सिन्धसे सेवाग्राम लौट आई थी। उन्होंने मौनवारके दिन मुझे यह लिखा था।]

१-१२-४

बेटी

ज्यों ज्यों तेरे कामका खयाल करता हूं तेरी कदर बढ़ती है। मुझे अच्छा लगता है। तुझे तेरा काम अपनी जिम्मेदारी पर करना चाहिये। सच है कि तू तेरा मिशन लेकर मेरे पास आई थी और तेरा ही मिशन लेकर सिंध गई थी और जायगी। मेरी सलाह तुझको जरूर मिलेगी। लेकिन जो कुछ करेगी वह तेरी जिम्मेदारी पर। प्रमरामदास और दूसरे जिन पर तेरी निगाह पड़े उनसे मशविरा अवश्य करना। तू जब चाहे तब जा सकती है। मन (तुने) बुला लिया सो तो अच्छा ही हुआ। जहां (तक) हो वहां तक डॉ. दासकी सलाह लेना। यहां किसीके (साथ) तुझे भेजना है। न भेजना (है)। मेरी चोटीसी सवारी भी मोह छोड़ दे। नहीं छोड़ सकती हूं तो मत कर। लेकिन जितनी कम करेगी उतना खर्च कम होगा। मैडम वाडिया यहां रहती तब तक उनके साथ (तू) रहेगी। उनसे मशविरा करेगी। उनसे काफी मदद मिलेगी।

8-11 40

Received now long telegram. Impossible my going. Return immediately so as be here when Maulana comes. Am well now

Bapu

अब सिंधमें क्या करना? तुझे कैदियोंका मंजिल-माइका सब छोड़ना चाहिये। सबकी बात तो सुननी होगी। लेकिन यह मामला कोर्ट दरबारका है। सिंधके मुसलमानोंको तुझे बताना है कि सियासी और दूसरे कामोंमें खून या जबरदस्ती या झूठसे इन्साफ नहीं मिल सकता है। तेरा सिंधमें जाना और जान तक देना सिर्फ खूनको रोकनेके लिए है भले मुसलमानोंको इन्साफ मिलता हो या गैर इन्साफ। यह मेरा हेतु तुझे भेजनेमें था और अब भी है।

मेरे ऐसे खयाल होते हुए भी तुझे मुझको ज्यादा समझानेका नहीं है (मुझसे) ज्यादा मशविरा करनेका भी नहीं है। मैं कुछ सलाह नहीं दे सकूंगा क्योंकि सियासी बाबतमें मुझे मौलानाकी बात सुननी होगी और वे कहें ऐसा करना होगा। खूनके बारेमें उनसे मशविरा करनेकी जरूरत नहीं रहती है। मुझे लगता है सही कि तुझे मौलानाका विरोध करके कुछ नहीं करना (चाहिये)। मुस्लिम लीगवालोंसे मिलना उनकी बातें सुनना उनसे मोहब्बत करना तेरा फर्ज है। मैं मानता हूं कि उनको छोड़कर हिं मु ऐक्य नहीं बन सकता है।

खुदा तेरा रास्ता साफ कर दे। वही एक रहनुमा है और तू, मैं हम सब उसके बन्दे हैं। बाकी सब झूठ है।

बापूकी करोड़ों दुआएं

२९२

मौनवार,
१६-१२-'४

बेटी

अगर तू उसूलसे चलना चाहती है तो उसूलमें मेरी सेवाको जगह ही कहां? उसूलसे तो तेरा सब समय शास्त्रीजी[1] की सेवामें ही जाना चाहिये। मैं तो जो करता हूं बापकी हैसियतसे। मां भी नहीं क्योंकि मा होनेकी तमन्ना रखता हूं। और बापकी हैसियतसे इसलिए पुरुषकी मर्यादाएं।

बापू

१ परचुरे शास्त्री जिन्हें कुष्ठरोग हुआ था और जो सेवाग्राम आश्रममें रहते थे।

२९६

[बापूसे मैंने कहा आप मुझे सिन्ध जानेकी इजाजत नहीं देते हैं तो आपके दिलमें कुछ शक होगा। मैंने क्या पाप किया है?]

बेटी

तेरा खत बहुत खराब है। मैंने तो शक किया ही नहीं है। इसलिए यही तेरा पाप है तो पाप है कहो। तू तेरे गुनाहको जानती ही नहीं है। मैं कहता हूँ कि जब तक तू साफ नहीं हुई है तुझे कामयाबी नहीं होगी। इसमें शुद्ध सत्य है। मौलानाके पास जाना फिजूल है। तू चाहे या न चाहे मैं तो जयरामदासको लिखूँगा। तू इजाजत दे तो मैं चोइथराम और काजीसे बात करनेको तैयार हूँ। तुझे फाका करना है तो यहाँ नहीं हो सकता है। तेरी शुद्धिका उपाय फाका नहीं है।

बापू

२९७

(मौनवार)

यह सब बिलकुल निकम्मा है। मेरी राय पर मैं कायम हूँ कि तू ऐसे कामोंके लिए लायक नहीं है। तेरा अभ्यास नहीं है। मौके पर (तू) खामोशीसे घर बैठकर ही कार्य कर सकेगी। दरमियान जो खिदमत हो सके वह करके मरनेकी लियाकत बना सकेगी। तुझे अगर इसमें काम करना है तो मैंने कहा ऐसे मुसलमानोंमें रहकर ही काम कर सकेगी। मेरेसे बहस मत कर। समझ आये तो कर। मुझे गुनाहोंकी भी जरूरत नहीं। मैंने लिखा वह (तू) समझ तो सही। मेरा मतलब है कि कुछ लिखा ही न जाय। मेरी बात तेरे गले न उतरे, तो दिल चाहे सो कर। उसकी इत्तला मुझे क्या देना? अब मेरा वक्त न ले।

२९९

[भाई अब्दुल वहीदखाने प्रेमभरे गुस्सेमें बापूजीको लिखा था कि अमतुस्सलामको हरिजन बच्चोंके मुँह-हाथ धोना ज्यादा जरूरी है या मांकी कुछ सेवा करना भी उसका फर्ज है? तो आप लिखिये या उसे फौरन भेजिये। बापूजीने मुझे तुरन्त जानेका हुक्म दिया।]

सेवाग्राम

बेटी

तू क्यों खत लिखेगी? ठीक ही रहेगी तो तेरे खतसे भी मुझे अधिक मिला समझूँगा। वहीदका गुस्सेका खत मुझे मिला। वह अगर तूने देखा है तो तुझे उसके दुःखका अन्दाजा मिल सकेगा। मुझे उसके गुस्सेसे दुःख नहीं हुआ। उसको ऐसा गुस्सा करनेका हक था। अब मेरी सलाह है कि मांकी सब व्यवस्था करके और तू पूरी अच्छी होकर ही आयेगी।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है।

खानसाहब तेरे बारेमें लिखते हैं।

बापूके आशीर्वाद

३००

[मांके बीमार होने पर बापूने मुझे मांके पास भेजा था।]

सेवाग्राम वर्धा
१४-१-'४१

बेटी अमतुस्सलाम

मैंने तुझे दुःख तो दिया लेकिन मैंने ठीक ही किया। रामेश्वरका[1] देवा[2]का और आनन्दका खत तेरे पर है। मां अच्छी होगी। रास्तेमें कुछ तकलीफ नहीं (हुई) होगी। सुशीला मिली होगी। तार दिया था।

बापूकी दुआ

---

१ रामेश्वरजी पोद्दार धूलियामें रहते हैं और गांधीजीके भक्त हैं।

२ देवदास गांधी बापू उन्हें देवा भी कहते थे।

३०१

सेवाग्राम वर्धा
२७-१-'४१

बेटी

तेरा खत तो इस वक्त मिला ही नहीं। मेरे खत तुझे मिले या नहीं इसका भी पता नहीं। लेकिन अच्छा है तू गई, मांको बंबई लाई और तुम भी अच्छा है। यही मुझे कनुने तेरे टेलीफोनके बारेमें कहा। मेरी सलाह है कि तू और मां अच्छी हो जा। मांकी सेवा कर और बादमें आ। कभी भी आयेगी (तो) आश्रमका सब काम करेगी। मेरे पास मेवा नहीं। जैसा हम करते हैं ऐसी तू भी। बराबर सीखकर आयेगी तो मुझे अच्छा लगेगा। मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी है। मनुबहन[1] और रामना[2]का बुखार कम है लेकिन चलता है।

बापूकी दुआ

३०२

सेवाग्राम वर्धा
२८-१-'४१

बेटी

तेरा खत मिला। मने तुझको तीन खत लिखे थे। मेरा कलका खत मिला होगा। बीमारीकी हालतमें यहां आकर क्या करेगी? और अब तो शान्ति आश्रम[3]को लिख रही है। देखो क्या होता है।

बापूकी दुआ

१ मनु गांधी — गांधीजीके भतीजे जयसुखलाल गांधीकी बेटी जो गांधीजीके सेवाग्राम आश्रममें थी। बादमें आगाखान महलमें कारावासमें और नोआखालीकी यात्रामें लेकर आखिर तक गांधीजीके साथ रही।

२ रामनारायण चौधरी राजस्थानके कार्यकर्ता हैं। कुछ समय साबरमती और सेवाग्राम आश्रममें रहे थे। उन्होंने नवजीवन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कई किताबोंका अनुवाद किया है।

३ शान्ति आश्रम बम्मनहल्ली जिल्ला।

३०३

सेवाग्राम वर्धा,
११-१-'४१

बेटी

तूने वोहराको बम्बई बुलाया है उसे मैं बड़ी गलती मानता हूं। तेरा खत अकबरसे मुझे बतलाया। वोहराको अगर अपील नहीं जाना है तो भले यहां आवे। वोहरा इन्दौरमें रहना चाहे तो रहे। बम्बईमें तो नुकसान ही है। मैं अच्छा हूं। रा कु (राजकुमारी) आज विद्यार्थी-सम्मेलनके लिए बनारस जा रही है। मनुका बुखार अब तक नहीं गया है।

बापूके आशीर्वाद

३०४

[मैं हिन्दू-मुस्लिम-एकताके सिलसिलेमें महम्मदअली जिन्नासे मिली थी। उनका कहना था कि गांधीजी हिन्दुओंके प्रतिनिधि हैं।]

तार

१-२-'४१

किसीसे मिलनेको मैंने तुझे नहीं कहा है। मैं हिन्दुओंका प्रतिनिधि नहीं हूं न हिन्दुओंकी ओरसे बोल सकता हूं। तेरा पहला काम अच्छा होनेका है। प्यार।

बापू

1-2 41

I h r not asked you see anybody Am no represent t e H nd nor can speak for Hindus. Your fi t busines Is to be well Love

Bapu

३०५

सेवाग्राम
१-२-'४१

बेटी

तुझको तार दिया है। मेरी तरफसे तू क्या आशा कर सकती है? मेरे नामसे कुछ भी काम नहीं हो सकता है। तू बिलकुल समझती नहीं है। तू जब तक निरोगी नहीं होगी तब तक तू एक भी कामको आखिर तक नहीं ले जा सकेगी। सब चीज छोड़कर पहले तो बिलकुल अच्छी हो ले। पीछे सब कुछ।

बापूकी दुआ

३०६

सेवाग्राम वर्धा
२-२-'४१

बेटी

तेरा तार मिला। मैंने तार कल दिया। पत्र (कार्ड) भी लिखा। मेरी कुछ बात (चीज) छूट नहीं सकती। मैं ठीक रहता हूं। मेरा एतबार करणीय है। तू अच्छी हो ले।

बापूकी दुआ

चीज न बदला = समझमें न आना। जिन्नाकी पाकिस्तानकी मांगके बारेमें चर्चा चल रही थी। उसके बारेमें बापूने लिखा है।

२०७

[मैं सेवाग्राम आश्रममें थी तब मुझसे बातें करते हुए ये वाक्य बापूने लिखे थे]

२-४-'४१

अहिंसात्मक आचारमें विरोधीके प्रति — चाहे वह पिता हो या और कोई — सहिष्णुता और उदारताकी अपेक्षा होती है। इससे उलटा व्यवहार एक प्रकारकी हिंसा होगी।

*

हमारी बहुतसी कठिनाइयां हमारे अज्ञानसे पैदा होती हैं।

*

अनियंत्रित भावना उतनी ही बेकार है जितनी निरंकुश भाप।

बापू

2-4-41

Non-violent conduct requires toleration of and even generosity towards the opponent whether he is father or any other Contrary conduct is a species of violence

*

Most of our difficulties arise from our ignorance.

*

Unregulated sentiment is waste like unharnessed steam

Bapu

३०८

११-५-'४१

चि. अमतुस्सलाम

शर्मा फोन किया करता है (कि) अ. स. को आने दो। वह कहता है अ. स. कहती है, बापूकी इजाजत लो और मैं आऊं। यह ठीक नहीं लगता है। वहां रहनेका धर्म है तो रही है। ऐसी समझ भी थी। तो कैसे वह सकती है इजाजतसे आऊं? मैं तो पटियाला जाती हूं। उसमें मिलना है तो रास्तेमें किसी स्टेशन पर मिल लो। मैंने तो कहा अगर रास्तेमें जायें और वहां दो चार रोज ठहरें।

बापूके आशीर्वाद

३०९

[आगाखां महलसे छूटनेके बाद तुरन्त बापूने यह तार दिया था। इसे पाने पर कस्तूरबा सेवा मंदिर, बोरकामता (पूर्व बंगाल) का काम मैंने शुरू किया था।]

तार

१३-५-४४

धीरे प्रगति करता हूं। चिन्ताका कोई कारण नहीं। दूनी शक्तिसे तुम अपना उत्तम काम जारी रखो ऐसी अपेक्षा करता हूं। प्यार।

बापू

13-5-44

Slowly progressing No cause anxiety Expect you continue your excellent work with redoubled energy Love

Bapu

२१०

पू
२२-५-'४४

प्यारी बेटी

तेरे तार और खत मिले हैं। प्यारेलालने जवाब दिया है। कुछ लोगोंको ऐसे खत लिखनेकी छूट मुझे मिली है। इसलिए यह लिखता हूं। तेरा शरीर काम दे तो वहां भी सेवा हो सके वह करती रह। अगर शरीर काम न दे तो सेवाग्राम आ। मुझे ठीक शक्ति आ रही है। तेरेसे तो मेरी तबीयत अच्छी ही मानी जायगी। लेकिन मुझे कौन काम करने देगा और मैं काम करनेवाला भी कहां हूं?

कान्ति कल यहां आया। मजेमें है। यहांसे दो तीन दिनमें मैसूर लौटेगा।

बापूके आशीर्वाद

कान्तिका प्रणाम।

पू
२२-५-'४४

प्यारी बेटी

तारा तार अने कागळ मळ्या छे। प्यारेलाले जवाब आप्यो छे। थोडाने आवा कागळो लखवानी छूट्टी (छूट) मळी छे। एटले आ लखुं छुं। तारुं शरीर काम आपे तो त्यां जे सेवा थाय ते कर्यां करजे। जो शरीर काम न आपे तो सेवाग्राम आवजे। मने ठीक शक्ति आवती जाय छे। तारा करतां तो मारी तबियत सारी ज गणाय। पण मने काम कोण करवा देय ने हुं काम करुं एवो पण क्यां छुं?

कान्ति काले अहीं आव्यो। मजामां छे। अहींथी बे त्रण दिवसमां पाछो मैसूर जशे।

बापुना आशीर्वाद

कान्तिना प्रणाम (उर्दू लिपिमां)।

श्यामलजी लड़कीके बारेमें क्या किया वह लिखना। मुझे शक है कि तेरे से जाकर श्यामलजी या उस लड़कीकी सच्ची सेवा हुई है। मेरी तबीयत ठीक है।

बापूकी दुआ

११२

पंचगनी
२१-७-'४४

बेटी अमतुस्सलाम

तेरे खत मिले हैं। मुझमें हुक्म देनेकी हिम्मत नहीं रही। मैं तो इतना ही कहूंगा कि जो तुझे ठीक लगे वह कर। जब इलाजके लिए आश्रम आना हो तब आ जाना। जहां सेवा करनी हो वहां कर। मुझे मालूम नहीं कि तुझसे कौनसा काम लूं। सब जो कुछ दें उससे संतोष मानना यह मेरी वृत्ति है। आश्रममें रहनेसे जो संतोष माने वे वहां रहें। बाहर सेवा ज्यादा हो सके तो वहां करें।

बापूकी दुआ

पंचगनी
२१-७-'४४

बेटी अमतुस्सलाम

तारा कागळ मळ्या छे। मारामां हुकम आपवानी हिंमत नथी रही। हुं तो एटलुं ज कहुं के जेम तने ठीक लागे तेम कर। ज्यारे उपचार माटे आश्रम आववुं होय त्यारे आववुं। ज्यां सेवा करवी होय त्यां करवी। मने खबर नथी के तारी पासेथी कयुं काम लउं। सहु जे आपे तेमांथी संतोष मानवो ए मारी वृत्ति। आश्रममां रहीने जे संतोष माने ते त्यां रहे। बहार सेवा वधारे थाय तो त्यां करे।

बापुना दुआ

२१४

[भगीरथजी कानोड़िया कस्तूरबा सेवा मंदिर, बोरकामताके सबसे पहले प्रधान थे। उन्हें बापूने लिखा था कि अमतुस्सलामका बजट देख लें और पैसेके कारण उसका काम रुकना नहीं चाहिये।]

सेवाग्राम
२९-८-'४४

बेटी अमतुस्सलाम

कलके खतमें मैं भूल गया था जो तूने मांगा था सो कहलेना। भगीरथजी लिखते हैं कि पैसेके अभावसे काम रुकेगा नहीं। और सब खैर है। पारनेरकर[1] अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

२१५

सेवाग्राम
११-८-'४४

बेटी अ सलाम

तेरे बगैर टिकटके खत पर साढ आने लगे। ऐसी क्या जल्दी थी? ऐसा खर्च करना गरीबीकी निशानी नहीं है।

बेटी न लिखा यह भी याद नहीं है। कलम पर क्या थी लिखा। बेटी और चि में मैं फर्क नहीं मानता। बहन लिखा होता तो फर्क होता। लेकिन बहनकी दवा क्या?

---

१ एक आश्रमवासी जो गोपालन-विभागके निष्णात हैं।

सेवाग्राम
११-८-'४४

बेटी म स

तारा टीकट विनाना कागळ उपर सात आना बेठा। आवी शी उतावळ? आम खरच करवु गरीबीनी निशानी न कहेवाय।

बेटी न लख्युं ए पण याद नथी। कलमे जे चड्युं ते लख्युं। बेटी ने चि मा फेर नथी गणतो। बहेन लख्युं हत तो भेद पडयो गणात। पण बहेननुं औषध कोण करी शके?

मुझे पूछे बिना तो चाहे सो काम कर सकती है। फिर मेरी नाराजगीका सवाल ही नहीं रहता। तूने पूछा तो मैंने कहा कि क्या ठीक था। तू जो काम करती है उसमें हिन्दू-मुस्लिम सवाल आ जाता है।

उन मौलवीकी राह देखी। लेकिन वे आये ही नहीं। तूने गलती की थी यह स्पष्ट हो गया। लेकिन तेरी गलती होने पर भी मैंने मौलवीको कहला भेजा था कि जरूर आवें।

भगीरथजीकी मारफत भेजा हुआ मेरा खत मिला होगा।

खर्चके लिए हर माह रु ७५ सुधीसे लेना। भाइयोंसे मांगना नहीं। व सूत जो भेजें वह आश्रमको भेज देना।

बापूकी दुआ

मने पूछ्या विना तो गमे ते काम करी शके छे। पछी मारी नाराजगीनो सवाल ज नथी रहेतो। तें पूछ्युं तो में कह्युं शुं बरोबर हतुं। तुं जे काम करे छे तेमां हिंदु मुस्लिम सवाल आवी जाय छे।

पेला मौलवीनी वाट जोई। पण ते आव्या ज नहीं। तें भूल करी हती ए स्पष्ट थई गयुं। पण तारी भूल छतां में मौलवीने कहेवडाव्युं हतुं के जरूर आवे।

भगीरथजी मारफते मोकलेलो मारो कागळ मळ्यो हशे।

खर्चमां दर माने रु ७५ सुधीनो उपाडजे। भाईओनी पासे मागतो नहीं। पोतानी मेळे मोकले ते आश्रम मोकलजे।

बापुनी दुआ

२१६

सेवाग्राम
४-९-'४४

बेटी

रेशमकी मछेरी (मसहरी) नहीं चाहिये। गुड़ मिला। दस्तखत लेनेको जब मैं बहुत काममें हूं तब जितेन बाबू आये हुए हैं। नियम वगैराका देखा जायेगा। तू बीमार हो गई है ऐसा सुशीलाने सुनाया। अब क्या किया जाये? इससे वहां पड़ी रहेगी तो ठीक नहीं होगा।

बापूकी दुआ

२१७

सेवाग्राम
१७-१०-'४४

बेटी अ स

तेरा खत मिला। अच्छा है। तेरी सेहत अच्छी है उसके लिए धन्यवाद। जितनी अच्छी होगी अच्छा काम करेगी। जो पैसा चाहिये सब मैं भेज सकता हूं अगर भगीरथजीसे सर्टिफिकेट भेज देगी तो। बाके फण्डमें से भी भेज सकता हूं। उस बारेमें कुछ विधि करनी पड़ेगी। उसका बजट चाहिये। गायके बारेमें तो सतीशबाबू भी लिख सकते हैं। खादीके बारेमें भी वे बता सकते हैं। वे ट्रस्टी भी हैं।

बापूके आशीर्वाद

अकबर गुजरातके देहातमें गया है। जोहरा काममें नर्सका काम सीख कर अकबरके पास जायगी।

---

१ जितेन्द्र चक्रवर्ती बंगाल चरखा-संघके मंत्री और कस्तूरबा सेवा मंदिरके सहमंत्री थे। कस्तूरबा सेवा मंदिरके विधान पर बापूकी मंजूरीके दस्तखत लेनेके लिए सेवाग्राम गये थे।

२ श्री सतीशचंद्र दासगुप्त सोदपुर (कलकत्ता) में खादी प्रतिष्ठानके संचालक विज्ञान-शास्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र रायके शिष्य। गाय पर भी आपने किताब लिखी है।

३१९

सेवाग्राम
१४-११-'४४

बेटी

तेरे दो खत मिले। बहुत अच्छे हैं। उपवास तो ईश्वर भेजेगा तभी आयेगा। उससे मांगनेसे नहीं भेजता। यों घबरानेसे थोड़े ही काम होगा? शरीर संभालकर काम करती रह। सब काम करती रहेगी तो उपवास नहीं आयेगा। लेकिन उपवासके नामसे जो घबरा जाये वे सत्याग्रहका पहला पाठ भी नहीं जानते। जौहरा मजेमें है।

बापूकी दुआ

सेवाग्राम
१४-११-'४४

बेटी

तारा बे कागळ मळ्या। बहु सारा छे। उपवास तो ईश्वर मोकलशे तो ज आवशे। एनी पासे माग (मांग्ये) न मोकले। एम गभराईने काम थोडुं ज थवानुं छे? शरीर साचवीने काम कर्ये जा। बधां काम कर्ये जशे तो उपवास नहीं ज आवे। पण उपवासना नामथी जे गभराई जाय ते सत्याग्रहनो पहेलो पाठ जाणता नथी। जोहरा मजामां छे।

बापुनी दुआ

३२०

सेवाग्राम
१-१२-'४४

बेटी

तू न आई सो अच्छा किया। आजका दिन बड़ा लिखनेका भारी है। कलसे ११ तारीख तक ऐसे कामोंसे आराम* लेना है। मानसिक थकान बहुत हुई है। उसे निवृत्त (दूर) होना है। तेरी तबीयत अच्छी होगी। मकबर खूब काम कर रहा है। उसका एक खत तुझे भेजनेकी कोशिश करूंगा। मेरी फिकर नहीं करना।

बापूके आशीर्वाद

मकबरको एक कागज भेजती।+

३२१

चि॰ अ स

तू ठीक कहती है कि मेरा विश्वास तेरे वचन पर नहीं रहा है। कैसे रहे? मेरा गुस्सा जरा भी नहीं है। मैं तो तेरे प्रति मेरा धर्म क्या है यही सोचता हूं। मैं पैसेकी जिम्मेवारी नहीं उठाऊंगा। बापूजीको तेरा बजट दे दे। वह पास करें तो पैसे मिलेंगे ही। तेरे खर्चके लिए बारीनाको तंग करना मुनासिब नहीं है। दूसरे भाई देवें तो ठीक है। नहीं तो आश्रमवासी बना। आश्रममें जगह है ही। मेरी गैरहाजरीमें तो जरूर। तुझे हवाई किले बनाना छोड़ना चाहिये। जो एक काम ले उस पर कायम रहना।

बापू

बापूने मौन लिया था।
+ मकबरका एक खत भेजा है।

सेवाग्राम
१०-१-'४५

चि. बेटी म. स.

सु. बहिन पर तेरा खत पढ़ गया। यहां आना ही है तो फुरसत मिलने पर आ जा। तू बीमार पड़ती है सो अच्छा नहीं है और हमारे करारके विरुद्ध है। मर जाना कोई आश्चर्य तो नहीं है। ऐसे काम करते रहना मिथ्या मोह है। उसमें से तुझे छूट जाना है। मीटिंगमें तू हाजिर रहती है तो बस। लेकिन यहांसे लोग भेजें और तू व्याख्यान दे यह निकम्मा है। जो तूने हुक्म किया है वही तू मीटिंगको दे।

मफतलालसे* तुझको बगैर शर्तके पैसे भेजे हैं तो उसे लेनेमें यहांसे मैं तो कुछ दोष नहीं पाता। ज्यादा समझनेके बाद कुछ और कहूं तब (तो) दूसरी बात है।

मेरी तबीयतकी फिकर करती है, यह बताता है कि न तू ईश्वरको जानती है न मुझको। ईश्वरको जाने तो समझेगी कि तू, मैं और दूसरे सब उसीके मातहत हैं। मुझे जाने तो समझ कि मैं तो बहुत एहतियातसे रहता हूं तो भी गलतियां बन जाती हैं उसका क्या इलाज? यों भी मेरी तबीयत अच्छी है। किसी हालतमें तुझे फिकर नहीं करना है।

फिर लिखता हूं जब आना है तब आ जा। २६ जनवरीसे तुझे कोई ताल्लुक नहीं। तू तो हमेशा यही काम करती है।

बापूके आशीर्वाद

कुमिल्लाके [illegible] कस्तूरबा सेवा मंदिरको रिलीफ कार्यके लिए एक हजार रुपया बिना शर्त दिये थे। उसके बारेमें मैंने बापूकी राय पूछी थी।

[सर नाज़िमुद्दीन बंगालके मुख्यमंत्री थे। बापू कलकत्ता जा रहे थे और सारे बंगालका दौरा करना चाहते थे। इस बारेमें वे नाज़िमुद्दीन साहबका मानस जानना चाहते थे।]

सेवाग्राम
२-२-'४५

बेटी क स

तेरा खत मिला। तार भेजता हूं। सर ना (नाज़िमुद्दीन) ठीक कहते हैं न? ऊपरवाले हुक्म करें उसकी तामील करेंगे। जो बात छूट गई है उसका हमें नहीं। क्योंकि उसकी जगह नहीं रहती। उनका फर्ज तो यह है कि व कहें गांधी मेरा दोस्त है उसे मैं बुलाना चाहता हूं। क्या आपकी तरफसे रुकावट हो सकती है? वह मिदनापुर और चिटागांग (चटगाम) जाय तो मैं तो जाने दूंगा। ऐसा कहना चाहिये। तुझे हाम तो नहीं रहना है। जब यहांका साफ हो जावे तब यहां आ जाना है। सतीशबाबू और प्र (प्रफुल्ल) बाबू से कहो। वे इजाजत देंगे तब ही तू वहांसे छोड़नेका विचार कर सकती है।

कंचन को आज नहीं लिख सकता।

बापूके आशीर्वाद

१ डॉ. प्रफुल्लचन्द्र घोष बंगालके सुप्रसिद्ध नेता देशके विभाजनके बाद बंगालके मुख्यमंत्री थे।

२ सेवाग्राम आश्रमनिवासी श्री मुन्नालालजीकी धर्मपत्नी।

सेवाग्राम
११-१-'४५

चि. अमतुस्सलाम और चि. कंचन

तेरा खत मैं ठीक समझा था। प्र. बाबू फिर भी लिखते हैं म. सा. को १ महीने रहने दो बादमें भेज दूंगा। अमतुस्सलामी कुछ लिखते ही नहीं ऐसा क्यों? तूने जो हो सकता था कर लिया। कंचन तो तू कहती है ऐसी ही है। अपनेसे हो सके (वह) सब करती है। उसकी तबीयत अच्छी हो सके तो बड़ा काम होगा। दोनों लिखा करो। कंचन यहां आनेकी जल्दी न करे।

बापूके आशीर्वाद

३२५

सेवाग्राम
२०-१-'४५

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। कैसी बात गई? हाशिम साहबसे मुलाकात अच्छी होगी। आज कंचनका कार्ड मु. (मुन्नालाल) पर है। इसमें देखता हूं वह बहुत बीमार हो गई है। ऐसा क्यों? मैं तो मु. को वहां जानेके लिए कह रहा हूं। देखें क्या होता है। मैं तो अच्छा हूं। बराबर काम करता हूं। इस मासके आखिरमें बंबई जाना होगा। कंचनको अलग नहीं लिखता।

बापूके आशीर्वाद

१ बंगालके मुस्लिम लीगके पदाधिकारी।
मुसलमानोंमें प्रवीण हैं। अर्थ है अराजक नीतिसे बचना।

२ बंगालकी महिला कार्यकर्ता डॉ. प्रफुल्लचंद्र घोषके आश्रममें रहकर काम करती थीं। हम दोनों साइकिल सिखानेमें आ रही थीं। दुर्घटना होनेसे वह गिर गई थी।

३२६

सेवाग्राम
२९-१-'४५

चि अ स

मैंने तो तुझे बराबर खत लिखे हैं। कंचनको भी। तुमको न मिलें तो क्या करूं? तेरी तबीयत इतनी बिगड़ी सो तो अच्छा नहीं कहा जायगा। कैसे भी हो तुझे अच्छा होना है और जब तक छुट्टी न मिले दोनोंको वहीं रहना चाहिये। मुझे लिखा कर। लावण्य बच्चा बहादुर है। मेरी उम्मीद है वह अच्छी हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

३२७

२०-५-'४५

चि अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। ऐसी हालतमें कंचनको जाना ही चाहिये। तू उसे ले जा किसीको भेज या मुन्नालाल ले जायें या किसीको भेजें। यही रास्ता है न?

अकबर-जोहराके बारेमें मैं निर्णय कैसे करूं? अकबर सभामें बड़ा काम कर रहा है। हुक्म करूं तो आयगा। मैंने तो उन पर छोड़ा है। जोहराका तो पढ़ना हो रहा है। इसमें भी तू सोच सकती है तो सोच। बड़ी दुश्वारी (मुश्किल)की बात है।

तुझे वहांका[*] अधूरा छोड़ कर यहीं नहीं आना है।

बापूके आशीर्वाद

---

[*] कस्तूरबा सेवा मंदिरका काम।

३२८

(पंचगनी)
१-६-'४५

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा पो. कार्ड मिला। तू अजीब है। मैं उत्तर दूं और तुझे न मिले उसकी भी शिकायत? मैंने तो उत्तर दिये हैं। तेरे अगले खतमें तो कंचनकी भारी खबर तूने दी थी। अब (तू) दुखती ही रहती है। कंचनको सेवाग्राम अवश्य भेज दे या ले जा। जानेमें तकलीफ है तो किसीके आने पर जाय। अगर शक्ति है तो अकेली आरामसे जा सकती है। पैसा ठीक है (रुपये) नहीं करी। मुझे कुछ नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

३२९

पंचगनी
९-६-'४५

चि. अ. स.

तेरा खत मिला। महाबलेश्वर कबसे छूटा। पंचगनी भी इस माहके आखिरमें तो छूटेगा ही उससे जल्दी भी छूटे। जुलाईमें तो वे (सेवाग्राम) पहुंचना। छह महीनेका खयाल मत कर। तेरे कामका कर। पूरा छोड़कर वापिस आ जा। कंचनको सोदपुर भेज।

मु. बहुमत किया है। तू धीर नहीं रखती है और अधीर होती है।

रामनारायणके लिए क्या करूं?

बापूके आशीर्वाद

३३०

१४-६-४५

चि. अ. सलाम

तेरा खत मिला। कंचनका ही सेवाग्रामसे खत है। तू शान्तिसे आ सके तभी आना। तू मुझसे संदेश* क्यों चाहती है? तू खुद बड़ी है। फिर क्या? तुझे दूसरोंको संदेश न मांगनेकी बात सिखानी चाहिये। यह खत तुझे तुरन्त लिखता हूं। हमीद (अमीनाका[1]) यहां आया है।

बापूके आशीर्वाद

३३१

सेवाग्राम

२१-७-'४५

बेटी

तेरा खत शिमला जाकर यहां कल आया। तेरी तबीयत जान (बूझ) कर बिगाड़ती है और शिकायत करती है। जब छूट सकती है तब आ जा। अपनी मरजीसे पहले तो गई ना? कि मैंने (तुझे) भेजा था? कुछ भी हो प्रफुल्लवान् होके तब आ जा। शान्ति[2] मुझे

* कस्तूरबा सेवा मंदिरके लिए मांगा था।

१ हमामसाहबकी बेटी कुरेशीभाईकी पत्नी।

१४-६-४५

चि. अ. स.

तारो कागळ मळ्यो। कंचननो ज कागळ सेवाग्रामथी छे। ताराथी शान्तिथी अवाय त्यारे ज आवजे। तुं मारी पासेथी संदेशो शाने मागे छे? तुं पोते मोटी छे। पछी शुं? तारे बीजाओने संदेशो न मागवा शीखवुं जोईए। आ कागळ तने तरत ज लखुं छुं। हमीद (अमीनानो) अहीं आव्यो छे।

बापुना आशीर्वाद

२ श्री हुमायूं कबीरकी पत्नी।

शिमलामें कहती थी कि उसे तेरेसे बहुत काम है। वह मुझे बंगालसे निकलने देना नहीं चाहती। लेकिन मैं तो सब चीज तेरे पर ही छोड़ना चाहता हूं।

श्यामलालका खत देख। मैंने तो बहुत समझाया कि इसकामको थोड़े दिनोंके लिए बुलाकर क्या करेगी? वह थोड़े ही मेरी बात माननेवाली है? प्रभावती दूसरा खत लिखेगी।

बापूके आशीर्वाद

३५२

पूना
२-९-'४५

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला।

मैं क्या कहूं? पूनामें पड़ा हूं। पता नहीं यहांसे कब निकलूंगा। पता नहीं बंगाल जाना होगा या नहीं। बंगालकी भी तारीख नक्की (तय) नहीं है। इतना है कि नवम्बरसे पहले नहीं जाना है। प्रफुल्लबाबूको लिखा है। सुधीरबाबू[1] एक कहते हैं। सतीशबाबू दूसरा। प्र बाबू तीसरा। सेवाग्राम जाना चाहूंगा। ठहरना कितना होगा सो तो नहीं जानता हूं। तू महीनेकी बात करती है वह नहीं होगा। मैं तो बंगालमें ही रह जाऊं तो हो सकता है। मेरा वहीं रहना तो नहीं हो सकता है। मुझे इतना ही कहूं (कि) मेरे पास तक नहीं रह। हो सके तो सेवा कर। खुदा पर एतबार कर। उसे करना है तो करेगा। मैं तो रोज यही सीखता हूं कि सिवाय खुदाके सब कुछ निकम्मा है। मुझे सिवाय कामके कुछ अच्छा ही नहीं लगता। तू मेरे पास पैगाम क्यों मांग?

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री सुधीर घोष।

३३२

[मूल गुजराती पत्र बापूने नागरी लिपिमें लिखा है।]

पूना जाते हुए,
२४-९-'४५

चि० अ० सलाम

तेरा खत मिला। चाबी मिली। तू २ अक्तूबरको मेरे पास नहीं होगी इससे क्या? जो मेरा काम करता है वह दूर होने पर भी पास ही है। तू तो वहां मेरा ही काम करती है न? और तू मेरी राह देखेगी फिर क्या? तू खूब अच्छी हो जा।

मैं बिलकुल चंगा हो गया हूं। मेरी फिकर न करना। रा० कु० बीमार हो गई है। अभी तो ठीक है। मेरे साथ ही गाड़ीमें है। बोहरा पूनामें है।

बापूके आशीर्वाद

पूना जाते हुए (हिन्दीमां)
२४-९-४५

चि० अ० स०

तारो कागळ मळ्यो। चावी मळी। तुं २जी ओक्टोबरे मारी पासे नहीं होय तेथी शुं? जे मारुं काम करे छे ते दूर छतां मारी पासे ज छे। तुं तो त्यां मारुं ज काम करे छे ना? वळी तुं मारी राह जोने पछी शुं? तुं तो खूब सारी थई जा।

हुं साव सारो थई गयो छुं। मारी चिंता न करजो। रा० कु० मांदी पडी छे। हमणां तो ठीक छे। मारी साथे ज गाडीमां छे। बोहरा पूनामां छे।

बापुना आशीर्वाद

१३४

पूना
१९-१०-'४५

बेटी अ सलाम

तेरा खत मिला। मेरा वहां आनेका दिन कुछ दूर गया है। नवंबरके बीच या आखरमें होगा। सरदारकी सेहत पर मुनसी (आधार) है।

तेरे बारेमें क्या लिखूं? तूने मुझसे कुछ भी नहीं लिया है यह सही है और तेरे जितना किसीने नहीं लिया है यह भी सही है। लेकिन उसका कुछ नहीं। मैं पहुंचूं तब बातें करना। प्या. बीमार है। अच्छे हो जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

कौन साथमें होगा यह तय नहीं है। तू ठीक बच गई। तेरा ऐसा ही चलेगा। अब तो बिलकुल अच्छी होगी।

पूना
१९-१ -'४५

बेटी अ स

तेरा खत मिला। मेरा वहां आनेका दिन कुछ दूर गया है। नवम्बरके बीच या आखरमें होगा। सरदारकी सेहत पर मुनसी है।
(उर्दू लिपिमां)

तारे विषे शुं लखुं? तें मारी पासेथी कंई नथी लीधुं ए खरुं ने तारा जेटलुं कोईए नथी लीधुं ए पण खरुं। पण एनुं कंई नहीं। हुं पहोंचुं त्यारे वातो करजे। प्या. मांदा छे। साजा थई जशे।

बापुना आशीर्वाद

कोण साथे हशे ए नक्की नथी थयुं। तुं ठीक बची गई। तारुं एम ज चालशे। हवे तो साव सारी थई हशे।

२२५

पूना
१०-१-'४५

चि. अ. स.

तेरा खत मिला। निराशा ही है ऐसे लिखनेका तेरा धर्म बन गया है। तेरी निराशाके पीछे आशा ही भरी है। तेरा धर्म बदलेगा तो बहुत ज्यादा काम करेगी।

मेरे पास रहनेसे क्या फायदा? मेरे पास रहनेका सबसे ज्यादा फायदा तूने उठाया है ऐसा मैं पाता हूं। क्योंकि तेरा काम तू ही कर सकती है। तेरे बदलेमें कोई भी काम नहीं कर सकता है। इसलिए मेरे आने तक तू भले वहीं पड़ी रह। आनेके बाद देखूंगा तू मेरे साथ घूमेगी तो अच्छा होगा कि तेरी जगह पर रहनेसे। सब चीज मेरे वहां आने पर छोड़। बोरकामता तो माना है ही। दरम्यान तेरी तबीयत अच्छी कर ले। इसमें मैंने सब जवाब दे दिया।

बापूके आशीर्वाद

२२६

सेवाग्राम
२१-११-'४५

चि. अमतुस्सलाम

ताली करनेके लिए गुजरातीमें ही लिखवाता हूं। तेरा खत मिला। मैंने तो तुझे यहां देखनेकी आशा रखी थी उसके बदलेमें तेरा सचमुच दुःखभरा खत देखा। उस खतमें तेरी आदतके मुताबिक

सेवाग्राम
२१-११-'४५

चि. अमतुस्सलाम

तालीम करवाने खातर गुजरातीमां ज लखावुं छुं। तारो कागळ मळ्यो। में तो तने अहीं जोवानी आशा राखी हती तेना बदले तारो खरा दुःखथी भरेलो कागळ जोयो। ए कागळमां तारी टेव प्रमाणे

दुखका रोना नहीं था लेकिन तू सचमुच जो कुसमय पर बीमार हो गई उसका दुख देखा। इसलिए मैं भी दुखी हुआ। और मगनभाई[1] ने तुम्हारा वर्णन किया और बादमें जाजूजी[2] से तेरी सेवा-भावनाका और तेरी हिम्मतका इतना तो सुंदर वर्णन सुना कि मेरा दिल हर्षसे उछल पड़ा। अब तो थोड़े ही दिनोंमें हम मिलेंगे। तू हर्ष-दीवानी होकर तुरन्त सोदपुर मत आना। अच्छी होकर आना।

हुमायूँका घर तेरे लिए आश्रम बन गया है यह मुझे अच्छा लगता है। मेरी तबीयत अच्छी है। यहाँ जो बीमार थे वे ठीक हो रहे हैं।

बापूकी दुआ

दुःखनुं रोवुं न हतुं, पण तुं बरोबर अटाणे मांदी थई पडी एनुं दुःख में जाणुं। एटले हुं पण दुःखी थयो। वळी मगनभाईए तारुं विवरण आप्युं अने पछी जाजूजी (पारेखजी) तारी सेवाभावनानुं अने तारी हिंमतनुं एटलुं बधुं सुंदर वर्णन सांभळीने मारुं हैयुं हर्षथी उछळ्युं। हवे तो थोडा ज दिवसोमां आपणे मळशुं। तुं हर्षघेली थईने तरत सोदपुर न आवती। सारी थई जईने आवजे।

हुमायुनुं घर तने आश्रमरूप थई पड्युं छे ए मने गमे छे। मारी तबियत सारी छे। अहींया जे मांदा हता ते ठीक थता जाय छे अने थई रह्या छे।

बापुनी दुआ

१ श्री मगनभाई पटेल साबरमती आश्रमके नजदीक वाडज गाममें रहते थे। बचपन और बीमारीमें उन्होंने मेरी सहायता की थी।

२ श्री श्रीकृष्णदास जाजू वर्धाके एक नेता जमनालालजी बजाजके साथी। चरखा-संघके मंत्री भी थे।

२३९

[बापूके आश्रममें न रहने पर आश्रममें आलसीपन आ जाता था। उसी पर अपने मनकी भावना मुझे प्रगट की थी।]

पूना
९-१-'४४

चि म स

तेरे दोनों खत मिले। तेरे मनका कुछ ठिकाना नहीं है। अब आश्रम निकम्मा हो गया? वहां कोई अच्छा है क्या? एक भी है तो अच्छा ही समझ। मुझे साफ लिख क्या खराबी है। नौकरोंको रखनेका मैंने कहा है। लेकिन उनको भाई समझ कर रखनेका है। उनकी सेवा करनेका (यह) एक मार्ग है। अगर नहीं है तो सुधार करना है। (तु) इजाजत दे तो चिमनलालको दोनों खत भेजूं और जवाब मांगूं।

[नीचे आश्रमके नौकरोंके सम्बन्धमें बापूके विचार उन्हींके शब्दोंमें दिये गये हैं।]

१

नौकर (आश्रममें) रखते हैं तो भी उनको हमारे भाई समझकर बर्ताव करना है। इसलिए जो कार्य मजदूरीका भी हम कर सकते हैं वह हम ही करें। जो हमसे न हो सके वही उनसे (नौकरोंसे) लेवें।

हमारे साथ जो नौकर स्वामी जैसे हैं उनकी इज्जत करें, उनको कुछ तालीम दें। ये सब सेवाग्रामके उद्धारमें कामकी वस्तु है साधन है सिद्धि भी है।

२

आश्रमके नौकरोंके सम्बन्धमें एक दिन बापूने कहा

यहां कहां कितने वेतनसे (वे) आश्रममें काम करते हैं? उनका कितना बड़ा कुटुम्ब है? बच्चे पढ़ते हैं? सब क्या करते हैं? घर बार है? उन कुटुम्बोंको अपनाया है?

यह सब न जानते हो और उनको केवल नौकरके नाते उपयोग करते हो तो ठीक नहीं है।

मगनभाईको यहाँ दुरुस्त होना है। कु० च०[1] तो काम देनेवालेसे पैसा। वे इनकार कर सकते हैं। तू मनाही कर सकती है।

तुझे बुलाकर क्या करूं? तू आना ही चाहे तो आ सकती है। आभा[2] आती है ऐसा म नहीं जानता हूं। मेरा यहां रहना निश्चय (निश्चित) नहीं है। १९ ता० को बंबई जाता हूं। यहां दर्दी (बीमार) नहीं लिये जाते हैं। डॉ० मेहता काम पर नहीं हैं। बाहर जायेंगे। गरीबोंका घर नहीं हुआ है। माके पास जाना चाहती है तो जा।

बापूके आ०

३४०

[बोरकामगांवसे बापू मुझे सेवाग्राम लाये थे। वहां मेरे जिम्मे कुछ काम नहीं था इसलिए बीमारीकी हालतमें मनमें जो विचार आते थे वे मैं बापूको लिखा करती थी।]

पूना
१०-३-'४६

चि० अ० न

तेरा खत मिला। प्यार करना है। मगनभाई यहांकी गर्मी बरदाश्त न कर सकें तब भले वापस घर जायें। अगर आश्रममें बैठे रहें तो वहां भी गर्मीकी बरदाश्त हो सकती है। तुम्हारे मामाजीके पास जाना है। वनुके शिविरमें काफी काम तुम्हारे लिए निकलेगा। यों तो सच्चे और मूक सेवकको काम हमेशा है ही। वरना कम काम न माना जाय।

बापूके आ०

---

१ श्री [illegible] सेवाग्राम आश्रम-निवासी हालमें उरुलीकांचन (पूना) के प्राकृतिक चिकित्सा-आश्रममें हैं।

२ श्री कनु गांधीकी पत्नी।

३४१

पूना
२०-३-४६

चि० अ० स०

तुझे मैं लिख नहीं सका हूं लेकिन याद तो रोज करता हूं। तू अच्छी रहे और खूब सेवा करती रहे यह मैं चाहता हूं। सेवाकी जगह हर गांव है।

मगनभाईको घर्षण-स्नान लेना चाहिये। दिनमें थोड़ा सोवें भी। दस्त बराबर आना चाहिये। रामनाम लेते रहें।

तेरी मांका तार आया है। उसका मीठा जवाब देना।

मुझे अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

३४२

उरुली
२५-३-४६

बेटी

मैं कुछ फरक नहीं पाता। (तू) मेरी बात नहीं समझती है। तेरी ही बात मुझसे कराना चाहती है। मेरी ही खुशीसे आज [illegible] जा सकती है। मेरी खुशी तो मैं बताऊँ। सेवाग्राम थोड़ा तो माफी तमाम मान दे दे। यह नहीं ही पाता है तो तेरी खुशीके मुताबिक कर। दिल्ली तो कभी आ सकती है।

बापूके आ०

२४३

नयी दिल्ली
८-४-'४६

चि. अ. स.

तू मरीजोंके पास नहीं जाती है? कलकत्तेके लिए तेरा सामान मिला सो भेजा। अब क्या बाकी है सो लिख तो मैं मंगवा लूंगा। जो मिला सो मुश्किलसे मिला।

बापूके आशीर्वाद

२४४

नयी दिल्ली
११-४-'४६

चि. अ. सलाम

तेरा खत मिला। बादशाह खान[1] आये हैं। मिले नहीं हैं। लेकिन आज मिलेंगे। तुझे खत मिला है उसके आधार पर तुझे जाना हो तो

बापूने उरुलीकांचनमें जब प्राकृतिक चिकित्साका केन्द्र शुरू किया उस वक्त मुझे भी वे अपने साथ ले गये थे। वहां उन्होंने मुझे बीमारोंको चरखा सिखानेका काम सौंपा था।

[1] सरहद्दी गांधी अब्दुल गफ्फार खां।

नवी दिल्ही
११-४-'४६

चि. अ. स.

तारो कागळ मळ्यो। बादशाह खान आव्या छे। मळ्या नथी। पण आज मळशे। तारो उपर कागळ छे ते उपरथी तारे जवुं होय तो जा। मारा हुकमनी वाट न जोवी। कांचनगामने भूली जा। आम तबियत सुधरे पछी जोजे। तारे खास मन ठेकाणे राखी तबियत सुधारवानी छे। मोटापण मारी नाखवानी छे। तारायी थाय एटलुं ज करजे। गरमीमां न भटकजे। रेंटियानुं पण बने थाय ए ज करजे। मारे आ दहाडा पछी ज आववानुं बने एम थवाय छे। मने बरोबर लख्या करजे।

बापुना आ.

३४६

नयी दिल्ली
१९-४-'४६

चि अ स

तेरा खत मिला। मेरी आशा है कि तुझे जैसा अच्छा लगे वही करना। मैं सर्व-शक्तिमान नहीं हूं। इसलिए जिधर जाना है वहां जा सकती है। बोहरा तेरी लड़की है, (उसे) जिधर ले जाना है ले जा सकती है। बादशाह खान नहीं हैं। यही हाथ (अभी) रहेंगे। म अब तक कुछ बात नहीं कर सका हूं। तेरी तबीयत अच्छी रहेगी तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं तो बहुत काममें रहता हूं। ता २५ तक तो यहां पड़ा हूं। बोहराको आ ।

बापूके आ

३४७

दिल्ली
२४-४-'४६

चि अ स

तेरा खत मिला। जितेनबाबूको तू जो ठीक लगे सो लिख। ठीक लगे सो कर।

जितेनबाबूका खत म (मारफत) बापूको बताकर वापिस करेगा। तेरी तबीयत अच्छी हो जायेगी तो बड़ा अच्छा होगा।

बापूके आ

३४८

महाबलेश्वर,
२६-४-'४५

बेटी

तेरा खत मिला। तुझे पैसा न मिले तो काम मत कर। पैसा ममतबाजीसे नहीं मिलेगा। पैसा तो प्र बाबू ही देवें या सतीशबाबू। तू पैसेके लिए कोशिश मत कर, ऐसे ही मिले तो अच्छा है। खादीके लिए आदमी तैयार है तो तू करघा चलेगी अथवा छोड़ दे। सेवा करना तेरा काम है। प्र बाबू छोड़ें तब आश्रम तो सेवा-कामसे भरा है ना? मैं महाबलेश्वरमें एक मास और दूसरा पंचगनीमें फिर आश्रममें।

तेरी तबीयत अच्छी कर। कार्यक्षमता अच्छी होगी। तूने खादी खूब बेची।

बापूके आशीर्वाद

इसके साथ हयात के डॉ पर खत है। यह और जो कह सकती है मुझ लिख या हयातुल्लाको या डॉ को।

बापू

डॉक्टर हयातुल्ला अनसारी।
डॉक्टर सैयद महमूद बिहारके कांग्रेसी नेता।

२४९

शिमला
४-५-४६

चि० अमतुस्सलाम

स्वर्ग गये।* इसी तरह हम सबको जाना है। इसलिए तू दुःख नहीं मानती होगी। अमतुलको मैंने तार किया है।

इंदौर जानेके बारेमें तो तुझ पर ही छोड़ा है। तेरा मार्गदर्शन करनेकी मुझमें हिम्मत ही नहीं है। तेरा भला किसमें है सो मैं नहीं जान सकता। और तुझे जो अच्छा लगे वह करनेमें कोई हर्ज तो नहीं होना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

[बापूके नाम अगम ...का यह तार आया था।]

४-५-४६

अफसोस! मेरे [illegible]। अमतुस्सलाम आपके पास हों तो उन्हें बतलाइयेगा।

अगम [illegible]

शिमला
४- -४६

चि० अमतुस्सलाम

स्वर्गे गया। एम ज आपणे सौने जवानुं छे। एटले तुं [illegible] नहीं मानती होय। अमतुलने में तार कर्यो छे।

इंदौर जवा बाबत तारी [illegible] छे। मने [illegible] नथी [illegible] [illegible] [illegible] हरकत न ज होवी जोईए।

बापुना आशीर्वाद

शिमला
१-५-'३१

चि. अ. स.

तेरा खत मिला है। बादशाह खानसे भी काफी बातें हुई हैं। मेरे हुक्म करनेसे मैं तेरा भला कर सकूं तो आज करूं। मैं इतना कहूंगा कि न सलाह दूं। यह तू पसन्द करे तो उसका अमल कर न पसन्द पड़े तो जो तुझे अच्छा लगे सो कर।

तुझे जमतुल्लके पास तो जाना ही चाहिये। भाई मर गया और तू न जाये सो बराबर नहीं है।

तुझे आज तो सरहदी सूबा जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। अकबर जब समोंसे बिलकुल छूट सके तब जाय। खानसाहब कहते हैं (कि) जब अकबरका दिल कहे तब ही वह जाय। खानसाहब मानते हैं नहीं कि अकबर सूबे सरहदमें ज्यादा काम कर सकेगा। तू इंदौर जायगी तो वहांसे मुझे लिखना (कि) क्या हाल है। बादमें मैं दूसरी सलाह दूंगा।

बालकामनदास भी मैं मिल चुका हूं ना?

माधव अहमदका पत्र है मेरे पर और डॉक्टर पर। अकबर पर नाम डॉक्टरका था। पत्र आजमीन बस्तीमें छोड़ा। मन दोनों पढ़े। खानसाहबको पढ़ाया। अब डॉक्टरको भेजना।

बापूकी दुआ

३५१

शिमला
११-५-'४६

चि॰ अ॰ सलाम

तेरा खत मिला है। इसके साथ बादशाह खानका खत है। मैंने बेगम रशीदको दो तार किये थे। तुझे खत लिखे उसमें मैंने उसका अमतुल नामसे जिक्र किया। मुझ ख्याल रह गया कि उसका नाम अमतुल है। उसका क्या नाम है?

[बादशाह खानका खत इस तरह है।]

शिमला
१०-५-४६

प्यारी अमतुस्सलाम

सलामत रहो।

अकबरकी मने खत लिखा है कि यह अब समोसे बिलकुल मुक्त

तुम एक अजीब लड़की हो। तुमने अपने खतमें मेरी नाराजगीका लिखा है। मैं क्यों आपसे नाराज हो जाऊं? आपने तो काफी कोशिश की। और इन्सान अगर नाराज भी होता है तो अपने कामसे और यह काम तो कोई मेरा नहीं और न मैं इसको अपने लिए करना चाहता हूं। तुम ऐसी फिकर दिलसे निकाल दो बल्कि उम्मीद रखो। अगर तुम्हारा खयाल और इरादा मजबूत है तो जरूर एक दिन तुमको महात्माजी इस कामकी इजाजत दे देंगे बल्कि आपको सरहदके लिए खुद रवाना करा देंगे। अकबरको भी आप मजबूर न कीजिये क्योंकि मैंने देहलीमें आपको बताया था कि यह काम मजबूरीसे नहीं है यह तो अपनी मरजी और शौकसे हो सकते हैं। और मेरा इरादा है कि इस किस्मका एक खत उनको लिखूं कि अगर आप शौके मुहब्बतसे और एक जबरदस्त अज्म और इरादेसे सरहद आना चाहते हैं तो आयें वरना हमारा काम चलेगा नहीं। बाकी खैरियत है।

फक्त आपका
अबदुल गफार खां

सीमला
११–५–'४६

चि० अ० स०

तारो कागळ मळ्यो छे। आ साथे बादशाह खाननो कागळ छे। म बेगम ग्यालिबने बे तार कर्या हता। तम कागळ लख्या तेमां में तेने अमतुल सलामे लखेलो। मने ख्याल रह्यो नथी के तेनुं नाम अमतुल छे। तेनुं शुं नाम छे?

अकबरने म कागळ लख्यो छे के ए ज्यारे जमीमांथी छाव छूटे त्यारे न तम मारफती मुसाफरी करवानी हौंस थाय तो आवे। तेने पहेले तो एकला जन जाईने रहेवुं। ज्यारे त्यां मोजूद थाय त्यारे औरंगन बोलाव।

मने म ग्यार बावन सलाह आपी छे ते कागळ मळ्यो नथी हजी।
तारी तबियत सारी हशे।

बापुना आशीर्वाद

अकबरको मैंने खत लिखा है कि वह अब उमोसे बिलकुल मुक्त

तुम एक अजीब लड़की हो। तुमने अपने खतमें मेरी नाराजगीका जिक्र है। मैं क्यों आपसे नाराज हो जाऊं? आपने तो काफी कोशिश की। और इन्सान अगर नाराज भी होता है तो अपने कामसे और यह काम तो कोई मेरा नहीं और न मैं इसको अपने लिए करना चाहता हूं। तुम ऐसी फिकर दिलसे निकाल दो बल्कि उम्मीद रखो। अगर तुम्हारा ख्याल और इरादा मजबूत है तो जरूर एक दिन तुमको महात्माजी इस कामकी इजाजत दे देंगे बल्कि आपको सरहदके लिए खुद रवाना करा देंगे। अकबरको भी आप मजबूर न कीजिये क्योंकि मने देहलीमें आपको बताया था कि यह काम मजबूरीके नहीं है यह तो अपनी मरजी और शौकसे हो सकते हैं। और मेरा इरादा है कि इस किस्मका एक खत उनको लिखूं कि अगर आप शौक मुहब्बतसे और एक जबरदस्त जज्बे और इरादेसे सरहद आना चाहते हैं तो आयें वरना हमारा काम चलेगा नहीं। बाकी खैरियत है।

फक्त आपका
अबदुल गफ्फार खां

सीमला
११–५–'४६

चि ब त

तारो कागळ मळ्यो छे। आ साथे बादशाह खाननो कागळ छे। में बगम ग्लीदिने बे तार कर्यां हता। तने कागळ लख्या तेमां में तेने अमतुल सरीखे गणी। मने खयाल रह्यो नथी के तेनुं नाम अमतुल छे। तेनुं शुं नाम छे?

अत्यारमें में कागळ लख्यो छे के ए ज्यारे समोमांथी गाव छूटे त्यारे न मैन गम्वरी मुसामां जवानी होय वाय तो जाय। तेने परेश तो लखता जय बोईए। पछी ज्यारे त्यां जवानी थाय त्यारे ओतराम बीजाजे।

मने मे गर्लन बाजत मजार आवी छे ते कागळ मळी गयो हतो। तारी तबियत सारी हश।

बापुना आशीर्वाद

१५८

[एक लड़का भाई जैसा भाई चल बसा। इससे मुझे सख्त चोट लगी थी। मेरा खून ठंडा हो गया था। शरीर निर्जीव-सा हो गया था। त्याग सेवा वगैरा सब झूठ है, ऐसी तीव्र भावना हो गई थी। यह होते हुए भी आश्रमवासी मुझे अपने कुटुम्बी समझते थे। और बापूको तो मैं जब भी खत लिखती थी तब मेरे बुजुर्ग रहनुमा बापू ऐसा संबोधन करके ही लिखती थी। भाईके चले जाने पर मुझे जो सदमा पहुंचा था उससे मैंने कई खत बापूको लिखे थे। उसका इसमें जवाब है।]

मसूरी
१-५-'४६

चि. अमतुस्सलाम

तेरा ता. २५ का खत इन्दौरसे बम्बई जाते लिखा हुआ मिला। जब तक तू ईश्वरको छोड़कर दूसरे किसी पर भरोसा रखेगी तब तक तेरे सब काम अधूरा ही रहेगा। अंधोंने अंधोंको राह दिखाई हो यह किसीने जाना नहीं। फलां आदमी मुझे राह दिखाता है यह कहना ही गलत है और मोह है। एक हद तक हमसे ज्यादा जाननेवाला हम सबकी रहनुमाई

मसूरी
१०-५-'४६

चि. अमतुस्सलाम

तारो कागळ इन्दौरथी मुंबई जता १५मी तारीखनो मळ्यो। ज्यां सुधी तुं ईश्वरने छोडीने बीजा कोईनी उपर भरोसो राखशे त्यां सुधी तारां कामकाज अधूरां ज रहेशे। आंधळा आंधळाने दोरता जाण्या नथी। कोई माणस बीजाने दोरे छे एम कहेवामां ज भूल छे ने मोह छे। एक हद सुधी आपणाथी वधारे जाणकार माणसनी [illegible]

वहांके नियमोंका पालन करना। आश्रम छोड़नेके बाद भी नियम अनुकूल हों उनका पालन करना। दूसरे भी यही करते हैं। जो बात बोझरूप मालूम हो उसे साथ लेकर चलनेमें कोई लाभ नहीं है।

योगकामतामें तूने खुद कुटुम्ब बसाया है। मुझे तो उसके बारेमें कुछ मालूम नहीं है। मैंने मनाही की हो तो वह सब मैं वापस लेता हूं। यहां कुछ हो जाय और तेरा कोई न सुने तो मुझे बीचमें मत डालना। मैं तो सबको पहचानता भी नहीं।

तूने बहुत खत लिखे। भाई जैसा भाई चला गया इसलिए मुझे लगा कि तेरे दुःखमें कुछ भाग ले सकूं तो अच्छा। ऐसा समझकर समयकी तंगी होते हुए भी तुझे लिखा। अब उसका दुरुपयोग न करना। कुछ काम होने पर लिखना पड़े यह अलग बात है। सरलतासे और

एटले जेनी पासेथी जे काम तुं सहेजे लई शके ते ले। मने वचमां न नाखजो। आश्रम जवु होय त्यारे जवुं। त्यांथी बीजे क्यांय जवु होय त्यारे एम करवुं। आश्रम जवुं ने त्यां रहेवुं त्यां सुधी त्यांना नियम पाळवा। आश्रम छोड्या पछी जे फावे ते पाळवा। बीजाओ पण एम ज करे छे। जे बोजारूप लागे ते साथे फेरववामां कशो लाभ नथी।

योगकामता(मा)ं तें पोते कुटुम्ब वसाव्युं छे। मने तो तेनी कांई खबर नथी। योगकामता जवुं के न जवुं ए पण तारी उपर आधार राखे छे। में मनाई करी होय तो ए पाछी खेंची लउं छुं। त्यां कांई थाय के कोई न माने त्यारे मने वचमां न नाखतो। हुं बधाने ओळखतो पण नथी।

[illegible] घणा कागळ लख्या। भाई जेवो भाई चाल्यो गयो एटले मने लाग्युं के तारा दुःखमां हुं कांई भाग लई शकुं तो सारुं एम मानीने वखत न छतां लख्युं। हवे तेनो दुरुपयोग न करतो। कांई कामसर लखवुं पडे ए जुदी वात छे। सरळभावे ने मात्र ईश्वरने हृदयमां [illegible] मार्ग [illegible] ठीक ज थशे। मारी उपरनो भार [illegible] तारा आत्मानी उपर रहेवानो बधो आधार [illegible] छे।

बापुना आशीर्वाद

[illegible] छे।

सिर्फ ईश्वरको साक्षी रखकर तेरी मंजिल तय करेगी तो सब ठीक ही होगा। मेरा मोह छोड़ देना। किसी भी शख्स पर अपना सब आधार रखना इसीका नाम मोह है।

बापूके आशीर्वाद

हीराका खत अभी मिला।

३५९

बेटी अमतुस्सलाम

तू बिलकुल अच्छी हो जायगी तो मुझे संतोष होगा। अच्छी हो जानेके बाद तुझे जो सेवा अच्छी लगे वह करना। मेरा आग्रह छूटा है। मेरा प्रेम नहीं छूटा। वो वैसा ही है। मोह छोड़नेका प्रयत्न है। बाकी सब ऊपरसे।

बापूकी दुआ

बेटी अमतुस्सलाम

तू साव सारी थई जा एटले मने सन्तोष छे। सारी थया पछी तने जे सेवा ठीक लागे ते करजे। मारो आग्रह छूटयो छे। मारो प्रेम नथी छूटयो। हतो तेवो ज छे। मोह छोडवानो प्रयत्न छे। बाकी बधु उपरथी।

बापुनी दुआ

न दि
१०–१–'४१

चि अ सलाम

तेरा खत पढ़ा। भाभीके समाचार न समझा। तू ठीक लिखती है कि मैं भी एक इन्सान हूं। किसीका हृदय नहीं जान सकता। मेरा भी शायद नहीं जानता होऊं। हृदयका जाननेवाला एक ईश्वर ही है। इसलिए मैंने तुझे कहा है कि जो ठीक लगे सो कर। मैं कहां भाभीको पहचानता हूं? न तो जानता हूं अमतुलको और न काफीखान वगैराको। इन सबको तू जानती है। इसलिए जहां जाना हो वहां जा। फिर तबीयत बिगाड़ी है यह बताता है कि तूने खुदाको रहनुमा नहीं किया है। अब क्या हो?

मेरी तबीयत ठीक है। दो चार दिनमें पूना जानेकी आशा रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

न दि
१ –१–'४१

चि अ स

तारो कागळ वांच्यो। भाभीना समाचार नहि समज्यो। तुं बरोबर लखे छे के हुं पण एक इन्सान छुं। कोईनुं हृदय नथी जाणी शकतो। मारुं पण कदाच न जाणुं। हृदयनो जाणनार एक ज ईश्वर छे। एटले ज में तने कह्युं छे के जेम तने ठीक लागे तेम कर। हुं क्यां भाभीने जाणुं छुं? नथी जाणतो अमतुलने नथी जाणतो काफीखान वि ने। ए बधाने तुं जाणे छे। एटले ज्यां जवुं होय त्यां जा। पाछी तबियत बगाडी छे ए बतावे छे के तें खुदाने रहनुमा नथी कर्या। हवे केम थाय?

मने ठीक छे। बे चार दिवसमां पूना जवानी आशा सेवुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

३६३

सेवाग्राम
८-८-'४१

चि. म. सलाम

तेरा खत मिला। तुझे यह हुक्म या यह सलाह है। तेरा काम वहाँ पूरा करके ही वहाँसे हटना। प्रफुल्लबाबू और मनोरंजनजी कहें तब पूरा हुआ समझना। बादमें बादशाह खानके पास जाना। बहरहाल मैं वहाँ पहुँचूं तब तक तेरा वहीं रहना अच्छा है। इस बीच अगर तू यहाँ आयेगी तो मैं फिर तुझे बंगाल नहीं ले जाऊंगा।

पैसेके बारेमें देख लूंगा।

प्यारेलाल फिलहाल बम्बईमें है। आजकलमें शायद यहाँ आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम
८-८-'४१

चि. म. स.

तारो कागळ मळ्यो। तने आ हुकम या सलाह। तारुं काम त्यां पूरुं करीने ज त्यांथी खसवुं। पूरुं थयुं एम प्रफुल्लबाबु ने मनोरंजनजी कहे एटले समजवुं। पछी बादशाह खान पासे जवुं। गमे ते स्थितिमां हुं त्यां आवुं त्यां सुधी त्यां ज रहेवुं सारुं छे। जो दरम्यान अहीं आवशे तो हुं तने पाछो बंगाल नहीं लई जाउं।

पैसा बाबत जोई लईश।

प्यारेलाल हमणा मुंबईमां छे। आजकालमां अहीं आवशे।

बापुना आशीर्वाद

३६६

नई दिल्ली
९-९-'४७

चि॰ म॰ सलाम

तेरा खत मिला। तेरी इच्छा ईश्वरने सफल की है क्योंकि यहांसे म २४ के पहले नहीं निकल सकूंगा।

तेरा शरीर जितना करने दे उतना ही तू अगर किया करेगी तो तेरी काया लोहेके समान हो जायगी और मन लोहेके समान हो जायगा। और फिर मैं चाहूं इतना काम तू कर सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

नई दिल्ली
९-९-'४७

चि॰ म॰ स॰

तारो कागळ मळ्यो। तारी इच्छा ईश्वरे सफळ करी छे केमके माराथी अहींथी २४मी पहेला नीकळाय तेम नथी।

तारुं शरीर जेटलुं करवा देवे एटलुं ज तुं करशे तो लोखंड जेवी काया थशे मन लोखंड जेवुं मन थशे। अने पछी हुं धारुं एटलुं काम तुं आपी शकशे।

बापुना आशीर्वाद

३६९

न. दि.
१-१०-'४७

चि. म. स.

तूने देव[1]के साथ कुछ खत नहीं भेजा। तेरी ही बारी चलती है। अब एक दिन तेरी एक दिन अवन्तिकाबाई[2] की।

मैं तो अब यहीं रह गया। शायद २ तक जाऊंगा। तू अच्छी हो कि और स्थिर मनकी (बन जा)। कुरबानीके लिए वैराग पैदा (हुआ) चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

३७०

न. दिल्ली
२-१०-'४७

चि. म. स.

तेरे दूसरे कपड़े मिले हैं। बहुत काम हुआ। तेरे खतमें मेरी निगाहमें अज्ञान भरा है। जियादा काम करनेसे आती है। यहाँ "मुफ्तकी रोटी खाती है" यह सब बताता है कि तू दिखानेके खातिर लिखती है। चोरकामता जरूर जा और जो काम हो सके सो कर। खुदा ही जानता है हमारी बेहतरी किसमें है। खुदा क्या चाहता है वो इन्सान कैसे जाने? इसलिए जिधर उसका दिल ले जाये वहाँ जाये। खुदा तो दिलमें ही है ना? शंकरन्[3] आजूजीके साथ आयेगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१ देवप्रकाश नैयर, प्यारेलालजीके चचेरे भाई।

२ अवन्तिकाबाई गोखले बम्बईमें रहती थीं। गांधीजीकी भक्त थीं। गांधी-जयन्ती पर हर साल अपने हाथके कते सूतकी गोलियां बापूको भेजती थीं। इन्होंने मराठीमें बापूका बहुत सुन्दर जीवन-चरित्र लिखा है।

३ केरलके हैं। सेवाग्राम आश्रममें रहकर दवाखानेमें डॉ. सुशीला नैयरसे तालीम ली। बादमें बिहारमें बरसों तक काम किया।

ही कहा कि वे राजी होवें तो इजाजत दे सकते हैं। सब आजाद हैं और आजादीमें तो जहां जाना हो वहां जायं। मेरी तरफसे या जामनकी तरफसे नहीं।

बापूके आशीर्वाद

३७५

११-११-'४६

चि. अ. स.

तेरा खत मिला। यहां जादी भंगी। म तो जाऊंगा ही कब सो नहीं जानता। देर होगी तो बापा आ जायेंगे। काम मुश्किल है। जो हो हमारे अपना फर्ज अदा करना है। और तो क्या लिखूं? नोआखाली और सोमिरपड़ा होकर अभी आया। प्रार्थना हुई और यह लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

३७६

काजीरखिल
१५-११-'४६

चि. अ. स.

तेरा खत मिला। मैं बदबरिया जानेवाला हूं इसमें शक नहीं है। मुस्लिम लीगकी बात हो रही है। तेरे यहां आनेकी कोई जरूरत नहीं है। तुझे किसी काममें मशगूल होनेका काम है। चिन्ता बहुत नहीं करना। जो अपनी शक्तिमें है सो करके सन्तुष्ट रहना।

बापूके आशीर्वाद

नोआखालीमें बापूने मुझे सिरंडी भेज दिया था और आस पासके दस देहातका काम संभालना था। वहां मुझे बापू खत लिखते रहते थे।

३७७

५-१२-'४१

चि० म० स०

तू कम कुछ समझकर गई होगी। जीवन विचारमय होना चाहिये सिवाय उसके निकम्मा है। इसी वास्ते तुमको यह रैहाना[1] का पो० कार्ड भेजता हूं। फुरसत होने पर तो जरूर उनको लिखना। मैं नहीं लिखता हूं।

बापूकी दुआ

३७८

१७-१२-'४१

बेटी

तेरा खत मिला। तुझे क्या कहूं? मैंने तो कह दिया है कि तू मुझको समझती ही नहीं और मुझे रहनुमा बनाती है। तूने कानुको भी दुःख दिया। अब क्या कहूं? तुमसे बात करना भी गुनाह है। जितना तूने पाया है उस परसे जो कर सकती है सो करे और सुखी रहे, तो मुझे सन्तोष है। मैं कुछ भी बात करनेसे डरता हूं। बड़े संभावसे मने तुमको जो कहा उसका तूने अनर्थ किया और कानुको नाही कष्ट (कर) दुःख दिया।

तू यहां नहीं आयेगी उससे न तू कुछ गंवायेगी न मैं। जो सेवा तुझे अच्छी लगे उसमें मस्त रह।

बापूकी दुआ

१ श्री रैहाना तैयबजी। गुजरातके बड़ौदा राज्यमें इनके पिता श्री अब्बास तैयबजी न्यायाधीश थे। गांधीजीके मित्र थे तथा सत्याग्रह आन्दोलनके साथी थे। वे कांग्रेसके अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजीके खानदानके थे। रैहानाबहन आज तक बापूजीका ही काम — कौमी एकतारा — अमन वगैरा भावनोंमें कर रही हैं और पू. काका साहबके साथ दिल्लीमें रहती हैं। 'मंगल प्रभात' के पाठक उनको भलीभांति जानते हैं। वे मेरे गुरुजनोंमें से हैं।

३७९

[यह पत्र लेकर रातको बारह बजे श्री सतीशबाबू और श्रीमती हेमप्रभा देवी मेरे पास आये। मैंने उपवास अन्न बगैर पानीका शुरू किया था। मैंने कहा था कि जब तक तलवारें वापस नहीं मिलेंगी मैं पानी भी नहीं पिऊंगी। रातको ही मुस्लिम नेताओंने सतीशबाबूको यह यकीन दिलाया था कि सुबह सूरज निकलनेके पहले ही तलवारें वापस मिलेंगी। इसलिए सतीशबाबू मुझे नारियलका पानी पिलाकर गये। सुबह दो तलवारें मिल गईं। लेकिन तीसरी नहीं मिली थी। मुसलमान भाइयोंका कहना था कि वे तलाश कर रहे हैं। तीन दिन तक वे न ला सके इसलिए मैंने दूसरा उपवास शुरू किया जो पचीस दिनका हुआ।]

१८-१२-'४६

बेटी

तेरा खत पढ़ गया। अनशनको समझ नहीं पाया। मेरी राय है कि सतीशबाबू कहें सो करना। मैं तो परेशान हूं। तूने मुझे बार बार कहा तो भी तू यह समझी थी कि तुझे पूरा इल्म नहीं है। तुझे पुनः शुरू करनेका अधिकार नहीं था। लेकिन हुआ सो हुआ। जैसे तू मुझे समझ सकती है वैसे ही चलेगी न?

बापूकी दुआ

३८०

[मैं तो सिर्फ पानी पर ही रहकर उपवास करनेका निश्चय कर चुकी थी। इसलिए बापूके ऐसे सुझावकी कोई गुंजाइश न थी। पानीमें सोडा भी मैंने नहीं लिया। क्योंकि उसके बारेमें एक भाईने बात बापूसे पूछी थी कि तलवार न मिले तो पानी भी नहीं लेनेका निर्णय लेता था तब उसके मिले बिना तूने पानी क्यों लिया?]

२३-१२-'४६

चि॰ बेटी

आज हरिजनबन्धु मेरा पढ़ लिया। यह तीन तारीख तक तो है। [illegible] दुख है। [illegible] है कि [illegible] और भी पर रखते हैं। मुझे

रोज खबर दो। एनीमामें उबला हुआ गुनगुना (कुनकुना) पानी डालो। उसमें परमेंगनेट दो तीन कण डालो जिससे पानी गुलाबी रंगका हो। पानी उबला हुआ और आधी मोसंबीका रस पीना। हर वक्त हर दो घंटे पर ऐसा पानी पीना। शहदकी एक बोतल भेजता हूं। जब दिल चाहे तब पीना। पेट पर मिट्टी लेना। मिट्टी कपड़ेमें नहीं ऐसे ही रखो। अच्छी हो जायेगी। आदमी तो है नहीं। लेकिन बीमार रही तो आदमी ढूंढ लूंगा। बोरका-मठासे कुछ मंगाना नहीं। मुझे खबर देते रहना। अब फाका मौकूफ करना। अच्छा होने पर देखा जायगा।

बापूकी दुआ

३८१

[उपवासके साथ बुखार, खांसी तथा न्युमोनियाने सबने मिलकर मुझ पर हमला किया था। यह कसौटी भगवानकी तरफसे थी जिसमें रामनामके बल बापूके आशीर्वाद और उनकी रूहानी शक्तिसे जो ताकत मिलती थी उससे उपवासमें मैंने सफलता पाई।]

२७-१२-'४५

बेटी

तू बीमार हुई है। यह कैसे? तेरे साथवालोंने डॉक्टरकी मदद मांगी है थरमामीटर मांगा है। मैंने कहा है न डॉक्टरकी जरूरत है न दवाकी। तेरी दवा पृथ्वी पानी आकाश तेज और वायु है। और उसके साथ रामनाम। कुरानशरीफ लेकर हवा साफ पानी साफ सूरज जितना बरदाश्त कर सके और दिलमें रखकर रामनाम लेती हुई खड़ी हो जा। ईश्वर तेरे मार्फत सेवा नहीं चाहेगा तो तुझे उठा (ले) जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

मुझको लिख या लिखवा।

३८२

[शुरूमें बापूने भी मेरी कसौटी की। कोई भी मेरे पास नहीं था कारण कि हममें से जो बंगाली जाननेवाले थे उन सबको अकेले ही गांवोंमें बिठाया गया था। मैं बंगालमें रहनेके कारण बंगाली जानती थी। जो बंगाली नहीं जानते थे उनके साथ बंगाली जाननेवाला एक आदमी दिया गया था।]

२८-१२-४५

बेटी

तेरे खत मिले। जवाहरलाल[1] भी बैठे हैं। तू ठीक कहती है। उपवास रख। खुश रह। एक सेवक या सेविका तेरे पास रहनी चाहिये। आखिर हम सबका मालिक वह सर्वशक्तिमान है। दूसरा दूसरे समय।

बापूके आशीर्वाद

३८३

इतवार,
२९-१२-'४५

चि बेटी

तेरा खत मिला। तू कितनी पड़ी है? एन्टीफ्लोजिस्टीनकी डब्बी बड़ी आती है। एक तू चाहती है ऐसा कर सके ऐसे (आदमी)को मां[2] भजेगी। कागज (पत्र) किसीसे लिखवाना। पानी खूब पीना।

बापूकी दुआ

---

१ पंडित जवाहरलाल नेहरू।
वीणा और कुरानशरीफ पढ़नेवालेको।

२ श्री हेमप्रभादेवी सतीशचन्द्र दासगुप्तकी पत्नी।

३८४

१-१२-'४६

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। एक मुसलमान भाई और एक सिख आते हैं। कुरानशरीफ पढ़ेंगे जो बन पड़े सो सेवा करेंगे।

पानी बन्द करना मुझे तो मुनासिब नहीं लगता है। कुदरतसे भागकर आपघात करना चाहती है? तेरा काम है कि खुदाका नाम लेकर शान्ति रखना। तूने लिखा था कि उपवासमें खांसी भी बन्द होगी (पर) हुई नहीं। मैं तो इतना ही कहूंगा (कि) खुदाके नामसे जो तेरा दिल चाहे सो कर। खांसी नहीं मिटती उसका भी मतलब तो नहीं है कि खुदा दिलमें नहीं है। इसमें तू क्या कर सकती है?

बापूके आशीर्वाद

३८५

इतवार

बेटी अ स

तेरा खत मिला। उपवास छोड़नेकी सिफारिश किसीसे नहीं करूंगा। मैं समझ गया हूं कि इस बारेमें आखिरी निर्णय तुझे ही करना है। मैं मेरा कर्तव्य पालन करके निश्चिन्त रहता हूं।

बापूकी दुआ

३८६

१-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। तू खासा रब सेवाके लिए जिन्दा रहनेकी। तैयार रह मरनेके लिए। हरिलाल पर खत साथमें है। मनुको भेजनेका दिल तो चाहता है लेकिन वह आया है। घरमें बनाई हुई एन्टीफ्लोजिस्टीन भेजता हूं। हरिलालको कह दिया है। वह तीन तारीखको आयेगा।

बापूकी दुआ

३८७

चंडीपुर,
२-१-'४७

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत सुना। मैं तो आंखके ऊपर मिट्टीकी पट्टी लगा कर लिखवा रहा हूं। मैंने जो भेजा वह बिलकुल एन्टीफ्लोजिस्टीनका ही काम देता है। वह अच्छी तरहसे लगाना चाहिये। मेरे पास विलायती दवा एक ही थी वह तुमको भेज दी। अब भी मने (मेरी) मंजी हुई मिट्टीकी होगी ही। उसको इस्तेमाल कर ले। आज तो मैं नामाके देहातमें आया हूं। मेरी उम्मीद है कि वहां तक आना नहीं पड़ेगा। पानी पीती है सो तो बहुत ही अच्छा है। किसीकी मदद लेकर एनीमा लेनेकी जरूरत पड़े तो लेना चाहिये। मगर अपने आप दस्त आवे तो जरूरत नहीं है। सर भारी लगता हो तो मिट्टी ले लेना। जैसे मैं अभी मिट्टी लेकर लेटा हूं। सरका भारीपन चला जाता है। ऐसे ही पेट पर लेगी तो अच्छा होगा। अगर ठंडी लगे तो गर्म पानीकी बोतल बिछौनेमें रखो। रामनाम तो सब कुछ करता ही है। लेकिन वह हृदयसे ही निकलना चाहिये। तब तक और किसीकी जरूरत नहीं रहती। एनीमा वगैरा देनेमें तेरे पास भाई या बहनका फरक होना ही नहीं चाहिये और नहीं ही होगा। मेरा लम्बा दौरा तो तीन चार दिनके बाद होगा। चंडीपुरमें दौरा शुरू करनेके पहले सतीशबाबू चार पांच दिनके लिए (मुझ) आये हैं।

बापूकी दुआ

३८८

३-१-'४७

प्यारी बेटी

कल रातको सतीशबाबू, दारोगासाहब व (वगैरा) आये थे। दारोगासाहब कहते हैं कि पंद्रह दिनके लिए तू उपवास मुल्तवी कर दे तो इतनेमें वे तलाश करके उस आदमीको ढूंढ डालेंगे। बादमें जो (अगर) काम ठीक न हो तो तू उपवास दुबारा शुरू कर सकेगी। मेरा

खयाल है कि यह बात ठीक है और डारीयासाहब ऐसा लिख दें तो तू उपवास छोड़ेगी। बादमें देखा जायेगा। अगर उपवास छोड़े तो फलोंके रस पर और ग्लुकोज पर रहना। दो दिनके बाद दूध और पानी लेगी।

तेरा शरीर अब बहुत दुबला पड़ गया है। रामनाम चित्तमें रखकर, शान्त रह कर दुरुस्त हो जा। मैं तो कुछ चिन्ता नहीं करता हूं। जैसो जो हो सके (वह) यहां बैठकर कर रहा हूं और संतुष्ट रहता हूं। डारीयासाहब मुसलमानकी हैसियतसे कहते हैं।

बापूकी दुआ

बामा तेरी सेवाके लिए जाती है। जल्दी अच्छी होकर (उसे) जल्दी भेज देना। और डारीयासाहब कहते हैं सो मानगी तो तू भी चार पांच दिनमें आने लायक होगी।

३८९

४-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरे खत मिले हैं। मैं निश्चिन्त हूं। तेरी खांसी नहीं जाती तो अच्छा नहीं लगता। बुखार भी है। रामनामसे दोनों जाने चाहिये। उपवास छोड़नेके लिए मैं तुझे मजबूर नहीं करूंगा।

बापूकी दुआ

३९०

शुक्रवार,
३-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। तेरी तबीयत अच्छी होनेवाली ही है। रामनाम जपती रह। आज सुशीलाबहन तुझे देखने गई है।

बापूकी दुआ

यह पत्र लाननेके बाद और डारीयासाहबने पूरी दलील करनेके बाद मेरा यही निर्णय रहा कि उपवास नहीं छोड़ना है।

३९१

५-१-४७

प्यारी बेटी

तेरा लम्बा खत मिला। मेरा कलका खत मिला तो नहीं न? तो लिख दे। मेरे हाथमें मरनकी इच्छा कैसे? मरनेका निश्चय कर बैठी है क्या? यह सब धर्म-विरुद्ध है। मैं तो खास आ ही नहीं सकता। यहां बैठे हुए जो हो सके करता हूं। तुझे तो खुदाके हाथमें मरना-जीना है। दूसरा विचार छोड़ दे। मेरे दिलमें तेरी जगह भी है। यहां तक तू जिन्दा होगी तो मिलेंगे ही।

बापूकी दुआ

३९२

७-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। अब प्रार्थनाका समय हुआ। बरसोंसे भजता हूं। मुझे खबर देती रह। अच्छी हो जायेगी तो मुझे प्रिय लगेगा।

बापूकी दुआ

३९३

९-१-'४७

प्यारी बेटी

चि॰ अमा तेरी बेटी बन गई है। उसके खातिर जीनेकी इच्छा कर। कैसे भी हो बुखार क्यों नहीं जाता है? खांसी क्यों रहती है? दोनों अब तो जाने चाहिये। मिट्टी लेती है? एन्टीफ्लोजिस्टीन नहीं रखती है? मुंहसे भाफ (भाप) लेती है? लेना। कैसे लेना जानती है ना? जो भाई आये हैं उनसे थोड़े दिन तो सेवा लेना। फिर भले जायें।

बापूकी दुआ

३९४

१०-१-'४७

प्यारी बेटी

तुझे मरना नहीं है। (हम) जीनेकी आशा रखें मरनेकी तैयारी करें। मेरे आनेकी बात छोड़ देना। मैं तो तेरे पास पड़ा हूं। मैं मेरे काममें पड़ा रहूं तू तेरे। यही हमारी तपश्चर्या है हमारा धर्म है। सुशीला मुझे समझा रही है कि म तेरे पास आ जाऊं। मैं मानता हूं कि यह ठीक नहीं होगा। चाहता हूं कि तू भी ऐसे ही समझे।

बापूकी दुआ

३९५

प्यारी बेटी

ईश्वरके हाथोंमें छोड़ते हुए भी इन्सानकी हैसियतसे जो करना चाहिये सो करता हूं। फिर फिकर नहीं करता हूं। माप लेना। तेरा बुखार जाना चाहिये। खांसी भी। पुनर्सिन् की दरकार नहीं है तो अब है। सिद्ध भाई तो सेवाके ही लिए हैं। तेरे भाइयोंको खबर देनेकी जरूरत मैं महसूस नहीं करता। लेकिन जैसा तू कहे।

बापूकी दुआ

३९६

११-१-'४७

प्यारी बेटी

दिन प्रतिदिन अच्छी हो के और मरनेका मौका आये तो उस समय नीरोग होकर मरना। अगर खांसी बुखार रह जाये तो मुकम्मल कुर्बानी नहीं होती। लेकिन इसमें तू क्या कर सकती है? खुदा करे सो सही। मंजन भेजता हूं।

बापूकी दुआ

१ एक मुसलमान भाई जिन्हें बापूने मेरी सेवाके लिए भेजा था।

३९९

१४–१–'४०

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। [illegible]को मूल था। आना है तो आयेगा। तू खुदाका ही ध्यान कर। नीबू और नमकका एनीमा लिया होगा।* खुश रहना।

बापूकी दुआ

४००

१५–१–'४०

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला है। रामनामसे अपनी शक्ति रख। जितने दिन निकल सकते हैं उतने शान्तिसे काट। उससे खुदा राजी होगा और काम बढ़ेगा। बहुत लिखनेकी जरूरत भी नहीं है।

बापूकी दुआ

४०१

१६–१–'४०

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। यह बाजी(खां)के तार पर है। मैंने तार दिया है कि आना चाहता है तो रुकावट नहीं है। तू शान्त रह। मैंने छोटी स्टेटमेन्ट (बयान) दी है। प्रगट होने पर भेजूंगा।

बापूकी दुआ

४०२

१७–१–'४०

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। अब खुदा हाफिज। दो मददगार मेरे पास हैं। [illegible] अलग नहीं मिल सकता।

बापूकी दुआ

* मैंने पानीके सिवा कुछ भी नहीं लिया था।

१ मिल आई।

४०३

१८-१-४०

प्यारी बेटी

आज तेरा खत नहीं है। सुशीलासे सब खबर ली है। अमतुल्का तार अलमऊसे है। मैं तारसे जवाब दूंगा। उम्मीद है कि सोमवारको तुझे ८-१ तक मिलूंगा।

बापूकी दुआ

४०४

१९-१-'४०

प्यारी बेटी

तेरी दो खाहन भी अच्छी लगती हैं। अमतुल्का ठिकाना पता नहीं आता। कल तू देगी।

मेरा खयाल तो रहा था कि आज रातको वहां पहुंचूं। लेकिन धर्म नहीं था। दो जगह जाना था और तू भी बड़ी मुसीबत थी। कल तो खुदा मिलायेगा।

बापूकी दुआ

४०५

वर्धामें

२२-१-'४०

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। बहुत जल्दबाजी न करती (करना)। आस्ते आस्ते चलके (आहिस्ता आहिस्ता चलेगी) तो ठीक ही होगा। बकरीका दूध तुझे अच्छा लगे तो अवश्य बकरी रख। सब तरह तू अच्छी बन जा। यह मेरा एतबार, यही मेरी इच्छा (है)।

खांसी मिटनी चाहिये।

बापूकी दुआ

४०६

२२-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा फाका छूटा तो भी तेरे खत तो चाहिये। तू जल्दी फिरती हो जायेगी तब देखा जायगा। अच्छी होगी।

आज प्रातःकालमें सुशीलाके आनेकी आशा की थी लेकिन न आवे तो अच्छा ऐसी दिलकी प्रार्थना थी। क्योंकि बहुत सवेरा था। तेरे कारण तो नहीं ठहरी होगी।

बापूके आशीर्वाद

४०७

२१-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। मु भाइयोंका समझा। तू मांगती है वह नकल इसके साथ है।

आभा (के) तेरी सेवासे मुक्त होने पर अमृतलालजी[1] उसको बुलाना चाहते हैं। जब तक तेरे पास है कोई बात नहीं है।

बापूकी दुआ

जो कुछ मुसलमान भाइयोंने लिख दिया था उसकी नकल।

[1] श्री अमृतलाल चटर्जी आभाके पिता।

४०८

२५-१-'४७

बेटी म नु

यह तार* पढ़। तेरा खत है। तू खूब तरक्की कर रही है। खांसी निकले और बुखार न आवे तो तू बहुत काम करेगी। कुछ चाहिये तो लिखना।

बापूकी दुआ

४०९

२८-१-४७

बेटी म नु

तेरा खत मिला। तू बिलकुल अच्छी होनी चाहिये। यहां कातना बुनना खूब हो सकेगा तो उसमें से सब कुछ हो जायेगा। बाबाके बारेमें आभाको लिखता हूं।

बापूके आ

[यह तार अमतुस्सलाम बहनके नाम था। —मनु]

२१-१-'४७

हिन्दुओंकी खास प्रार्थना है कि आप उपवास छोड़ दें। इस बातसे ज्यादा जीवनकी बेकारी मालूम लगता है।

सर्वोदय सरकार

४१०

पाचगांव
२९-१-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला है। अम्माकी तबीयत खराब सुनकर दुख होता है। कुछ भी पूछनेके लिए अम्माको क्या तकलीफ देना? लिखकर पूछो। निरर्थक किसीको भी भेजना या (किसीका) आना अच्छा नहीं है। मेरा ऐसा खयाल है (कि) छोटीसी जिम्मेदारी तू न ओढे न रखे? थोड़े दिनों तक चलने-फिरनेकी बात ही नहीं करना। बिहारसे मेरे पास कुछ खत तो नहीं आते हैं। मु लीगकी रिपोर्ट भेजता हूं। पढ़कर वापिस करना।

बापूकी दुआ

४११

१०-२-'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला है। अम्माके बारेमें रंज होता है। बीमार क्यों पड़ी? सुशीलाबहन यहां है। वहांसे वापिस जाते हुए अम्माको देखनेका इरादा कर रही है। तेरे लिए मैंने [illegible] करके एक बंगाली नैसर्गिक उपचारक बुलाये थे। वे आज आ गये। मुझे रास्तेमें मिले। तेरी ओर आज पहुंचने चाहिये। उनसे बराबर बातें करना और जो बतायें वह सुनना। कोई नई बात कहें और करने जैसी लगे तो करना। वह पैसोंके लिए ही काम नहीं करते हैं। इसलिए उनसे जाननेके लायक देहातियोंके कामकी कुछ बात मिले तो सुन लेना। जो सवाल पूछने चाहिये वह पूछना। तेरी तबीयत अच्छी चल रही है यह समझ कर मैं बहुत राजी होता हूं। मेरी गाड़ी अब तक तो चल रही है। ईश्वरको चलाना होगा वहां तक चलायेगा।

अम्माको आशीर्वाद।

बापूकी दुआ

४१२

१–२–'४७

प्यारी बेटी

अब सुबहके ४–१ बजे हैं। आभाका समझा। बात सच्ची है कि मुझे समय है ही नहीं। फिर क्यों मेरा खत मांगती है? मैं तो तेरे पास ही हूं अगर पहचाने तो।

जल्दबाजी मत करना। जितनी ताकत है उतना ही काम करना। घर बैठ कातती और बुनता करती रहे तो भी अच्छा है।

बापूकी दुआ

४१३

२५–२–'४७

प्यारी बेटी

तेरे दो खत मेरे पास पड़े हैं। बहुत कामके कारण तुझे नहीं लिख सका। यह तो बड़ी फजरमें लिख रहा हूं।

मैंने तेरा बंगाली खत पढ़ लिया है। सतीशबाबूसे बात हुई है। तुझे पैसा नहीं चाहिये। यह लोभकामना नहीं है। कातिल कौन है? हिन्दू या मुस्लिम? तेरा फाका टूटा इसमें कोई गलती नहीं हुई है। अगर तू नया जन्म नहीं पाई है तो बुरा माने। तू बीचमें भी एक दिनके लिए आ सकती है तो आ जा। मैं समझाऊंगा क्या करना। सतीशबाबू तुझे ला सकते हैं। हाइमचरमें कुछ रोज तो रहूंगा। जल्दी मत करना। शरीर कबूल करे तो ही आना है। बराबर समझाऊंगा। बीप नापसन्द करेगी तो भी ठीक है। तो मैं जो समझाता हूं वह लिखूंगा। बीप भी एक कारण है। उसमें फंसाना नहीं चाहता हूं।

बापूकी दुआ

तूने धोती भेजी है वह बड़ी अच्छी है। मैंने तुरन्त पहनी। आज भी उसीका कच्छ है। जिन्होंने बुना उनको आशीर्वाद।

बापू

४१४

पटना
१४-३-'४७

प्यारी बेटी

आखिरका दिन मैं भूल नहीं सका हूं। मेरे निरीक्षणमें कुछ गलती महसूस नहीं करता हूं। है तो बता।

तेरा खत नहीं है। कैसे चलता है? तेरी तबीयत कैसी है? मैं ठीक हूं। काम कठिन है।

बापूके आशीर्वाद

४१५

१-४-'४७

चि. अमतुस्सलाम

तुमने मेरा बहिष्कार किया है क्या? एक भी खत नहीं। आखिरके दिन जो हो गया उसे सोचो। मैंने गुस्सा किया तो भूलो। उसका तत्त्व समझो। वहांके हाल लिखो। तबीयत कैसी है?

बापूकी दुआ

४१६

पटना
२१-४-'४७

प्यारी बेटी

तेरे दो खत मिले। तू कहती है सो ठीक नहीं है। की बात पर वजन देते हुए जो मैंने लिखाईमें कहा सो कह सकता हूं। मैं तेरी तारीफ किसीको भी नहीं करता हूं। फिर भी अगर तू मेरे कहनेको बरदाश्त न कर सके तो मैं कुछ भी तेरे बारेमें नहीं कहूंगा।+

बापू नोआखालीको छोड़कर गये तब मुझसे मिलकर गये थे उसके बारेमें यह जिक्र है। इसके बाद बापूसे मेरी कभी भेंट नहीं हुई।

+ बापूने आखिरमें मेरी तारीफ की थी उसका मैंने यह कह कर विरोध किया था कि मेरी तारीफ कभी न कीजिये।

४१८

८–९–'४७

प्यारी बेटी

तेरा खत मिला। बहुत खुश हुआ। तुझको सिवाय धर्मके कोई बचानेवाला नहीं है। धर्मके रास्ते पर अगर इस शरीरमें ही मिलना खुदाने मंजूर माना होगा तो हम मिलेंगे नहीं तो न मिलें। उससे क्या? आत्मासे तो कभी अलग हुए नहीं हैं न होंगे। कुछ भी हो खुश रह।

बापूकी दुआ

४१९

चि म घ

चरखा मुफ्त देनेकी बात है? नहीं तो पैसे कैसे वसूल किये जायेंगे? बाहर क्या कपड़ोंके लिए? जो पेटी [उसके बजाय? उनसे पैसे लेवे? कैसे देंगे?

चावल रिलीफ आफिसरसे लेने चाहिये।

शंखा सिंदूर कंठी सचमुच पहने तो ही दिया जाये। यह सब सतीशबाबू और विश्वंभरनाथ पढ़ें।

४२०

न दि०
७–१०–'४७

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। मैं जानता हूं कि मैं तुझे बहुत नहीं लिख सका हूं। गुस्ताखी बात कैसे हो सकती है? मैं कामोंमें लगा रहता हूं।

पाकिस्तान बना फिर भी हमारा धर्म नहीं है। वहां जितने हैं उन्हें करना या मरना है।

मैं तो वहां जल्दी पहुंचना चाहता हूं। कब यह तो खुदा जानता है।

जो चावल मिलें वो तो हम लें। हम व्यापार न करें। यह हमारे धर्मके बाहर समझता हूं। ज्यादा हकीकत (ब्योरे) में नहीं जा सकता।

तेरी तबीयत कैसी रहती है? आभा कल यहां आ गई। अच्छी तो नहीं लगती है। आज तो मेरी खामोशी (मौन) है।

बापूके आशीर्वाद

४२१

२९-७-'४७

बेटी अमतुस्सलाम

तेरा खत मिला। तू ठीक कहती है कि आजादी बरबादी तो नहीं होगी? होगी तो गुनाह किसका गिनें? अब क्या करना यही सोचना है।

मैं तो वहीं १५ ता. के पहले पहुंचना चाहता हूं। देखें खुदा क्या करवाता है। आभा ठीक तो है लेकिन बहुत फर्क है ऐसा न कहा जाये। हली (जल्दी) फिरती है। वह मेरे साथ तो होगी ऐसा समझता हूं।

बापूके आशीर्वाद

रमजानमें तेरा क्या होता होगा? क्या बकरीका दूध नहीं मिलता है?

४२२

[जनाब सुहरावर्दी साहब बापूको मुसलमानोंकी बस्तीमें रहनेके लिए ले गये थे। बापू नोआखाली जाना चाहते थे। लेकिन सुहरावर्दी साहबको लगा कि कलकत्तेमें मुसलमानोंके बीच उनकी ज्यादा जरूरत है।]

१३-८-४७

बेटी अ स

एक मुस्लिम घरमें रहने आज आया हूं। शहीदसाहब[1] साथमें हैं। बड़ा दंगा शुरू जगना है। मेरी परीक्षा होगी। अब तो सब तुझे मिलूंगा नहीं जानता हूं।

१ शहीद सुहरावर्दी अगस्त मासमें बंगालके मुख्यमंत्री थे।

४२४

दिल्ली
१९-१०-'४७

बेटी अ स

आभा पर तेरा खत पढ़ा। सतीशबाबूको राजी करना धर्म समझो। तेरे भाइयोंके लिए जो कुछ हो सकता था किया। पटियाला तो श्मशान-सा हो गया है। वारीसा वहां है। उसको मैंने कहा था मुझे लिखे। सब सलामत तो रहें लेकिन पटियाला छूटा!

तू निश्चिन्त होकर वहां रह सेवा कर। मुझे लिखनेसे मत झिझक।

आभा नाजुक तो है ही। देखता हूं क्या कर सकता हूं।

बापूके आशीर्वाद

४२५

[मैंने लिखा था कि मेरे भाई जान बचाकर वहांसे चले गये हैं और कोई भी मुसलमान वहां नहीं रहा तो मेरा फर्ज है कि मैं वहां जाकर रहूं। लेकिन बापूकी आज्ञाके बगैर कोई कदम उठाना असम्भव था। इसलिए, जैसे बापूने कहा मैं बंगालमें ही पड़ी रही।]

न दि
१-११-'४७

बेटी अ स

तेरा खत मिला। भाइयोंकी चिन्ता पागल करती है। जब सब हिम्मत हार बैठे तो उनको भी जान प्यारी लगी। हम खुद साबित रहें तो अच्छा। दूसरोंके भले वे रिश्तेदार हों हम काजी न बनें।

तू बहुत चंचल मनकी है। नोआखालीमें या पंजाबमें एक ही चीज है। पंजाबमें ही तेरा स्थान है ऐसा नहीं। तेरा स्थान सब जगह है। फिर भी तू तेरी मालिका है। ठीक चाहे सो कर। मेरी इजाजतकी क्या जरूरत? अगर सचमुच जरूरत है तो तेरा धर्म है कि मेरा कहना तेरे हृदय तक जम जाये। इतनी श्रद्धा होनी चाहिये।

देख ले तेरे दिलको और दिल कहे सो कर। मेरी परवाह मत कर। अच्छी रह।

बापूकी दुआ

४२६

[इस पत्रसे पता चला कि मेरे भाई नहीं चाहते थे कि मैं पटियाले जाऊं। इसलिए बापू इजाजत नहीं देते थे। लेकिन कस्तूरबा सेवा मंदिर, बोरकामताके कार्यको तो मेरी जरूरत थी ही। इसलिए मैं वहां गई।]

१५-१२-'४७

चि॰ अ॰ स॰

तेरा खत मिला। भाईने मुझे लिखा है। उसका खत क्यों न मिला? वह नहीं चाहता (कि) तू वहां जावे। बोरकामता जा। वह तेरा असल क्षेत्र है। म तार भेजता हूं।

बापूकी दुआ

४२७

तार

१८-१२-'४७

बोरकामता जा सकती हो।[1]

बापू

४२८

१ -१२-'४७

बेटी अ॰ सलाम

यह खत देख कर राजी होगी। मैंने जानेकी इजाजत दी है। पटियाला महाराजा मिले थे। मैंने तेरे खानदानके बारेमें कहा था। इन्हें क्या होना है।

बापूकी दुआ

18-1 47

[1] You can go Borkamata.

Bapu

४२९

[यह बापूका मेरे नाम लिखा आखिरी खत है।]

बिरला हाउस
नई दिल्ली
२५-१-'४८

बेटी अमतुस्सलाम

तेरे दो खत मिले। तू कहती है ऐसा ही है। ईश्वरकी बड़ी कृपा है। मेरे सब उपवासोंमें यह सबसे बड़ा था। भविष्य क्या होगा यह ईश्वर जानता है।

मैं तुमको यह खत लिखवा रहा हूं क्योंकि फजरमें प्रार्थनाके बाद लिखनेसे लिखवाना अच्छा लगता है।

तेरे आनेके बारेमें मुझे धर्म-संकट है। पहले तो तार देनेका सोचा था। पीछे छोड़ा। कौमी एकताका सब (काम) अच्छी तरहसे कर सकती है मगर तेरी हाजरीसे और वहांसे भी आरामसे छूट सकती है, तो छूटेगी और मेरे पास आयेगी।

मुझे शक्ति बराबर आ रही है। मेरी फिक्र नहीं करना।

मनुके बारेमें भी धर्म-संकट है। उसकी मिली इच्छास तो आ ही सकता है। उसे कोई समय मिल गया तो लिखूंगा।

रशीदकी बहूका खत तुझे भेजता हूं। उर्दूमें नाम दिया है सो पढ़ नहीं सका हूं। क्या नाम है? मैंने उसको लिखा है (कि) जब आ सकती है तब आवे। मेरे साथ रहेगी।

बापूकी दुआ

बापूके बाद

जब बापूको सन् १९४२ में हमसे जुदा करके जेलमें बन्द किया गया तभी जेलकी चारदीवारीमें राष्ट्रमाता कस्तूरबाका जीवन-बलिदान हुआ। सब आश्रमवासियोंको रिहाईके बाद उनके दर्शन प्राप्त हुए। मैं ही एक ऐसी अभागिनी थी जो पूर्व बंगालके एक देहातमें पड़ी थी जहां सियासी अकालसे हिन्दू-मुस्लिम दोनों पीड़ित थे। अभी मैं कुछ करनेका सोच ही रही थी कि पूज्य बाके जानेकी चोट लगी जो आज तक ठाक न हो सकी। उनके प्रेमको शब्दोंमें बताना तो कठिन है। पू. बाके दर्शन उनके नामका कार्य खड़ा कर ही पाऊं इसी कशमकशमें थी कि पू. बापू भी जेलसे रिहा हो गये। पू. ठक्करबापाने जिनका मेरे पूर्व बंगालमें काम करनेमें और मेरी रहनुमाई करनेमें बड़ा हाथ था न जाने क्या रिपोर्ट दी कि बापूने बाहर आते ही मुझे तार दिया

"Slowly progressing No cause anxiety Expect you continue your excellent work with redoubled energy Love.
— Bapu

उसी दिन बंगाल रिलीफ कमेटीकी ओरसे खादीका कार्य अभय आश्रमके नजदीक एक देहात चौरकामतामें शुरू करनेकी मंजूरी आई थी। जो काम शुरू हुआ वह नीचे लिखे अनुसार है

१ बंगाल रिलीफ कमेटीसे खादीकार्यके लिए — रु २५,०००
२ मारवाड़ी रिलीफ कमेटीसे दवाखानेके लिए — रु ५,०००
३ गुजरात रिलीफ कमेटीसे खादीके लिए — रु ५,०००
४ मिलाजुला फण्ड बेसिक स्कूलके लिए — रु ९,०००
५ मकान बनानेको बापू-फण्ड सेवाग्रामसे रु १५ ; तथा बंगाल रिलीफ कमेटीसे रु ३ } — रु १८,०००
६ विश्वभारती गोशालाके लिए (पांच गायों तथा एक सांड आदि) — रु ५,०००

कुल रकम रु ६७,०००

ये सब कार्य तो शुरू कर दिये। पर मन बापूके पास रहता था। लेकिन बगैर इजाजतके मैं उनके पास कैसे जा सकती थी? जब पू. बापू खुद बंगाल आये तो बावजूद मेरे कार्यसे सन्तुष्ट होनेके वे मेरी तबीयतको बहुत गिरी हुई देखकर मुझे सेवाग्राम छाप ले गए। अभी तबीयत सुधर भी न पाई थी कि नोआखाली-कांड शुरू हुआ। तब बीरकामतामें कस्तूरबा सेवा मन्दिरका काम बंगाल चरखा संघ चला रहा था। लेकिन नोआखालीकी भड़कती आगके सामने यह कार्य दूसरा दर्जा रखता था। जनवरी १९४८के शुरूमें और कामताका कार्य संभालनेकी बापूजीने मुझे आज्ञा दी ही थी कि खुद ही दुनियाको छोड़कर चल दिये। मुझे उनके आखिरी दर्शन भी नसीब न हुए। ब्रह्मपुत्रामें बापूकी पवित्र भस्मके आखिरी दर्शन पाकर दिल्ली पहुंची तो पता चला कि बापू बहावलपुरके शरणार्थियोंके लिए खुद बहावलपुर जानेवाले थे। वहां पूर्व तैयारीके लिए उन्होंने सुशीलाबहनको भी भेजा था। वे वापिस भी नहीं आई थीं कि राष्ट्रपिता पू. बापूजीका बलिदान हुआ।

बहावलपुरके नवाबको मौलाना मसूद अहमद साहबने तार दिया था कि अमतुस्सलाम गांधीजीके मिशनको जारी रखनेके लिए पहुंच रही है। कहां मैं और कहां बापूका मिशन? लेकिन इस कार्यको चलानेके लिए तबसे ही सुशीलकुमार जैसा देवभक्त और देशभक्त नौजवान मेरे जीवनमें आया जो मेरे लिए अपने बच्चेसे भी ज्यादा अजीज है और जिसने मेरे जीवन-कार्यको पूर्ण रूपसे संभाल लिया है।

मुझे बहावलपुरमें काम करनेके लिए जिस दिन चार भाई मिले वे उसी दिन मुझे याद हैं। मुबैनारहमनने पूछा था कि कार्यकर्ता कैसे मिले? मैंने चन्द ही मिनटके मिलने पर बताया था कि सुशीलकुमार छोटा है, लेकिन बड़ा धनिवान है। इसीने बहावलपुरके शरणार्थियोंको दिलासा और यहां राजपुरामें उन्हें बसानेमें अनेक मुश्किलातोंका सामना किया। उनकी बेरोजगारी दूर करनेके लिए इसने जो काम शुरू किये उन्हींमें कस्तूरबा सेवा मंदिर राजपुराका आरंभ हुआ है।

कस्तूरबा सेवा मंदिरकी प्रवृत्तियां इस प्रकार हैं

१ खादी २ अंबर सरंजाम शिक्षण और उत्पादन ३ ग्रामोद्योग — (क) तेलघानी (ख) चर्मालय (ग) हाथ-कागज (घ) कुम्हार-काम (च) ताड़गुड़ (छ) दियासलाई, (ज) साबुन ४ खादी ग्रामोद्योग विद्यालय ५. ग्रामीण महाविद्यालय ६ सहकारी संस्थाएं ७ खादी ग्रामोद्योग भंडार ८. खेती और गोपालन ९ शांतिसेना बालशाला लोक-स्वास्थ्य विभाग वगैरा। सिर्फ खादीकी ही उत्पत्ति चौबीस लाख रुपयेकी है और इस उद्योगमें सत्ताईस हजारसे ज्यादा लोगोंको काम मिलता है। कस्तूरबा सेवा मंदिरका कार्यक्षेत्र पटियाला विभागके पटियाला, संगरूर, कपूरथला, भटिंडा और महेन्द्रगढ़ — इन पांच जिलोंमें फैला हुआ है। राजपुरामें कस्तूरबा सेवा मंदिर क्रियाशील एकड़ भूमिमें बसा हुआ है। संस्थाको पंजाब सरकार, केन्द्रीय सरकार, खादी ग्रामोद्योग कमीशन तथा लोगोंसे पैसेकी तथा दूसरी सहायता पूरी तरह मिल रही है।

मुझे यह कबूल करते शर्म नहीं आती कि मेरी अपनी योग्यता जरा भी इतने भारी कार्यको इस तरह निभानेकी न तो थी न है और न हो सकती है।

मैं तो यही कहूंगी कि पू. बा और बापूकी प्रेरणा ही मुझमें और मेरे साथियोंमें काम कर रही है।